संपर्क भाषा भारती

साहित्य-समाज को समर्पित राष्ट्रीय मासिकी, अक्तूबर—2022, RNI-50756

दस पुस्तकें जिनका लोकार्पण बसंत पंचमी, 26 जनवरी-2023 को तय है :

1. पुरुष व्यथा कथा : 2022
2. नारी व्यथा कथा : 2022
3. तीसरा पहलू : किन्नर कथा 2022
4. हिन्दी के श्रेष्ठ ग़ज़लकार : 2022
5. श्रेष्ठ कवयित्रियाँ : 2022
6. उत्कृष्ट कहानियाँ : 2022
7. उत्कृष्ट बाल कहानियाँ : 2022
8. श्रेष्ठ व्यंग्यकार : 2022
9. श्रेष्ठ लघुकथाकार : 2022
10. श्रेष्ठ महिला लघुकथाकार : 2022

इस अंक में :

भारत में दशहरा
आशा शैली और रामानुज अनुज की कहानियाँ
लोकप्रिय लघुकथाकारों की रचनाएँ....
दिलीप कुमार का व्यंग्य
पुस्तक समीक्षाएं.....

1. प्रत्येक पुस्तक में रचनाकर की एक से अधिक रचना शामिल नहीं की जाएगी।
2. **लघुकथा पुस्तक में एक रचनाकर के छः पृष्ठ निर्धारित होंगे।**
3. **कविता और ग़ज़ल पुस्तक में भी लेखक को छः पृष्ठ दिए जाएंगे।**
4. रचनाओं को संपादक द्वारा चयनित किया जाएगा।
5. पुस्तक प्रकाशनोपरांत दो लेखकीय प्रतियाँ लेखक को प्रदान की जाएंगी।
6. पूर्व अनुरोध पर लेखकों को अधिक प्रतियाँ प्रकाशित मूल्य से 30% कम मूल्य पर दी जाएंगी।
7. लेखक को अपनी रचना का दो बार प्रूफ शोधन, प्रूफ प्राप्त होने के 7 दिन के अंदर करना होगा।
8. रचनाएँ मंगल अथवा यूनिकोड फॉन्ट में ही टाइप करके भेजी जाएँ।
9. रचनाकार, पासपोर्ट फोटो सहित अधिकतम 150 शब्दों में संक्षिप्त परिचय भेजें।
10. सभी पुस्तकों का प्री-प्रिंटिंग प्रोसेस 31 दिसंबर तक पूरा करने का लक्ष्य है।
11. रचनाएँ शीघ्रातिशीघ्र भेजी जाएंगी तो उनका प्रूफ शोधन जल्दी हो सकेगा।
12. अशुद्धियों से बचना प्रकाशन का प्रमुख लक्ष्य रहेगा।
13. पुस्तकों का लोकार्पण नई दिल्ली में ही प्रस्तावित है।

सहयोग 60/-

प्रकाशन सहयोग : saubhagyapublication@gmail.com

अपनी बात...

अब जब पिता जी और डॉ महेश चन्द्र गुप्त की बात मानते हुए यह तय किया कि जनसत्ता ज्वाइन नहीं करना है तो यह भी तय किया कि सुविधा भोगी बन कर लेखन का त्याग भी नहीं करना है।

राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय-भारत सरकार) का कार्यालय बहुतों की पहुँच के बाहर रहा होगा किन्तु मेरे साथ ऐसा नहीं था। कार्यालय उन दिनों लोकनायका भवन में हुआ करता था। जबकि मेरा कार्यालय सीरी फोर्ट, एशियाड में स्थित था। भेल के तीन प्रमुख कार्यालय उन दिनों दिल्ली के अलग-अलग हिस्सों में स्थित थे। इत्तेफाक से उन दिनों हमारे कार्यालय से इन तीनों कार्यालयों और डिस्पेन्सरी को जोड़ने वाली बैट्री बस एशियाड से चलती थी। इस बैट्री बस का निर्माण भेल द्वारा ही किया गया था।

यह बस एशियाड से शुरू होती, उसका अगला स्टॉप लोधी कॉलोनी स्थित हमारा दूसरा कार्यालय होता। यहाँ से पार्लियामेंट स्ट्रीट जहां हमारा दूसरा

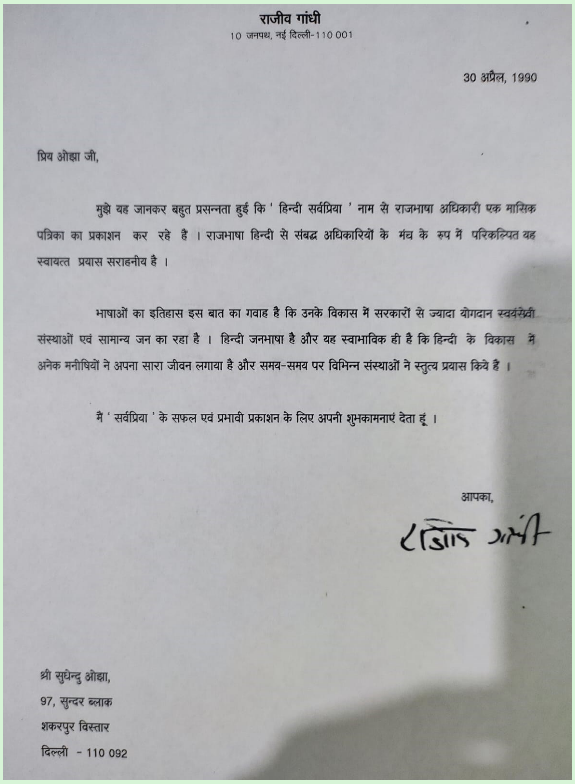

राजीव गांधी
10 जनपथ, नई दिल्ली-110 001

30 अप्रैल, 1990

प्रिय ओझा जी,

मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि ' हिन्दी सर्वप्रिया ' नाम से राजभाषा अधिकारी एक मासिक पत्रिका का प्रकाशन कर रहे हैं । राजभाषा हिन्दी से संबद्ध अधिकारियों के मंच के रुप में परिकल्पित यह स्वायत्त प्रयास सराहनीय है ।

भाषाओं का इतिहास इस बात का गवाह है कि उनके विकास में सरकारों से ज्यादा योगदान स्वयंसेवी संस्थाओं एवं सामान्य जन का रहा है । हिन्दी जनभाषा है और यह स्वाभाविक ही है कि हिन्दी के विकास में अनेक मनीषियों ने अपना सारा जीवन लगाया है और समय-समय पर विभिन्न संस्थाओं ने स्तुत्य प्रयास किये हैं ।

मैं ' सर्वप्रिया ' के सफल एवं प्रभावी प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाएं देता हूं ।

आपका,

श्री सुधेन्दु ओझा,
97, सुन्दर ब्लाक
शकरपुर विस्तार
दिल्ली - 110 092

कार्यालय और डिस्पेन्सरी थी। यहाँ से अगला और अंतिम स्टॉप हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, कर्नाट प्लेस होता था। यह बस सेवा कर्मचारियों की सुविधा और इन कार्यालयों में डाक लाने लेजाने केलिए उपयोगी थी। उन दिनों मेरे पास निजी वाहन नहीं था। मुझे स्कूटर/मोटर साइकिल चलाना आज तक नहीं आया। लोदी कॉलोनी में कर्मचारियों/डाक छोड़ने के बाद यह बस लोकनायक भवन के समीप से होकर गुजरती थी।

इसी बस से संपर्क भाषा भारती की कल्पना की उड़ान भी तय की गई। डॉ महेश चन्द्र गुप्त जी का मार्गदर्शन तो था ही, राजभाषा विभाग की पत्रिका के संपादक बजाज जी ने भी मेरी बहुत सहायता की। बजाज जी पत्रिका के उपसंपादक थे और नौकरी केलिए पानीपत से दिल्ली का दैनिक सफर तय किया करते थे, शायद उनका नाम गुरुदयाल बजाज था। मुझे सोसाइटी पंजीकृत करवाने और भारत सरकार के समाचार पत्र पंजीयन कार्यालय में कोई विशेष दिक्कत नहीं आई।

हाँ! दो-चार बार दिल्ली पुलिस मुख्यालय अवश्य जाना पड़ा। एक प्रपत्र होता था जिसमें प्रिन्टर का पूरा विवरण भर्ना पड़ता था, पत्रिका के तीन नाम प्रस्तावित करने पड़ते थे और इन्हें दिल्ली पुलिस के मुखालय द्वारा सत्यापित/रजिस्टर करने के बाद आरएनआई कार्यालय, रामकृष्ण पुरम, सैक्टर-1, के कार्यालय को भेजा जाता था। यह प्रक्रियाएँ पूरा होने में खासा अच्छा समय लेती थीं और धैर्य की परीक्षा भी। खैर! यह प्रक्रिया भी पूरी हुई और आरएनआई का पंजीकरण का पत्र और 'संपर्क भाषा भारती' नाम से पत्रिका प्रारम्भ करने की स्वीकृति भी आगई।

पत्रिका निकालने केलिए अभी एक अनिवार्यता और रह गई थी। वह थी भेल के मानव संसाधन विभाग से पत्रिका के सम्पादन की अनुमति प्राप्त करना। चूंकि, मैं भेल संस्थान से जुडने से पहले ही रेडियो, दूरदर्शन और समाचारपत्रों में लिख रहा था अतः मानव संसाधन विभाग ने मुझसे एक आवेदन लेकर मुझे इन एजेंसियों में लेखन की अनुमति दे दी थी।

चंद दिनों में ही मुझे संस्थान ने 'संपर्क भाषा भारती' के सम्पादन की अनुमति भी प्रदान कर दी।

पत्रिका के सम्पादन की अनुमति मिलने के बाद पत्रिका के प्रारम्भिक आंक की तैयारी और उसकी परिकल्पना में लग गया।

पत्रिका का पहला अंक ही 'श्री रामकथा' पर निकालना था। पूरे विश्व में व्याप्त राम कथा।

पत्रिका केलिए शुभकामना संदेश प्राप्त करने केलिए भी उस दौरान के मंत्रियों को पत्र लिखे गए।

सभी के शुभकामना संदेश प्राप्त हुए।

यहाँ तक की स्वर्गीय प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी जी के कार्यालय से भी उनके हस्ताक्षर में शुभकामना संदेश प्राप्त हुआ।

बात फिर जारी रहेगी....नवरात्रि, दुर्गा पूजा, दशहरा, दीपावली, प्रकाशपर्व और इस पूरे पर्व मास की अनंत, अशेष शुभकामनाएँ.......

(क्रमशः)

सादर,
सुधेन्दु ओझा

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक, मुद्रक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली110092

अनुक्रमणिका अक्तूबर—2022

क्रम सं:	शीर्षक :	लेखक :	पृष्ठ संख्या
1.	संपादकीय	अपनी बात	2
2.	अनुक्रमणिका		3
3.	लघुकथा : तसल्ली	रामप्रसाद कुमावत	4
4.	लघुकथा : औकात	विकेष निझावन	4
5.	लघुकथा : वापसी	अशोक जैन	5
6.	लघुकथा : कहा किताब ने	डॉ बलराम	6
7.	भारतीय संस्कृति में दशहरा	कृष्ण कुमार यादव (पोस्टमास्टर जनरल-वाराणसी)	7-10
8.	समाचार	नारायणी संस्थान-रायपुर	10
9.	पुस्तक चर्चा : कहे जैन कविराय	ज्ञान प्रकाश पीयूष	11-12
10.	लघुकथा : झिझक	महेश दर्पण	13
11.	समाचार: कृष्ण कुमार यादव द्वारा पुस्तक विमोचन	डॉ अभय प्रताप	14-15
12.	कहानी : परत दर परत	आशा शैली	16-20
13.	पुस्तक चर्चा : साजिक हालात का अल्ट्रासाउंड	भगवती प्रसाद द्विवेदी	21-22
14.	समाचार : पोस्टमास्टर जनरल-वाराणसी कार्यालय		22
15.	कहानी : गिद्ध	रामानुज अनुज	23-27
16.	विचार	कृष्ण मनु	27
17.	लघुकथा : हमारी कोई जाति नहीं	कृष्ण मनु	27
18.	डाक टिकट	कृष्ण कुमार यादव (पोस्टमास्टर जनरल-वाराणसी)	28-31
19.	आलेख : धरती को बदसूरत	सोनम लववंशी	32-33
20.	संजा	संजय कुमार 'दृष्टि'	34-35
21.	कविता :	व्यग्र पांडे	36
22.	कविता	रमेश मनोहरा	36
23.	कविता	डॉ विभा रंजन 'कनक'	36
24.	व्यंग्य : यक्ष इन पुस्तक मेला	दिलीप कुमार	37-38
25.	वह : किन्नर समाज संघर्ष	डॉ नितिन सेठी	39-43

पुस्तक समीक्षा प्रकाशन केलिए पुस्तक भेजना अनिवार्य है।

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक, मुद्रक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली-110092

तसल्ली

लघुकथा

करीब दो सप्ताह से सुधा किचन में रोज खाने केसाथ एक-दो रोटी ज्यादा बना ही रही थी ताकि उन्हें सुखाने पर, छुट्टी के दिन मसाले में छोंककर स्पेशल व्यंजन के रूप में पति और बच्चों को परोस सके।

'पीहू और शंटी को सूखी ब्रेड खूब भाती जो है।' सुधा बडबडाई।

ऑफिस की व्यस्तता में सुधा केलिए समय निकाल पाना संभव नहीं हुआ, तो रोटियाँ उपेक्षित रह गयी। उनमें फफूंद लग गई। तभी सुधा को पुण्य कमाने का आइडिया आया और दूसरे ही क्षण उसने सारी रोटियाँ, प्लास्टिक के कैरीबैग में भरकर झाड़ू-पौचा कर घर लौटती सुरीली ताई के हाथ में थमादी। बोली-

'ताई ! ये रोटियां छोंककर बना लेना, बच्चे-बड़े चाव से खाएंगे, छुट्टी की स्पेशल डाइट पाकर फूले नहीं समायेंगे।'

चहकती सुधा तो बहुत कुछ बोल गई मगर ताई खामोश गंभीर चट्टान बनी निकल ली। ताई की नजर दो दिन पहले ही रोटियों पर आती फफूंद देख चुकी थी।

रेल्वे लाइन क्रॉस करके अपनी बस्ती की गली में मुडते ही सुरीली को देख गली का मोती और उसके दोस्त सुरीली ताई के पांव व थैली सूंघने लगे। हमेशा की तरह आस जो थी कि कुछ डालेगी। सुरीली ने भी दरियादिली दिखाये बिना ही पूरी थैली उलट दी। मोती और उसके साथी तो सूंघकर ही खिसक लिए।

तभी बिखरे बाल लिए दाढी खुजाता, कुछ थका, कुछ लंगडाता, दो दिन से भूखा गिरधर आया। एक साथ इतनी रोटियाँ देखी तो उसकी आँखे चमक उठी। उसने दो-तीन रोटियां उठाई और हैण्डपम्प पर जाकर रोटी को पाइप के मुंह के नीचे रखकर हैण्डपम्प का डण्डा चलाने लगा। गिरधर का एक हाथ बचपन में ही मशीन में फंसने के बाद से बेकार ही है।

गिरधर हैण्डपम्प से फफूंद वाली रोटी को धोकर, भीगने से नर्म होने पर रोटी का रोल बनाकर खाने लगा।

गिरधर के चेहरे पर हल्की-सी तसल्ली पढी जा सकती थी। बिना सब्जी-चटनी भी वह पूरे चाव से उसे खा रहा था। रोटी खाते-खाते वह आगे बढा तो सामने ही सुरीली ताई की आँखे उसे रोटी खाते देख चमक उठी और चेहरा तसल्ली से तृप्त हो गया।

उधर सुधा का चेहरा भी सूखी फफूंद लगी रोटियों का कैरी बैग सुरीली ताई को थमाने के बाद से ही पुण्य मिलने का हिसाब लगाते पूरी तसल्ली से दमक रहा था।

रामप्रसाद कुमावत

लघुकथा

औकात

बूढ़ी मां कलप रही थी - अब देख, हो रहा है न परेशान। शादी-बयाह क्या लेता तो यों बीरान न होना पड़ता। मेरे हाथ-पैर टेढ़े हो रहे, तेरे लिए दो रोटी तक न बना पाती। मर्द होकर तुझे रोटियां सेंकनी पड़ रहीं।

वह मुस्करा दिया। बोला- मां, अपनी जात को पहचान। इस घर में जो कोई आती, अनपढ़-गंवार ही होती। इधर मैं भी अनपढ़-गंवार। अब जब मेरी ही औकात नहीं, फिर किस औकात वाली लड़की इस घर में आती।

-तू क्या सोचता है, इन काले अक्षरों से ही आदमी सब सीखे। जीवन भी एक किताब नहीं है क्या।

-तू ठीक कहे मां। पर जिस गली में तू रह रही, उन लोगों की औकात तो देख। सुबह-दोपहर-शाम---कलेश ही क्लेश। जो भी इस घर में आती, इसी रंग में रंग जाती तो तेरा जीना भी भी दूभर कर देती---।

-अछा देख, कहीं तवे पर रखी रोटी जल तो नहीं गई।

-नहीं मां, मैंने उसे जलने से बचा लिया।

अब वह दूसरी रोटी तवे पर सेंकने लगा था।□

- विकेश निझावन, अंबाला

वापसी

लघुकथा

आज फिर प्रातःभ्रमण को निकले थे हरी बाबू। बेटे की बेरोज़गारी से उपजी पारिवारिक चिंताओं के झंझावात में फँसे, यंत्रचालित-से दूर तक निकल गए। चलते-चलते एक जगह एकाएक पैर काँपने-से लगे तो उनकी तन्द्रा टूटी। इधर-उधर देखकर पास वाले मकान के बाहर बनी सीमेंट की स्लैब पर बैठ गये।

आवारा घूमता एक सड़कछाप कुत्ता बिना बात ही, जोर-जोर से उन पर भौंकने लगा।

हरी बाबू उसाँसे हो रहे थे। कुत्ते का बेहिसाब भौंकना सुन उनकी साँस धौंकनी की तरह चल निकली।

"हाँ जी! कौन?" घर के भीतर से एक पुरुष स्वर उभरा।

" पा-नी... मिले-गा थो-ड़ा..." हरी बाबू बड़ी मुश्किल से कह पाये।

बाहर आ गया व्यक्ति उनकी दशा देख अंदर भागा और गिलास व पानी की बोतल ले आया।

"लीजिए।" गिलास में पानी डालकर उनकी ओर बढ़ाते हुए उसने कुत्ते को दुत्कारकर दूर भगाने की नाकाम कोशिश की।

हरी बाबू ने धीरे-धीरे पानी के घूँट भरे। उन्हें थोड़ी राहत महसूस हुई।

"आप...?" व्यक्ति ने परिचय जानना चाहा।

उधर, साइकिल से गुजरते हुए एक व्यक्ति ने एकाएक हरी बाबू को देखा। पहचाना। वह हरी बाबू का पड़ौसी था।

"हरी, आप यहाँ कैसे?" उसने आश्चर्य से पूछा।

हरी बाबू अब तक सँभल चुके थे।

"सोचते-सोचते पता ही नहीं चला कितनी दूर निकल आया !!" वह बोले।

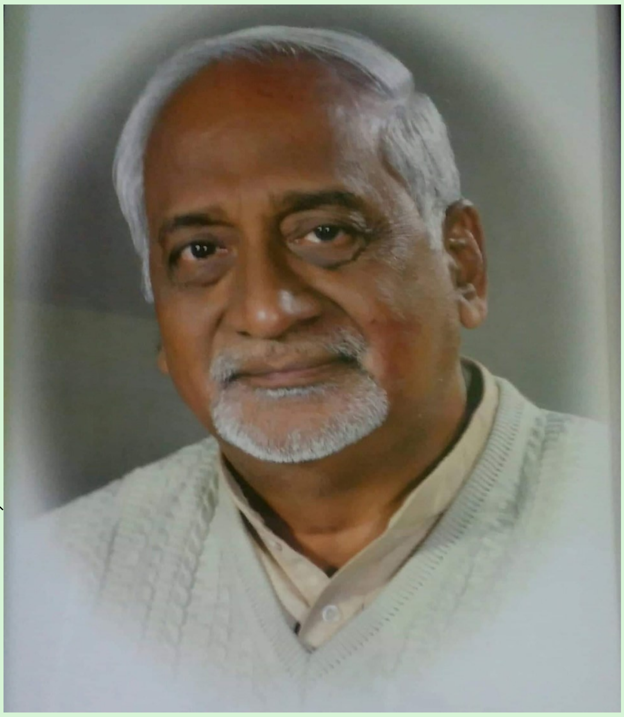

"तभी कहता हूँ--कम सोचा करो। इतना क्यों सोचते हो यार!!"

"सोचना-विचारना तो असलियत में उसके साथ चला गया, ठकराल। अब तो बस चिंताएँ बची हैं?"

घर के मालिक का आभार व्यक्त करते हुए हरी बाबू उठ खड़े हुए।

कुत्ता था कि दुत्कारा जाने के बावजूद भौंकने से बाज नहीं आ रहा था।

"बेरोजगार बेटे के बारे में सोचकर चिंतित हो जाता हूँ।" चलते-चलते हरी बाबू बोल रहे थे, "लोग कहते हैं--अभी तो मेरी पेंशन से उसकी गुजर हो रही है! मेरे बाद...!"

उनके साथ चल रहा ठकराल इस हकीक़त को जानता था, पर दोहराना नहीं चाहता था।

"कुछ लेने के लिए तो नहीं निकले थे घर से?" उसने बात बदली।

"अरे, हाँ। दूध-ब्रैड लेकर जाना था!" हरी बाबू चौंके। जेब से निकालकर रुपए ठकराल को थमाते हुए बोले, "तुम्हारे पास तो साइकिल है। खरीदकर घर पहुँचा देना। कोई पूछे तो बोल देना, आ रहे हैं धीरे-धीरे।"

ठकराल निकल गया।

सड़क पर चलते हुए हरी बाबू के कानों में दूर कहीं बजते हुए गाने के बोल पड़ने लगे--

जीवन से न हार ओ जीने वाले

बात मेरी तू मान अरे मतवाले..

इन्हें सुन हताशाओं का कोहरा उन्हें अपने चारों ओर से छँटता-सा लगा: --विवश बेटे का सहारा वे नहीं बनेंगे तो कौन बनेगा! किसी भी बकवास पर कान नहीं देंगे।--सोचते हुए घर की ओर वे मजबूती से छड़ी टेकते हुए चलने लगे।

कुत्ते के भौंकने की आवाज कदम-दर-कदम पीछे छूटने लगी थी।

- अशोक जैन

कहा किताब ने

लघुकथा

आयशा की बात सुनते ही हूरिया सकते में आ गयी।

“क्या बक रही है!” लगभग चीख जैसा वाक्य उसके गले से निकला।

“बक नहीं रही, सोच-समझकर जो फैसला किया है, वही बता रही हूँ।” आयशा ने ठंडे अंदाज में जवाब दिया।

“तू और तेरी समझ,” हूरिया झटके से बोली, “दोनों से वाकिफ हूँ मैं।”

आयशा ने इस पर जवाबी टिप्पणी नहीं की। जाकर कुर्सी पर बैठ गयी और कुहनियों को मेज पर टिका, दोनों हाथों की उँगलियों से माथे के दायें-बायें वाली नसें मलने लगी।

“अच्छा, कुसूर क्या है उसका!” कुछ देर उसे देखती रहने के बाद हूरिया ने पूछा।

सवाल सुनकर भी आयशा माथा मलती ही रही। काफी देर बाद गहरी साँस छोड़कर उसने बोलना शुरू किया, “आपको याद है मम्मी, बचपन में आप हमें सरकंडे की कलम बनाकर दिया करती थीं!”

“हाँ-हाँ, क्यों नहीं!” मम्मी ने कहा।

“और जब मैं छठी क्लास में पहुँची, तब आपने हमें होल्डर पेन लाकर दिया था।”

“अच्छी तरह याद है।”

“होल्डर पेन के बाद फाउंटेन पेन; और उसके बाद आपने रिफिल वाला एक बॉल पेन लाकर दिया था।”

“मुझे तुम्हारी खुशी में बिताया एक-एक पल याद है मेरी जान!” मम्मी ने उसके गालों को थपथपाते हुए कहा।

“और एक दिन आपने मुझे बॉल प्वाइंट पेन का पूरा एक बंडल ही लाकर थमा दिया था। मैंने पूछा—इत्ते सारे! आपने कहा—रिफिल खत्म होते ही डस्ट-बिन दिखा देना... यूज एंड थ्रो।”

“तुम्हारा मतलब है, यासीन अब...!!” मम्मी ने शंका-भरी आँखें बेटी की आँखों में डाली ही थीं कि आयशा बोल उठी, “नहीं मॉम, इस फैसले के पीछे रिफिल का कोई रोल नहीं है।”

“तब?”

“आपको याद होगा, अब्बा कहा करते हैं—लिखने के लिए कॉपियाँ और डायरियाँ होती हैं, किताबें बे-धब्बा रहनी चाहिएँ।”

“हाँ; तब?”

“मैं अब किताब हो गयी हूँ मॉम! मेरा किरदार बदल गया है।” आयशा बोली।

“किताब हो गई हो! पेन-बॉलपेन को खुद के पन्नों पर लिखने की इजाजत नहीं देना चाहतीं, न दो; लेकिन छिपाकर छाती में तो रख ही सकती हो!” हूरिया ने डाँटने के भाव वाली भीगी आवाज में बेटी से कहा, “किरदार तो तुमसे वर्षों पहले मेरा भी बदल गया था; पर, डस्टबिन तो नहीं दिखा दी महबूब को! छाती से लगाए बैठी हूँ न!!”

आयशा कुछ न बोल पायी।

“किताब में तब्दील औरत का पन्ना-पन्ना महकता है आयशा। कभी खुद को खोलकर देखना...” हूरिया ने कहा, “अनगिनत तितलियाँ मँडराती मिलेंगी।”

“उससे क्या होगा?” आयशा के गले से उदास-सी आवाज निकली।

“खुद ही देखना, भौंचक रह जाओगी!” हूरिया ने कहा, “किताब हो जाना हर औरत को मयस्सर नहीं है। कोई कॉपी बनकर रह जाती है, कोई डायरी... और जिन्दगी खत्म!”□

- डा. बलराम अग्रवाल

भारतीय संस्कृति में दशहरा के विभिन्न रूप

कृष्ण कुमार यादव

भारतीय संस्कृति में उत्सवों और त्यौहारों का आदि काल से ही महत्व रहा है। सामान्यतः त्यौहारों का सम्बन्ध किसी न किसी मिथक, धार्मिक मान्यताओं, परम्पराओं और ऐतिहासिक घटनाओं से जुड़ा होता है। अपने देश भारत में तो कृषि एवम् मौसम के साथ त्यौहारों का अटूट सम्बन्ध देखा जा सकता है। रबी और खरीफ फसलों की कटाई के साथ ही साल के दो सबसे सुखद मौसमों वसंत और शरद में तो मानों उत्सवों की बहार आ जाती है। शारदीय नवरात्र में माँ के जगराता के बीच दुर्गा पूजा पंडालों के मनोरंजक कार्यक्रम और रामलीला के साथ-साथ गरबा और डांडिया की धूम रहती है। चूँकि इस दौरान खेतों में कटाई हो चुकी होती है अतः दूर-दराज के अंचलों से लोग सपरिवार सज-धजकर बाजारों एवं मेलो में आते हैं और लजीज व्यजंनों का लुफ्त उठाते हुए खूब खरीददारी करते हैं। इसी समय मेलों के बहाने दूर-दराज के मित्रों और

कारण है कि इस दिन को विजयदशमी अर्थात अन्याय पर न्याय की विजय के रूप में भी मनाया जाता है। दशहरे से पूर्व हर वर्ष शारदीय नवरात्र के समय मातृरूपिणी देवी नवधान्य सहित पृथ्वी पर अवतरित होती हैं- क्रमशः शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कूष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी व सिद्धिदात्री रूप में मां दुर्गा की लगातार नौ दिनों तक पूजा होती है। ऐसी मान्यता है कि नवरात्र के अंतिम दिन भगवान राम ने चंडी पूजा के रूप में माँ दुर्गा की उपासना की थी और मां ने उन्हें युद्ध में विजय का आशीर्वाद दिया था। इसके अगले ही दिन दशमी को भगवान राम ने रावण का अंत कर उस पर विजय पायी, तभी से शारदीय नवरात्र के बाद दशमी को विजयदशमी के रूप में मनाया जाता है और आज भी प्रतीकात्मक रूप में रावण-पुतला का दहन कर अन्याय पर न्याय के विजय की उद्घोशणा की जाती हे। सर्वप्रथम राम चरित

मानस के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास ने भगवान राम के जीवन व शिक्षाओं को जन-जन तक पहुँचाने के निमित्त बनारस में हर साल रामलीला खेलने की परिपाटी आरम्भ की। एक लम्बे समय तक बनारस के रामनगर की रामलीला जग-प्रसिद्ध रही, कालांतर में उत्तर भारत के अन्य शहरों में भी इसका प्रचलन तेजी से बढ़ा और आज तो रामलीला के बिना दशहरा ही अधूरा माना जाता है। यहाँ तक कि विदेशों मे बसे भारतीयों ने भी वहाँ पर रामलीला अभिनय को प्रोत्साहन दिया और कालांतर में वहाँ के स्थानीय देवताओं से भगवान राम का साम्यकरण करके इंडोनेशिया, कम्बोडिया, लाओस इत्यादि देशों में भी रामलीला का भव्य मंचन होने लगा, जो कि संस्कृति की तारतम्यता को दर्शाता है।

भारत विविधताओं का देश है, अतः उत्सवों और त्यौहारों को मनाने में भी इस विविधता के दर्शन होते हैं। हिमाचल प्रदेश में कुल्लू का दशहरा काफी लोकप्रिय है। एक हफ्ते तक चलने वाले इस पर्व पर आसपास के बने पहाड़ी मंदिरों से भगवान रघुनाथ जी की मूर्तियाँ एक जुलूस के रूप में लाकर कुल्लू के मैदान में रखी जाती हैं और श्रद्धालु नृत्य-संगीत के द्वारा अपना उल्लास प्रकट करते हैं। मैसूर (कर्नाटक) का दशहरा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित है। वाड्यार राजाओं के काल में आरंभ इस दशहरे को अभी भी शाही अंदाज में मनाया जाता है और लगातार दस दिन तक चलने वाले इस उत्सव में राजाओं का स्वर्ण - सिंहासन प्रदर्शित किया जाता है।

सुसज्जित तेरह हाथियों का शाही काफिला इस दशहरे की शान है। आंध्र प्रदेश के तिरूपति (बालाजी मंदिर) में शारदीय नवरात्र को ब्रह्मेत्सवम् के रूप में मनाया जाता है। ऐसी मान्यता है कि इन नौ दिनों के दौरान सात पर्वतों के राजा पृथक-पृथक बारह वाहनों की सवारी करते हैं तथा हर दिन एक नया अवतार लेते हैं। इस दृश्य के मंचन और साथ ही चक्रस्नानभगवान के सुदर्शन चक्र की पुश्करणी में डुबकी) के साथ आंध्र में दशहरा सम्पन्न होता है। केरल में दशहरे की धूम दुर्गा अष्टमी से पूजा वैपू के साथ आरंभ होती है।

इसमें कमरे के मध्य में सरस्वती माँ की प्रतिमा सुसज्जित कर आसपास पवित्र पुस्तकें रखी जाती हैं और कमरे को अस्त्रों से सजाया जाता है। उत्सव का अंत विजयदशमी के दिन पूजा के साथ होता है। महाराज स्वाथिथिरूनाल द्वारा आरंभ शास्त्रीय संगीत गायन की परंपरा यहाँ आज भी जीवित है। तमिलनाडु में मुरगन मंदिर में होने वाली नवरात्र की गतिविधियाँ प्रसिद्ध हैं। गुजरात में दशहरा के दौरान गरबा व डांडिया-रास की झूम रहती है। मिट्टी के घडे में दीयों की रोशनी से प्रज्वलित गरबोके इर्द-गिर्द गरबा करती महिलायें इस नृत्य के ध्यम से देवी का आह्वान करती हैं। गरबा के बाद डांडिया-रास का खेल खेला जाता है। ऐसी मान्यता है कि माँ दुर्गा व राक्षस महिषासुर के मध्य हुए युद्ध में माँ ने डांडिया की डंडियों के जरिए महिषासुर का सामना किया था। डांडिया -रास के माध्यम से इस युद्ध को प्रतीकात्मक रूप मे दर्शाया जाता है।

दशहरे की बात हो और बंगाल की दुर्गा-पूजा की चर्चा न हो तो अधूरा ही लगता है। वस्तुतः दुर्गापूजा के बिना एक बंगाली के लिए जीवन की कल्पना भी व्यर्थ है। मान्यताओं के अनुसार नौवीं सदी में बंगाल में जन्मे बालक व दीपक नामक स्मृतिकारों ने शक्ति उपासना की इस परिपाटी की शुरूआत की। तत्पश्चात दशप्रहारधारिणी के रूप में शक्ति उपासना के शास्त्रीय पृष्ठाधार को रघुनंदन भट्टाचार्य नामक विद्वान ने सम्पुष्ट किया। बंगाल में प्रथम सार्वजनिक दुर्गा पूजा कुल्लक भट्ट नामक धर्मगुरू के निर्देशन में ताहिरपुर के एक जमींदार नारायण ने की पर यह समारोह र्णतया पारिवारिक था। बंगाल के पाल और नवशियों ने दूर्गा-पूजा को काफी बढ़ावा दिया। प्लासी के युद्ध (1757) में विजय पश्चात लार्ड क्लाइव ने

ईश्वर के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने हेतु अपने हिमायती राजा नव नवकृष्ण की सलाह पर कलकत्ते के शोभा बाजार की विशाल पुरातन बाड़ी में भव्य स्तर पर दुर्गा-पूजा की। इसमें कृष्णानगर के महान चित्रकारों और मूर्तिकारों द्वारा निर्मित भव्य मूर्तियाँ बनावाई गईं एवं वर्मा और श्रीलंका से नृत्यांगनाएं बुलवाई गई। लार्ड क्लाइव ने हाथी पर बैठकर इस समारोह का आनंद लिया। राजा नवकृष्ण देव द्वारा की गई दुर्गा-पूजा की भव्यता से लोग काफी प्रभावित हुए व अन्य राजाओं, सामंतों व जमींदारों ने भी इसी शैली में पूजा आरम्भ की। सन् 1790 में प्रथम बार राजाओं, सामंतो व जमींदारों से परे

सामान्य जन रूप में बारह ब्राह्मणों ने नदिया जनपद के गुप्ती पाढ़ा नामक स्थान पर सामूहिक रूप से दुर्गा-पूजा का आयोजन किया, तब से यह धीरे-धीरे सामान्य जनजीवन में भी लोकप्रिय होता गया। बंगाल के साथ-साथ बनारस की दुर्गा पूजा भी जग प्रसिद्ध है।

इसका उद्भव प्लासी के युद्ध (1757) पश्चात बंगाल छोड़कर बनारस में बसे पुलिस अधिकारी गोविंदराम मित्र (डी.एस.पी.) के पौत्र आनंद मोहन ने 1773 में बनारस के बंगाल ड्यौढ़ी में किया। प्रारम्भ में यह पूजा पारिवारिक थी पर बाद में इसने जनसामान्य में व्यापक स्थान पा लिया।

दशहरे की परम्परा भगवान राम द्वारा त्रेतायुग में रावण के वध से भले ही आरम्भ हुई हो, पर द्वापरयुग में महाभारत का प्रसिद्ध युद्ध भी इसी दिन आरम्भ हुआ था। विजयदशमी सिर्फ इस बात का प्रतीक नहीं है कि अन्याय पर न्याय अथवा बुराई पर अच्छाई की विजय हुई थी वरन् यह बुराई में भी अच्छाई ढूंढ़ने का दिन होता है। स्वयं रावण-वध के बाद भगवान राम ने अनुज लक्ष्मण को रावण के पास शिक्षा लेने के लिए भेजा था। रावण भगवान शिव का भक्त होने के साथ-साथ महापराक्रमी भी था। इसी तथ्य के मद्देनजर आज भी कानपुर के शिवाला स्थित कैलाश मंदिर में विजयदशमी के दिन दशानन रावण की महाआरती की जाती है।

सन् 1865 में श्रृंगेरी के शंकराचार्य की मौजूदगी में महाराज गुरू प्रसाद द्वारा स्थापित इस मंदिर में शिव के साथ उनके प्रमुख भक्तों की मूर्तियाँ स्थापित की गई हैं। कालांतर में सन् 1900 में महाराज शिवशंकर लाल ने कैलाश मंदिर परिसर में शिव भक्त रावण का मंदिर बनवाया और देवी के तेइस रूपों की मूर्ति भी स्थापित की। तभी से रावण की महाआरती की परम्परा यहाँ पर कायम है।

कानपुर से सटे उन्नाव जिले के मौरावां कस्बे में भी राजा चन्दन लाल द्वारा सन् 1804 में स्थापित रावण की मूर्ति की पूजा की जाती

है। यहाँ दशहरे के दिन रामलीला मैदान में 7-8 फुट ऊँचे सिंहासन पर बैठे रावण की विशालकाय पत्थर की मूर्ति की लोग पूजा करते हैं, जबकि एक अन्य पुतला बनाकर रावण दहन करते हैं। इसी प्रकार मध्य प्रदेश के मंदसौर में नामदेव वैश्य समाज के लोगों के अनुसार रावण की पत्नी मंदोदरी मंदसौर की थी। अतः रावण को जमाई मानकर उसकी खतिरदारी यहाँ पर भव्य रूप में की जाती है।

यहाँ पर रावण के समक्ष मनौती मानने और पूरी होने के बाद रावण की वंदना करने व भोग लगाने की परंपरा रही है। यहाँ रावण की पैतीस फुट उंची बैठी हुई अवस्था में कंक्रीट मूर्ति स्थापित की गई है। इसी प्रकार जोधपुर के लोगों के अनुसार रावण की पत्नी मंदोदरी यहाँ की पूर्व राजधानी मंडोर की रहने वाली थीं और रावण व मंदोदरी के विवाह स्थल पर आज भी रावण की चवरी नामक एक छतरी मौजूद है। यहाँ किला रोड स्थित अमरनाथ महादेव मंदिर प्रांगण में रावण मंदिर है। जोधपुर में श्रीमाली ब्राह्मण समाज के दवे गोधा गोत्र परिवार के लोग रावण दहन पर शोक मनाते हैं। ऐसी मान्यता है कि रावण दवे गोधा गोत्र से था इसलिए रावण दहन के समय आज भी इनके

गोत्र से जुडे परिवार रावण दहन नहीं देखते और रावण दहन के बाद स्नान कर यज्ञोपवीत धारण करते हैं। मध्य प्रदेश के विदिशा जिले में स्थित रावणगाँव में रावण को महात्मा या बाबा के रूप में पूजा जाता है। यहाँ रावण बाबा की करीब आठ फीट लंबी पाशाण प्रतिमा लेटी हुयी मुद्रा में है और प्रति वर्ष दशहरे पर इसका विधिवत श्रृंगार करके अक्षत, रोली, हल्दी व फूलों से पूजा करने की परंपरा है। चूंकि रावण की जान उसकी नाभि में बसती थी, अतः यहाँ पर रावण की नाभि पर तेल लगाने की परंपरा है अन्यथा पूजा अधूरी मानी जाती है। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में ग्रेटर नोएडा के मध्य स्थित बिसरख गाँव को रावण का पैतृक गाँव माना जाता है। बताते हैं कि रावण के पिता विश्रवामुनि इस गाँव के जंगल में शिव भक्ति करते थे एवं रावण सहित उनके तीनों बेटे यहीं पर पैदा हुए। विजयदशमी के दिन जब चारों तरफ रावण का पुतला फूका जाता है, तो बिसरख गाँव के लोग उस दिन शोक मनाते हैं। इस गाँव में दशहरा का त्यौहार नहीं मनाया जाता है। गाँववासियों को मलाल है कि रावण को पापी रूप में प्रचारित किया जाता है जबकि वह बहुत तेजस्वी, बुद्विमान, शिवभक्त, प्रकाण्ड पण्डित एवं क्षत्रिय गुणों से युक्त था।

आधुनिक युग में जब अमीरी-गरीबी की खाई बढ़ रही है, पर्यावरण समस्या जटिल होती जा रही है तो निश्चिततः हमारा उद्देश्य उत्सवों व त्यौहारों की मूल भावनाओं की तरफ लौटने की ओर होना चाहिए न कि अपनी हरकतों द्वारा इन भावनाओं का मजाक उड़ाने की। त्यौहार सामाजिक सदाशयता के परिचायक हैं न कि हैसियत दर्शाने के। त्यौहार हमें जीवन के राग-द्वेश से ऊपर उठाकर एक आदर्श समाज की स्थापना में मदद करते हैं। समाज के हर वर्ग के लोगों को एक साथ मेल-जोल और भाईचारे के साथ बिठाने हेतु ही त्यौहारों का आरम्भ हुआ। यह एक अलग तथ्य है कि हर त्यौहार के पीछे कुछ न कुछ धार्मिक मान्यताएं, मिथक, परम्पराएं और ऐतिहासिक घटनाएं होती हैं पर अंततः इनका उद्देश्य मानव-कल्याण ही होता है। आज जरुरत है कि इन त्यौहारों की आडम्बरता की बजाय इनके पीछे छुपे हुए संस्कारों और जीवन मूल्यों को अहमियत दी जाए तभी व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र सभी का कल्याण सम्भव होगा।

नारायणी साहित्यिक संस्थान द्वारा पुरस्कार वितरण

नारायणी साहित्यिक संस्थान द्वारा मोती बाग के पास स्थित सालेम इंग्लिश स्कूल के सभागार में हिन्दी दिवस के उपलक्ष में 12 सितंबर को उन छात्रों को "हिन्दी श्रेष्ठ सम्मान" से सम्मानित किया गया जिन्होंने शैक्षणिक सत्र 2021 - 22 में दसवीं कक्षा में अपनी शाला में सर्वाधिक अंक प्राप्त किए थे। संस्थान की डॉ. मृणालिका ओझा ने बताया कि शहर ही नहीं प्रदेश में ऐसा आयोजन पहली बार होने के कारण कार्यक्रम में उपस्थित होने को लेकर छात्रों सहित शिक्षकों एवं पालकों में भारी उत्साह रहा।

कार्यक्रम में उपस्थित विशिष्ट अतिथि प्राचार्य श्री वीरेंद्र कुमार सिंह, डॉ. स्नेहलता पाठक, श्री लक्ष्मीनारायण लाहोटी, डॉ. मंजुलता श्रीवास्तव एवं श्री छबिलाल सोनी ने हिन्दी के प्रति रूचि को लेकर छात्रों की न केवल प्रशंसा की अपितु उनके उज्जवल भविष्य की कामना भी की। इस अवसर पर श्री शौर्यसिंह ठाकुर, श्री आदित्य चौरसिया, कु.आयुषी सोनी, कुमारी दुर्गा यादव, कुमारी खुशी देवांगन, श्री अंजनेय पाण्डे, कुमारी सुनयना साहू, कुमारी गायत्री साहू, श्री कुणाल सिंह राजपूत, कुमारी नंदिनी, कुमारी रागनी यादव, श्री रामकुमार छांटा, श्री वासुदेव कन्नौजे, कुमारी गोल्डी हियाल, श्री विशाल गौड, कुमारी भूमिका सपहा, श्री ऐश्वर्य साहू, कुमारी शुभांगी विश्वकर्मा, श्री पुलकित साहू एवं कुमारी सोनम देवांगन को "हिन्दी श्रेष्ठ सम्मान" से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन उर्मिला देवी 'उर्मी' ने किया एवं राजेन्द्र ओझा द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

राजेन्द्र ओझा

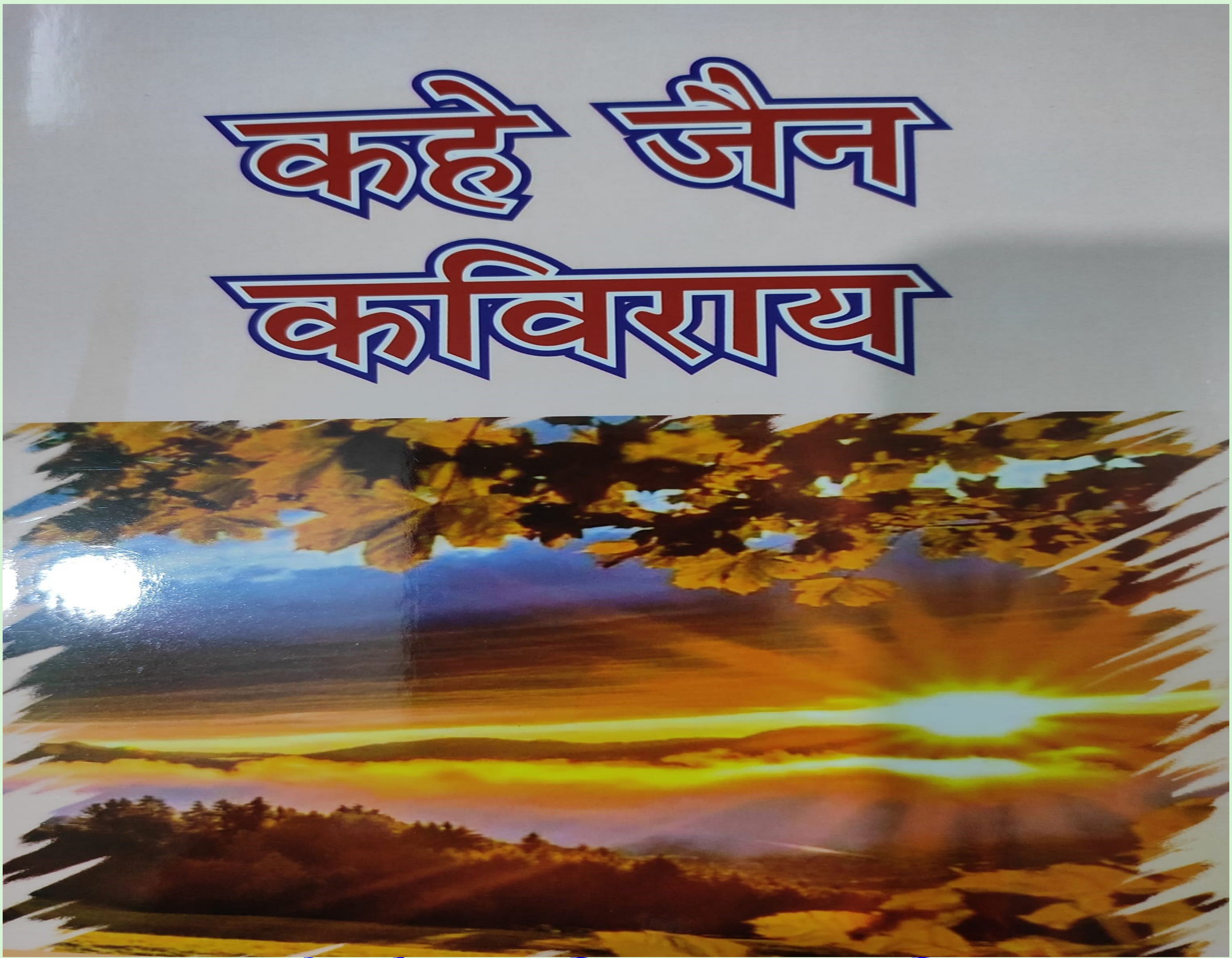

पुस्तक 'कहे जैन कविराय';कुंडलिया संग्रह

पुस्तक चर्चा

'दृष्टि' पत्रिका के लोकप्रिय सम्पादक, सुप्रतिष्ठित रचनाकार एवं बहुआयामी व्यक्तित्व के स्वामी वरिष्ठ साहित्यकार अशोक जैन की कुंडलिया संग्रह कृति 'कहे जैन कविराय' के पूर्वार्द्ध में उनके द्वारा रचित 112 कुंडलिया छंद संगृहीत हैं। इसकी सार्थक व सारगर्भित भूमिका विद्यावाचस्पति त्रिलोक सिंह ठकुरेला ने लिखी है और फ्लैप मैटर कृष्ण गोपाल विद्यार्थी द्वारा लिखित है। कृति के उत्तरार्द्ध में 20 ग़ज़लें संगृहीत हैं जो बहुत लाज़वाब एवं शानदार हैं। इन पर अशोक वर्मा,नई दिल्ली द्वारा बहुत उत्कृष्ट समीक्षात्मक टिप्पणी दी गई है- "दिल के तारों को झंकृत करती हैं -अशोक जैन की ग़ज़लें " इससे कृति की उपादेयता में चार चाँद लग गए हैं। कृति भाव सौंदर्य एवं शिल्प सौष्ठव की दृष्टि से बहुत प्रभावशाली बन पड़ी है।

पुस्तक में अंतर्निहित कुंडलियों में सामाजिक विसंगतियों, व राजनीतिक विद्रूपताओं के साथ-साथ प्राकृतिक सौंदर्य का लालित्यपूर्ण चित्रण,

रचनाकार : अशोक जैन

प्रकाशक : अमोघ प्रकाशन,गुरुग्राम

प्रथम संस्करण : अगस्त 2022

मूल्य : 100/- पृष्ठ : 78 (बिना जिल्द)

'कहे जैन कविराय'

किसान, मजदूर,हस्तशिल्पियों व आम आदमी के दुख दर्द का संवेदनापूर्ण निरूपण, भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों की उपयोगिता, प्रेम-सौहार्द और भाईचारे की समाज में अपरिहार्यता, राखी पर्व व भाई-बहिन के पवित्र प्रेम की उपादेयता,पर्यावरण संरक्षण व हरीतिमा संवर्धन तथा मंहगाई आदि का रचनाकार ने बहुत भावपूर्ण, मार्मिक एवं हृदयस्पर्शी चित्रण किया है, जिसे पढ़ कर पाठकों की हृत-चेतना झंकृत हो उठती है और मन आंदोलित हो उठता है।द्रष्टव्य है, कचरा बीनने वालों की दयनीय स्थिति की एक संवेदनपरक झलकी -

कचरा बीनत जुग भया,मिटा न किस्मत फेर।

भूखे सोवत रात को, भूखे उठे सवेर।

भूखे उठे सवेर,न कोई हलचल देखी।

सड़क-सड़क नित घूम,बहुत झेली अनदेखी।

कह जैन कविराय, भया गुंडन का ख़तरा।

संकरी गलियन मध्य,बीनते जब-जब कचरा।" पृष्ठ-16.

योग के महत्त्व पर प्रकाश डालती एक मार्मिक कुंडली देखिए-

योग बनाए देह को, हल्का और निरोग।

नित्य अगर अपनाएंगे,डर कर भागें रोग।

डरकर भागें रोग, नहीं फिर व्याधि सताए।

तन मन होंगे स्वस्थ, वेदना पास न आये।

कह जैन कविराय, कष्ट को दूर भगाए।

बहुत लचीला जिस्म,सभी का योग बनाए।

इसी प्रकार तुलसी के पौधे रोपने की दिव्य प्रेरणा देते हुए कवि ने लिखा है-

घर में तुलसी रोपिये, तुलसी है वरदान।

वायु को पोषित करे, तुलसी गुण की खान।......"पृष्ठ-9

कर्मवीर बनने व आशा का भाव मन में सदा जगाए रखने का प्रेरक सन्देश देते हुए कवि ने लिखा है,चंद पंक्तियाँ देखिए:

आँखों में उम्मीद की, किरण राखिए संग।

कर्मवीर बनकर सदा दिल में रहे उमंग।" पृष्ठ-15.

इसी प्रकार लोक व्यवहार की शिक्षा पर चंद पंक्तियाँ द्रष्टव्य है-

डर से मत घबरा प्रिये,जीवन को तू झेल।

अपने ही पुरुषार्थ से, जीतेगा सब खेल।"

रिश्ता ऐसा राखिए,संग रोए,मुस्काये।

विपदा जब घेरन लगे,साथ खड़ा हो जाय।"पृष्ठ-64.

कोरोना और ओमिक्रा़न जैसी भयंकर महामारी से भी सावधान रहने के लिए कवि ने सजग किया है-

नए रंग से कर दिया,कोरोना ने वार।

घर के भीतर राखिए, अपना सुपरिवार।

अपना सुपरिवार, बचे तो खुशी मिलेगी।

लापरवाही, मित्र ,सभी पर बोझ बनेगी।.....।' पृष्ठ -51.

"आया ओमिक्ऱान अब, करने को संहार।

संभलो इससे पूर्व कि कर न दे प्रहार।....।" पृष्ठ -50.

इस प्रकार विविध भाव संवेदनाओं को व्यंजित करती समस्त कुंडलिया अपने समय एवं युगबोध का सुंदर निरूपण करती हुई, भाव, भाषा, शिल्प,छन्द, गति,यति,मात्रा, सन्देश एवं काव्य अभिप्रेत की दृष्टि से अत्यंत प्रभविष्णु बन पड़ी हैं।

कृति के उत्तरार्द्ध में स्थित समस्त बीस ग़ज़लें सकारात्मक सोच,आशावादी चिंतन एवं सामाजिक सरोकारों से अनुप्राणित हैं। इनमें भी आम आदमी के दुख-दर्द एवं जीवन को बहुत सलीके से व्यंजित किया गया है। ये गजलें अत्यंत सरस, भावपूर्ण, लयात्मक और सरल भाषा में रचित हैं, जो मन को संस्पर्शित करती हैं,विशेष रूप से छोटी बहर की ग़ज़लें गागर में सागरवत अत्यंत प्रभावशाली व प्रखर बन पड़ी हैं। यथा- ग़ज़ल की शुरुआती दो-दो बेमिशाल पंक्तियाँ-

" महकते फूल हैं खुमारी है

यह नशा आज हम पर भारी है।"

"तम के बाद उजाले होंगे,

फिर सब किस्मत वाले होंगे।"

" बेशक घुप्प अंधेरा है,

कल तो नया सवेरा है।"

"खूब लड़े जब अंधियारों से,

गले मिले तब उजियारों से।"

"जिनके कर्म महान नहीं,

उनका कुछ सम्मान नहीं।"

"दबी राख चिंगारी देखी,

पीड़ा एक कुंवारी देखी।"

" गा कर हाल बताने वाले,

जिंदा हैं मर जाने वाले।"

"ऐसी अजब पहेली देखी,

बंटती गुड़ की भेली देखी।"

"जिसका कोई रोल नहीं है,

वह रिश्ता अनमोल नहीं है।"

आदमी को आदमी के पास होना चाहिए,

आदमी को दर्द का एहसास होना चाहिए।"

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि "कहे जैन कविराय" कृति हर दृष्टि से उत्कृष्ट, प्रेरणादायी एवं उज्ज्वल है। यह पठनीय व संग्रहणीय है। इस प्रकार की कृति की साहित्यिक- समाज अपरिहार्यता है।

समीक्षक: ज्ञानप्रकाश 'पीयूष'

झिझक

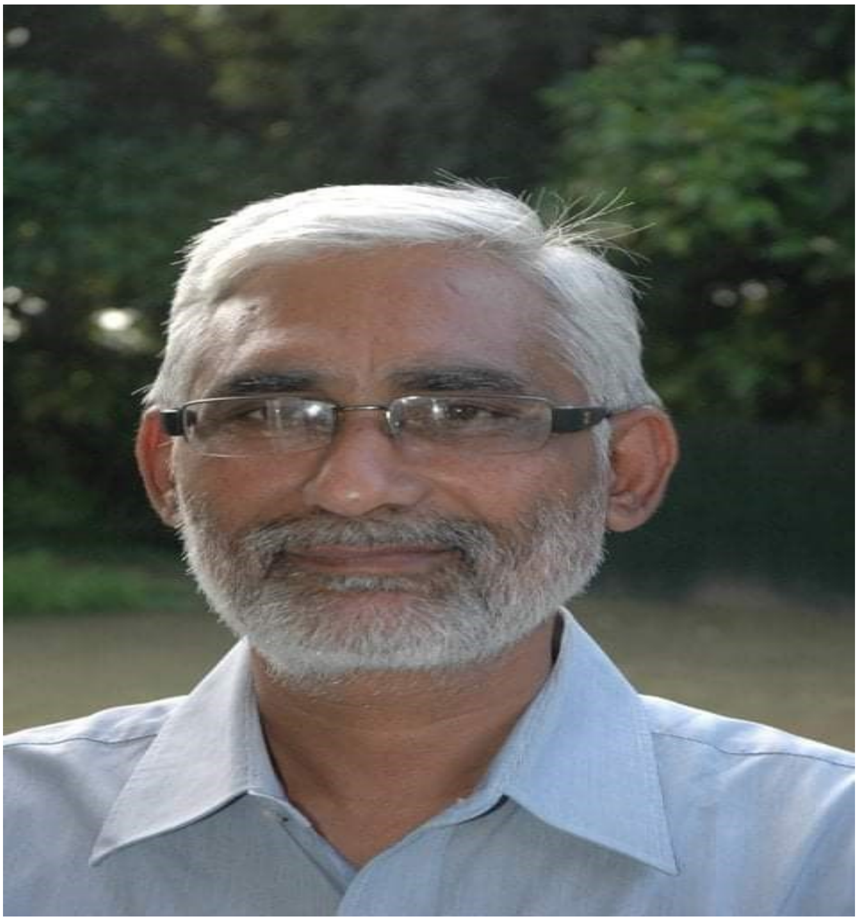

लघुकथा

साहब के घर में गट्टू के अन्नप्राशन की पार्टी हो और रघु को न बुलाया जाए, यह संभव ही न था। आखिर वह उनका ऑल इन वन ठहरा। सुबह-शाम कुत्ते को घुमाना हो, तो रघु ले जाएगा। गाड़ियों की सफाई करनी हो, तो रघु करेगा। गेहूं पिसा कर लाना हो, रघु हाज़िर हो जाएगा। बालकनी की ग्रिल चमकानी हो, रघु को बुला लो। कौन-सा काम होगा ऐसा जो रघु न कर सकता हो! कहना यह चाहिए कि जो काम कोई और न कर सकता हो, उसे रघु अपनी परिचित सहजता के साथ चटपट कर दिखाता।

पार्टी में उसे निमंत्रित करना जितना आसान था, उतना ही कठिन था उसका वहां पहुंचने की हिम्मत जुटा पाना। काफी सोच-विचार के बाद रघु ने पूरे मन से चेन वाला एक टैडी बियर बतौर गिफ्ट खरीदा और पार्टी लॉन के पास जाकर खड़ा तो हो गया, पर उसके भीतर प्रवेश करना उसे पहाड़ तोड़ने जैसा लग रहा था।

अचानक उसे जाने क्या हुआ कि वह एक झटके में गट्टू को गोद लिए खड़ी मौसी के पास जा पहुंचा। उसने टैडी की चेन गट्टू के गले में डाली और बाहर की तरफ ऐसी दौड़ लगा दी कि कहीं कोई उसे देख न ले। तभी गट्टू की मौसी उसे देख चिल्लाई, "अरे रघु, खाना तो खाकर जा।"

"बस, अभी आता हूँ।" कहकर वह एक झपाटे में निकल ही गया।

उसकी मुश्किल वहां कौन समझता! जिन साहब लोगों की गाड़ियां धोने से लेकर हज़ार काम वह रोज़ करता है, उनके साथ बैठकर खाना कैसे खा सकता है भला! वे लोग खा-पीकर निकल जाएं, फिर लॉन के पीछे बैठकर इत्मीनान से खाने का मज़ा ले लेगा।□

महेश दर्पण

महफ़िल में दिल की बात ज़बाँ पर न लाइये
कोई जो दिल जलाये तो बस मुस्कुराइए

देते हैं आसमान को तारे भी रोशनी
सूरज नही तो जुगनू सा ही जगमगाइये

मत सोचिए है कल के मुकद्दर में क्या लिखा
जो आज हाथ मे है इसे मत गँवाईये

सबसे कहा गया के कहें अपने दिल का हाल
हमसे कहा के शाइरी अपनी सुनाइये

हो जो बहुत क़रीब वो आता नहीं नज़र
गर सच है ये तो आप ज़रा दूर जाइये

आरोह खुशियाँ हैं तो हैं अवरोह इसके ग़म
हर लम्हा ज़िंदगी की ग़ज़ल गुनगुनाइए

पी ही लिया है इश्क़ का जब जाम आपने
ख़ुद को सँभालिये न 'सिफ़र' लड़खड़ाइये

- अंजलि ' सिफ़र '

"साहित्य समाज में संस्कारों और संस्कृति का संवाहक" पोस्टमास्टर जनरल कृष्ण कुमार यादव

आजमगढ़ में साहित्य की समृद्ध परम्परा रही है - पोस्टमास्टर जनरल कृष्ण कुमार यादव

साहित्य समाज में संस्कारों व संस्कृति का संवाहक है। ऐसे में साहित्यकारों का दायित्व है कि ऐसा लेखन करें जो साहित्य के माध्यम से भारतीय संस्कृति को जन-जन तक पहुंचाए। उक्त उद्गार चर्चित साहित्यकार एवं वाराणसी परिक्षेत्र के पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव ने सेवानिवृत्त उप बेसिक शिक्षा अधिकारी श्री राम बचन सिंह यादव 'बेराही' की तीन पुस्तकों - नायाब नायक कर्ण (खंड काव्य), अंतर्बोध (काव्य संग्रह) और असुरवंश बनाम राजवंश (खंड काव्य) का विमोचन करते हुए व्यक्त किया। लाइफ लाइन हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर, आजमगढ़ के सभागार में आयोजित कार्यक्रम में श्री चंद्रजीत सिंह यादव, उप शिक्षा निदेशक, मिर्जापुर मंडल, प्रसिद्ध न्यूरोसर्जन डॉ. अनूप कुमार सिंह, डॉ. गायत्री सिंह, गीता सिंह भी मंचासीन रहे।

पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव ने कहा कि एक तरफ रामायण काल की घटनाओं को सहेजे खंड-काव्य 'असुरवंश बनाम राजवंश' तो दूसरी तरफ महाभारत काल के 'नायाब नायक कर्ण' के जीवन के अंतर्द्वंदों को सहेजे खंड-काव्य की रचना, वहीं जीवन की तमाम अनुभूतियों व संवेदनाओं को सहेजता काव्य संग्रह 'अंतर्बोध' एक कवि के रूप में श्री राम बचन सिंह यादव की आध्यात्मिक व दार्शनिक प्रवृत्ति, सांस्कृतिक विरासत से जुड़ाव, इतिहास बोध का भरपूर ज्ञान और महापुरुषों से युवा पीढ़ी को जोड़ने का सत्साहस दिखाता है। परिस्थिति और ऐतिहासिक चेतना के द्वंद

कृष्ण कुमार यादव ने राम बचन सिंह यादव की तीन पुस्तकों का विमोचन किया

से उबरते हुए उन्होंने लोग-मंगल से जुड़कर युगीन सत्य को भेदकर मानवीयता को खोजने का प्रयत्न किया। श्री यादव ने कहा कि रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्यों ने ज्ञान, भक्ति और कर्म की त्रिवेणी प्रवाहित कर भारतीय जनमानस को जागृत किया। इनमें जिन प्रगतिशील मूल्यों व समानता के भावों पर बल दिया है, उसे आज बार- बार उद्धृत करने की जरूरत है।

पोस्टमास्टर जनरल श्री यादव ने कहा कि सरकारी सेवाओं में रहते हुए भी साहित्य सृजन का कार्य व्यक्ति की दृष्टि को और भी व्यापक बनाता है। शिक्षा व्यक्ति में ज्ञान उत्पन्न करती है तो साहित्य संवेदना की संपोषक है। इसी कड़ी में श्री राम बचन सिंह यादव न केवल एक शिक्षक एवं पथ प्रदर्शक के रूप में रहे, बल्कि साहित्य के विकास एवम उन्नयन में भी महती भूमिका निभाने को तैयार हैं।

आजमगढ़ से जुड़े अपने अनुभवों को साझा करते हुए श्री कृष्ण कुमार यादव ने कहा कि तमाम ऋषियों-मुनियों, क्रांतिकारियों व साहित्यकारों की पावन धरा रहे आजमगढ़ में साहित्य की समृद्ध परंपरा रही है। राहुल सांकृत्यायन, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', आचार्य चंद्रबली, श्याम नारायण पांडेय,अल्लामा शिब्ली नोमानी, कैफी आजमी जैसे यहाँ के साहित्यकारों ने देश-दुनिया में ख्याति अर्जित की है। आज भी आजमगढ़ के तमाम साहित्यकार न सिर्फ उत्कृष्ट रच रहे हैं बल्कि समाज को एक नई राह दिखा रहे हैं।

श्री चंद्रजीत सिंह यादव, उप शिक्षा निदेशक, मिर्जापुर मंडल ने कहा कि श्री राम बचन सिंह यादव की कविताएं पाठक को खुद अपना अंतर्बोध कराती प्रतीत होती हैं। मानवीय मूल्यों के पतन और समाज की वर्तमान स्थिति को उन्होंने अपनी कविताओं में अक्षरक्ष: उतार दिया है।

न्यूरोसर्जन डॉ. अनूप कुमार सिंह ने कहा कि अच्छी पुस्तकें जीवन के लिए टॉनिक का कार्य करती हैं। इनके अध्ययन-मनन से एकाकीपन, निराशा और अवसाद से भी बचा जा सकता है। युवाओं में पुस्तकें पढ़ने की आदत विकसित करनी होगी।

अपनी रचना प्रक्रिया पर श्री राम बचन सिंह यादव ने कहा कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम और नायक कर्ण का व्यक्तित्व सदैव से प्रभावित करता रहा है, जिन्होंने तमाम संघर्षों और विपरीत परिस्थितियों के बावजूद भी जीवन में मूल्यों का साथ नहीं छोड़ा। इन पर खंड-काव्य लिखकर अपने को बेहद सौभाग्यशाली समझता हूँ। पिताजी के अंतिम दिनों की अवस्था देखकर भी मुझे जीवन का अंतर्बोध हुआ, जिसे काव्य संग्रह के रूप में परिणित किया।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. अभय प्रताप यादव, प्राचार्य, आर.के फार्मेसी, सठियांव, आजमगढ़ तो आभार ज्ञापन श्री प्रेम प्रकाश यादव ने किया। इस अवसर पर प्रो.आरके यादव, सरोज, ऋषि मुनि राय, मिथिलेश तिवारी, घनश्याम यादव, संजय यादव, आलोक त्रिपाठी, सूर्य प्रकाश सहित तमाम साहित्यकार और गणमान्य जन उपस्थित रहे।

डॉ. अभय प्रताप यादव

परत दर परत

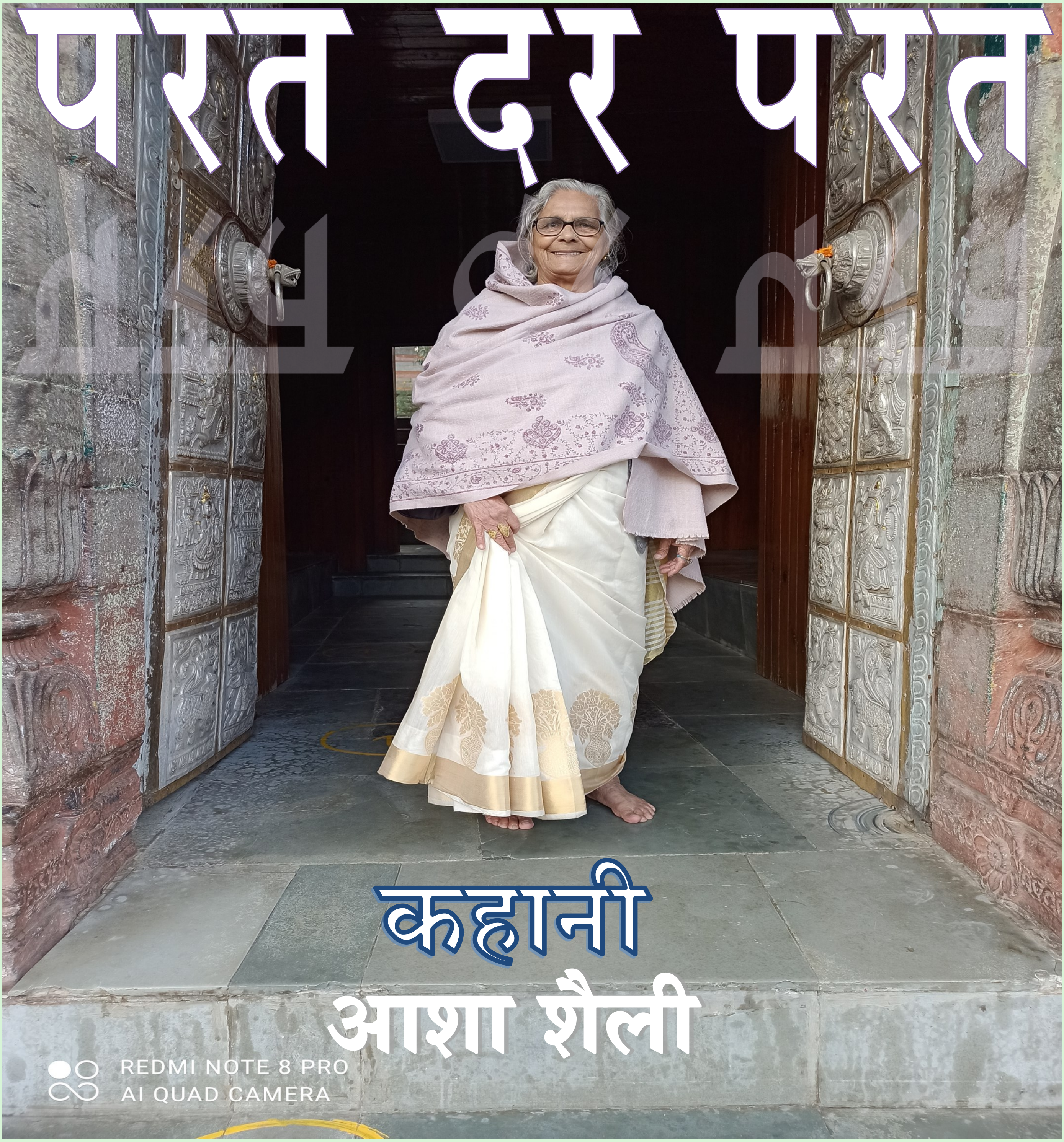

कहानी

आशा शैली

दो दिन से पानी की मोटर खराब थी। कल प्लम्बर ने बड़ी खुशामद के बाद जब सुबह आने का आश्वासन दिया तब जाकर सुजाता का मन कुछ शान्त हुआ था फिर भी जैसे एक अविश्वास-सा बना हुआ था, इसीलिए आज छः बजे से ही सुजाता घर के पिछले बरामदे में प्लम्बर की राह देखती चक्कर काट रही थी। यहाँ से पूरा नहीं तो आधा शहर तो दिखाई दे ही जाता था।

प्लम्बर के घर पर फोन भी तो नहीं था कि वह फोन करके पूछ ही लेती या याद दिला देती। अब तो चुपचाप इंतज़ार करना है। राह देखते-देखते जब साढ़े सात बज गए तो वह थककर कुर्सी पर बैठकर नीचे शहर की तलहटी में बहती सतलुज नदी की लहरों से मन बहलाने की कोशिश करने लगी।

शहर के कदमों में बहती सतलुज नदी कुल्लू और शिमला जिले की विभाजन रेखा का काम करती, शहर को गुंजाती पूरे जोर-शोर से बह रही थी। अचानक ही सुजाता को लगा कि पुल पर कुछ भीड़-सी है। अभी वह बात को समझने की कोशिश करती कि कुछ लोगों को उसने पुल की तरफ दौड़ते देखा। थोड़ी ही देर में पुलिस भी पहुँच गई वहाँ। सुजाता की जिज्ञासा बढ़ती ही जा रही थी। सोच रही थी कि बाहर जाकर बात का पता लगए, कि तभी पड़ोस की अर्चना भागती हुई आई, ‘‘आंटी......आंटी!’’ अर्चना हाँफ रही थी।

‘‘क्या हुआ अर्चना? तुम हाँफ क्यों रही हो?’’ पर अर्चना शायद खुद पर काबू पाने की चेष्टा

कर रही थी, उसने पुल की तरफ इशारा किया।

''हाँ, मैं भी देख ही रही हूँ, पर हुआ क्या है?'' अब तक अर्चना अपनी साँसों पर काबू पाकर कुर्सी पर बैठ चुकी थी। उसकी बड़ी-बड़ी आँखें फैलकर और भी बड़ी दिखाई दे रही थीं,

''आंटी, मधुर......मधुर की बहू ने.... पुल पर से सतलुज में छलांग लगा दी है। उसकी चप्पल और दुपट्टा वहाँ मिला है।''

''क्या कह रही है रे?'' सुजाता चौंककर खड़ी हो गई।

''हाँ आंटी। उनके घर में तो बड़ी भीड़ है, वहाँ तो पुलिस वाले पहले गए थे, अब पुल पर आए हैं। ''

''तुझे किसने बताया?''

''मधुर आंटी के नौकर हरी ने। वह दुकान पर सफाई करने जा ही रहा था कि मधुर आंटी की बेटी गौरी पुल की तरफ से भागती हुई आई और उसने ही कहा कि नयना भाभी ने पुल पर से नदी में छलांग लगा दी है।''

सुजाता की साँस अटक गई थी। उसे अपनी समस्या तो भूल ही गई। आँखों के आगे नयना का मासूम-सा चेहरा बार-बार घूमने लगा।

अभी एक महीना ही तो हुआ था उस घर में शहनाई बजे।

नयना बतरा, उसकी बेटी आरती की नई टीचर थी। पिछले अभिभावक दिवस पर जब वह आरती के स्कूल पोर्टमोर में मीटिंग के लिए शिमला गई थी, तभी उसका नयना से परिचय हुआ था। अभी छः महीने पहले की ही तो बात है। मीटिंग से कुछ पहले ही प्रिंसिपल ने अभिभावकों को नए आए शिक्षकों का परिचय दिया जिनमें नयना बतरा भी थी। नयना बहुत हँसमुख और चंचल लग रही थी। बल्कि यूँ कहा जाए कि उसकी तो आँखें ही बोलती थीं तो कोई अतिश्योक्ति नहीं थी। उस एक मुलाकात में ही वह सुजाता को अच्छी लगने लगी थी परन्तु दूसरे दिन सुजाता घर वापस लौट आई थी।

आरती पोर्टमोर के हॉस्टल में थी। वह जब भी माँ को फोन करती तो नयना मैडम के बारे में जरूर बात करती। तभी एक दिन आरती ने बताया कि उसकी मैडम अब रामपुर बुशहर ही आ रही है। उनकी शादी मधुर आंटी के बेटे शील से हो रही है,

''मम्मी! आप जरूर मेरी मैम को मिलकर आना। ''

हालांकि मधुर का घर उनके घर से ज्यादा दूर नहीं था पर सुजाता चाहकर भी नयना से मिलने का समय नहीं निकाल पाई। आज उसी नयना की आत्महत्या का समचार था, जो उसके गले नहीं उतर रहा था। कितनी विचित्र बात थी, सुजाता कैसे विश्वास कर ले इस बात पर? आरती ने बताया था कि नयना मैडम जूडो-कराटे की चैम्पियन भी रही हैं और कॉलेज यूनियन की लीडर भी। ऐसी लड़की विवाह के एक महीने बाद ही आत्महत्या कर ले.....? असम्भव।

दोपहर को आरती का फोन आया, वह घटना की सत्यता के बारे संदिग्ध थी। सुजाता की पुष्टि पर वह रोने ही लग गई आर रोते-रोते बोली, ''नहीं मम्मी, ऐसा नहीं हो सकता। हमारी मैम तो कहती थी कि आत्महत्या कायर लोग करते हैं। बहादुर तो मुसीबतों को सामना करते हैं। वो कैसे कर सकती हैं आत्महत्या? नहीं सब लोग झूठ बोल रहे हैं। हमारे स्कूल में भी सब ऐसा ही कह रहे हैं।'' सुजाता ने बड़ी मुश्किल से बेटी को समझाया, पर सच क्या है इसका पता नहीं चल रहा था।

इस घटना को तीन दिन बीत गए थे। खबरें छन-छन कर आ ही रही थीं। फिर सुना गया कि नयना की माँ रामपुर पुलिस स्टेशन गई थी,

अपनी बेटी की गुमशुदगी की रपट लिखाने पर पुलिस वालों ने रपट नहीं लिखी। अब तो हर रोज़ कोई न कोई नई बात सामने आने लगी थी। फिर धीरे-धीरे मामला ठंडा पड़ता गया और लोग भूलने लगे नयना और मधुर को। तभी एक दिन पूरा शहर सन्नाटे में आ गया। मधुर, उसकी बेटी गौरी और बेटा शील दहेज अधिनियम के अन्तर्गत धर लिया गया। मामला क्या है जानने के लिए सुजाता ने शाम को मधुर की अभिन्न मित्र बेला को घेर लिया।

बेला, सुजाता के बगल वाले मकान में ही रहती थी। उसके पास टीवी नहीं था और वह रोज संध्या के भोजन से निपटकर सुजाता के पास टीवी देखने बैठा करती थी। उस रात भी भोजन से निवृत्त होकर जब बेला और सुजाता टैलीविजन के सामने बैठी सीरियल देख रही थीं तो सुजाता ने अचानक ही बात छेड़ दी,

''बहन जी, कैसी है मधुर? आप गए थे उसे दखने?''

''हाँ भाभी! गई तो थी, पर हम लोग कर क्या सकते हैं बेचारी के लिए? ऐसी गन्दी बहू ले आई कम्बख़त कि जेल का मुँह देखने की नौबत आ गई पूरे परिवार को।''

''क्यों क्या हुआ.....?'' सुजाता ने एकदम अनजान बनते हुए कहा।

''तुम्हें नहीं पता क्या...., बहू की माँ ने दहेज का केस कर दिया है। बदमाश राण्ड, अपने यार के साथ खुद भाग गई और बेचारी मधुर के पूरे परिवार को फंसा गई।''

''पर बहन जी, मैंने तो सुना था कि पुलिस ने उसका केस ही दर्ज नहीं किया फिर ये कैसे हो गया?''

''अरे भाभी, तुम ना! बहुत सीधी हो। वो जो पी.डब्लयू.डी. मनिस्टर है न, वह उनके गाँव का है। बस वही आकर बैठ गया पुलिस वालों की छाती पर। अब तो केस सी.बी.आई. के पास चला गया है। पता नहीं क्या होगा।'' बहन जी का स्वर चिन्ता में डूबा हुआ था।

''परेशानी की क्या बात है बहन जी, अब और क्या होना है? सीबीआई तो दूध का दूध और पानी का पानी कर देगी।''

''यही तो परेशानी की बात है, यहाँ तो कोई सुनने वाला भी नहीं बेचारी का। आदमी पहले ही नहीं, बेटा भी जेल में है खुद तो अस्पताल में पड़ी है।''

''क्यों अस्पताल में क्यों?'' सुजाता ने अनजान बनते हुए पूछा।

''अरे, उसे तो पुलिस को देखते ही हार्ट अटैक पड़ गया था। पुलिस वाले ही उसे अस्पताल ले गए थे।'' फिर थोड़ा रुक कर कहने लगीं, ''बहू गई तो गई राण्ड, पर जाते-जाते बेचारी मधुर के 50 तोले के सोने के कंगन भी ले गई। इतना खर्चा शादी में किया ऊपर से यह मुसीबत। बेचारी मधुर तो मारी गई बेमौत।''

''हाँ, कह तो आप ठीक ही रहे हैं।'' सुजाता ने कहा, ''पर मैंने तो सुना है, कि नयना के ड्रेसिंग टेबल की दराज़ में 15000/- के नए नोट भी निकले हैं। अगर वह अपने पंद्रह हज़ार के नोट वहीं पर छोड़ गई तो मधुर के कंगन क्यों ले गई?''

''पहने हुए थे राण्ड ने। मधुर ने दिए थे उसे शादी में मुँह दिखाई।'' बेला बहन जी अपना पूरा गुबार उस नयना पर निकाल रही थीं, जिसका अभी तक कोई सुराग भी नहीं मिला था।

हर दिन एक नई कहानी सुनने को मिल रही थी, कोई कहता, एक महीना हो गया शादी को आज तक किसी ने नयना की शक्ल भी नहीं देखी। कोई कहता, ससुराल वालों ने मार दी लड़की। यानि जितने मुँह उतनी बातें। सीबीआई. ने पूरे जोर-शोर से अपना काम शुरू कर दिया था। शहर के बहुत से बा-रसूख लोग धरे जा रहे थे रोज छान-बीन के चक्कर में।

ऐसे माहौल में शहर में एक बार फिर से जैसे भूकम्प आ गया हो, शोर मचा, मधुर के छोटे बेटे को खेल आ गई है। उस पर देवी का प्राकट्य हो गया है। कौतुहल वश सुजाता भी भीड़ में शामिल हो गई अन्यथा उसे इन सब बातों में कोई रुचि नहीं थी।

सुजाता ने देखा, घर में सारा शहर उमड़ा पड़ा था। पैर रखने को जगह नहीं मिल रही थी। बड़ी मुश्किल से कुछ लोगों को धकेलते हुए उसने एक ऐसे कोने में खड़े होने के लिए जगह बना ली जहाँ से मधुर का छोटा बेटा सुमेर बैठा हुआ साफ़ दिखाई दे रहा था।

सुजाता ने देखा, सुमेर पूजा करने की मुद्रा में लग रहा था। पालथी मार कर बैठे सुमेर के माथे पर बड़ा-सा रोली का तिलक लगा था, जिस पर चावल चमक रहे थे। हालांकि सुमेर की आयु मुश्किल से पंद्रह साल की थी, परन्तु इस समय उसके चेहरे पर पूर्ण गम्भीरता का साम्राज्य फैला हुआ था। सामने थाली में थोड़ी पूजा की सामग्री भी रखी हुई थी। भीड़ में एक पुलिस इंस्पेक्टर के साथ दो सिपाही भी खड़े थे। सम्भवतया सोच रहे थे कि क्या कर सकते हैं।

मधुर, गौरी और शील, तीनों ही पुलिस हिरासत में थे, घर में वयस्क के नाम पर केवल एक नौकर हरी था और थी परिवार की एक विवाहित बेटी जो घटना के बाद ही आई थी। वह भी हतप्रभ खड़ी थी। सुमेर थोड़ी-थोड़ी देर बाद सिर को गोल-गोल घुमाता कह रहा था, ''काली! मैं काली हूँ। खुश हूँ। मुझे बलि मिली है, मैं खुश हूँ।.....और बलि चाहिए, और बलि।''

अब पुलिस इंस्पेक्टर सुमेर के पास आकर पूछने लगा, ''बेटा.....मुझे बताओ, क्या हुआ है, किसकी बलि हुई है?'' पर सुमेर जैसे कुछ सुन ही नहीं रहा था। फिर बोलने लगा, ''काली हूँ, काली। आधी बलि मिली है, और लूँगी....और लूँगी.....और बलि.....'' और सिर को पूरे जोर से गोल-गोल घुमाने लगा।

अब एक बुजुर्ग महिला धरती पर माथा टेक कर बोली, ''माता। यदि तू काली माँ है तो हमें बता, घर की नई बहू कहाँ चली गई और तुझे किसकी बलि दी गई है? बकरे की या मुर्गे की?''

''नहीं, मुझे नर बलि दी गई है। नई बहू की। नई बहू....हाँ.....हाँ नई बहू।'' सुमेर का सिर बराबर घूम रहा था, अब उसने सिर को नीचे धरती से लगा दिया था। इंस्पेक्टर ने उसका सिर उठाना चाहा तो वह बिफर गया,

''दूर रहो। वहाँ देखो जाकर, घास के नीचे। वहीं रखी थी मेरी बलि।'' उसने बिना सिर उठाए ही कहा। इंस्पेक्टर ने तुरन्त सिपाहियों को इशारा किया। सिपाही उधर को हो लिए जहाँ घर की गाय के लिए घास रखा जाता था। ऊपर से थोड़ा-सा हरा घास उठाने के बाद नीचे की सूखी घास ऐसे दबी हुई था जैसे कोई वज़नदार चीज़ उस पर रखी गई हो। तभी एक सिपाही चिल्लाया ''साब! साब, पायल।'' यह पायल उसी घास में उलझी हुई थी। उसने पायल लाकर इंस्पेक्टर को दे दी। बड़े गौर से पायल को दखते हुए इंस्पेक्टर नौकर की तरफ घूमा। तो हरि ने आँखें झुकाकर कहा, ''जी साब, ये बहू जी की ही है। ये उन्हें ढीली थी, कई बार निकल जाती थी। एक बार मुझे भी खोजने को कहा था मैंने तभी देखी थी।''

अचानक सब का ध्यान फिर सुमेर की तरफ चला गया जो जोर-जोर से रोने लग गया था

और रोते-रोते जमीन पर ही लेट गया। पर अब तक तो मामला पलट चुका था। पुलिस के संदेह की सूई परिवार की ओर घूम चुकी थी। इंस्पेक्टर ने सुमेर को गोद में उठा लिया तो वह कुछ नहीं बोला। उसे मानसिक चिकित्सा हेतु ले जाया गया। पुलिस की जीप निकली तो भीड़ भी छंटने लगी। घर आकर सुजाता और उलझ गई, क्या हुआ होगा? उसे लग रहा था कि सुमेर नाटक कर रहा है। उसे अवश्य ही बहुत कुछ पता है जो वह कह नहीं पा रहा। शायद इंस्पेक्टर को भी वही लगा हो जो उसे लगा है, इसीलिए वह सुमेर को ले गया है।

उधर हिरासत में गौरी अपने बयान पल-पल बदल रही थी। कभी वह कहती कि वह और नयना दोनों रोज नदी पर घूमने जाती थीं, कभी कहती उसने नयना को उधर जाते देखा तो उसका पीछा किया। शील ने पुलिस को बताया कि दो दिन बाद नयना को बीए के पेपर देने अपने मायके जाना था। अलबत्ता मधुर चुप थी।

बड़े लोग, बड़ी बातें। पर कुछ दिन बाद सब शान्त हो गया। मधुर का परिवार जमानत पर आ गया और मुकदमा चलता रहा।

दो साल गुज़र गए। इस बीच सुजाता ने गाड़ी ले ली थी। पड़ोस के गाँव का ही एक लड़का सुजाता ने ड्राइवर रख लिया थी गाड़ी के लिए, उसका नाम सोनू था। जब उसे कहीं जाना होता तो सोनू को बुला लेती।

एक दिन सोनू ने उसे बताया, ''बीबी जी! मधुर की बेटी गौरी ने फांसी लगा ली है।''

''क्यों...?''

''जैसी करनी, वैसी भरनी। यह तो होना ही था।''

''पर क्यों होना था?'' सुजाता थोड़ा खीज गई।

''बीबी जी! जब बेगानी बेटियों को जहर देकर मारा जाता है तो अपनी बेटियों के बारे में भी सोचना चाहिए कि नहीं? सोनू ने उल्टा सवाल कर दिया।

''पर तू कैसे कह रहा है कि बहू इन्होंने मारी है। कुछ निकला तो है ही नहीं।''

''निकलेगा कैसे, बड़े घरों के मामले ऐसे ही दबते हैं।'' तू तो ऐसे कह रहा है जैसे सब कुछ तेरी आँखों के सामने हुआ हो।'' सुजाता की जिज्ञासा बढ़ती जा रही थी।

''और क्या, सब सामने ही तो था। लाश तो मैं ही फेंक कर आया था।''

''क्या कह रहा है रे?''

''हाँ बीबी जी।'' सोनू रुआंसा हो गया, जब तक मैंने सी.बी.आई वालों को सब कुछ नहीं बता दिया, मेरे मन पर भारी बोझ रहता था, पर अब मैं हल्का महसूस कर रहा हूँ। मुझे हर समय लगता था, कि मैं भी इस हत्या में शामिल हूँ। मैंने तो जो सच था, बता दिया अब उनको सज़ा मिले या न मिले मैं दोषी नहीं हूँ।''

''पर तू इस मामले में कहाँ से कूद गया। तू तो उन दिनों सरकारी गाड़ी चलाता था न?''

''हाँ जी, कच्ची नौकरी थी। जैसे आप बुला लेते हैं, वैसे ही साब भी बुला लेते थे इसीलिए फंस गया। अब मैं आपको ठीक से बता ही देता हूँ सारा मामला, पर चाय भी पियूँगा।'' वह पालथी मारकर वहीं जमीन पर बैठ गया। सुजाता को भी चाय की तलब तो लग ही रही थी, वह चाय बना लाई। चाय का कप सोनू को दिया और सामने ही कुर्सी पर बैठ गई। सोनू ने चाय का कप पकड़ा फिर बड़े मनोयोग से सारी कहानी सुनाने लगा,

''उस दिन मेरे साहब की मेम साब, अपने सेब के बाग से बहुत देर में वापस आई थी इसलिए मुझे भी घर जाने में देर हो गई। घर जाकर खाना खाया और थका हुआ था तो गहरी नींद आ गई। रात आधी गुज़र गई थी कि दरवाजा भड़भड़ाने लगा। घर वाली मेरे उठने से पहले ही उठकर बाहर गई, लौटकर बोली 'साब ने बुलाया है। मैं कुढ़ता हुआ कपड़े फंसाता बाहर निकल गया। कोठी पर पहुँचा तो साब ने कहा, 'इसी समय शिमला जाना है।' अब साब को जवाब कैसे देता चल पड़ा, पर तभी साब ने जीप बाजार में उतारने को कहा। मधुर बीबी जी के घर के पास पहुँचकर उन्होंने गाड़ी रुकवाई और घर में चले गए। रोज का काम था, हम छोटे लोग क्या कह सकते थे। मैंने सोचा शायद ये भी जाती होंगी, पर थोड़ी ही देर बाद शील बाबू और हमारे साहब, एक भारी-सी बोरी को दोनों तरफ से पकड़े बाहर आए और बोरी को जीप के पिछले हिस्से में पटक दिया और हम शिमला की सड़क पर हो लिए।'' वह थोड़ा रुका, जैसे बोलते-बोलते थक गया हो।

''सैंज से पहले ही साहब ने मुझे गाड़ी लूहरी वाली सड़क पर डालने को कहा तो मैंने गाड़ी नीचे वाली सड़क पर उतार दी। पुल के पास पहुँचकर साब ने गाड़ी रोकने को कहा।

गाड़ी रुकने पर साहब नीचे उतरे और बोरी को अकेले घसीटने लगे तो मैंने उनकी मदद करने के लिए बोरी को पीछे से पकड़ा, अब मुझे लगा कि बोरी में कुछ नरम-नरम सी चीज़ है। पर जब तक मैं कुछ सोचता-समझता बोरी सतलुज के पानी में थी। इतना ही नहीं जिस जगह बोरी फेंकी गई थी, वहाँ कुछ ही समय पहले एक जोड़ा मगरमच्छ लाकर छोड़े गए थे। फिर साब ने लॉगबुक भरी और स्टेशन शिमला लिख दिया। तीन दिन बाद जब हम वापस आए तब मामला मेरी समझ में आया। कैसे हैं न ये बड़े लोग, बस एक फ्रिज नहीं आया तो लड़की मार दी। वह भी पैसे तो आ ही गए थे, बहू ने उन्हें बताया नहीं था।''

सुजाता आँखें फाड़े सोनू को देख रही थी कि तभी सोनू फिर बोल उठा, ''बीबी जी, आपको पता ही नहीं, सुमेर को कोई देवी-वेवी नहीं आई थी। उन लोगों ने सुमेर के सामने ही कोई जहरीली चीज बहू जी को जबरदस्ती पिलाई थी। वह चीखता रहा, 'मत मारो भाभी को' पर बड़े भैया ने उन्हें पकड़ा और गौरी ने कटोरी जबरदस्ती उनके मुँह से लगा दी। मधुर बीबी ने उनके बाल खींचे और मुँह खोला। बड़ा तेज जहर था थोड़ी ही देर में मर गई बेचारी। सुमेर ने तो नाटक किया था, ताकि सब पकड़े जाएँ।''

''हूँ...। तो यह सब सुमेर ने बताया होगा पुलिस को।'' सुजाता ने एक ठंडी साँस भरते हुए कहा, ''फिर भी छूट ही गए सब। हाँ भाई! पैसा है तो हर गुनाह माफ।''

''बीबी जी, इस दुनिया में तो छूट गए, पर भगवान के घर से कैसे छूटेंगे। आँख के सामने है।'' कहता हुआ वह उठकर खड़ा हो गया।

पुस्तक समीक्षा केलिए पुस्तक का भेजा जाना अनिवार्य है

सामाजिक हालात का अल्ट्रासाउंड

पुस्तक समीक्षा

समीक्षक : भगवती प्रसाद द्विवेदी

कृति : पहल (कविता-संग्रह):

डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल, प्रकाशक : नमन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, 72, योगेन्द्र विहार, नौबस्ता, कानपुर। प्रथम संस्करण, 2019, पृष्ठ सं. :72, मूल्य : रु.100 (पेपरबैक), रु.200 (सजिल्द)।

गीति चेतना के अत्यंत संवेदनशील कवि डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल की समकालीन कविताओं का ताजा संग्रह 'पहल' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है, जिसमें मुक्त छंद की रचनाओं के साथ चंद गीत-गीतिका भी संग्रहीत हैं। छोटी-बड़ी कुल 39 कविताओं का यह संग्रह सामाजिक विसंगतियों-विद्रूपताओं का आईना प्रतीत होता है। महानगर में एक तरफ भौतिकता की चकाचौंध, वहीं निम्न आयवर्ग के एक ईमानदार इंसान की जिंदगी की कशमकश और जद्दोजहद का अंतहीन सिलसिला। दूसरे शब्दों में, मौजूदा दौर के सामाजिक हालात का अल्ट्रासाउंड है यह काव्य संग्रह।

कवि का स्पष्ट मानना है कि कविता और कुछ नहीं, बस अपने आप के साथ निरंतर चलनेवाली बतकही का नाम है।इसे आलोचक के बजाय लोक से जुड़ने और विश्वसनीयता सिद्ध करने की जरूरत है। 'कौन-सा उपहार दूँ प्रिय' एवं 'फगुआ के पहरा' एक-एक हिन्दी भोजपुरी संग्रह के प्रकाशन के बाद यह संग्रह इस मायने में भी महत्वपूर्ण है कि इसमें समकालीन जीवन का तीखा सच सहजता व गहरी संवेदना के साथ अभिव्यक्त हुआ है। हालाँकि अब तक कवि की प्रतिष्ठा एक गीतकार के रूप में रही है, पर यहाँ उनका कथन है कि उन्हें छंदमुक्त (मुक्त छंद क्यों नहीं) काव्य की सर्जना भी समान रूप से आनंदित करती है। संग्रह की कविताएँ भी इस तथ्य की विश्वसनीयता प्रमाणित करती हैं।

संग्रह की शीर्षक कविता 'पहल' वैसे तो रोमानी भावभूमि को लेकर रची गई है, लेकिन प्रिय के स्वभाव की विवशता है कि वह यों तो प्रिया को अपने तटों की मर्यादा में रहने को कोसता है, किंतु पहले पहल करने की जोखिम नहीं उठा सकता। जीवन पथ पर यही बेबसी, कशमकश और अंतर्द्वंद्व संग्रह की अधिकांश कविताओं में परिलक्षित होती है। समाज, व्यवस्था, राजनीति आदि इसके अनेक कारक तत्व हैं। मगर एक संवेदनशील रचनाकार क्या करे, क्या सब कुछ देखकर भी अराजक स्थितियों की अनदेखी करता रहे? अपने अंतरम की बेचैन छटपटाहट को कवि 'जंगलराज' में कुछ यूँ अभिव्यक्त करता है ---'तो क्या करूँ मैं? / चुप रहूँ? / किससे कहूँ? / बर्दाश्त नहीं होता मुझसे / किसी भी तरह का अनर्थ।' आगे चलकर वह इस ध्रुव सत्य का खुलासा करना नहीं भूलता- 'मारेंगे और रोने भी नहीं देंगे / यह कौन सा कानून है? / कमजोर ही सताए जाते हैं / और ताकतवर ही सताते हैं / उसे ही मान लो / चाहे तो अंतर्राष्ट्रीय कानून !'

तभी तो कवि ने 'बाघ-बकरी' की कथा दोहराई है। मगर आज के परिवेश के सियासी दाँवपेंच के बीच थप्पड़ जड़ती बकरी से मात खाता प्यासा बाघ पेशोपेश में है- कुछ सोचते सोचते बाघ सो गया था / नींद टूटी तो / बकरी उसे थप्पड़ पर थप्पड़ / मारे जा रही थी / झरने का पानी गंदा क्यों कर रहे हो ? / प्यासा बाघ इस बात से परेशान था / कि पास तो जोर से लगी है उसे / पर झरना है कहाँ ?

इस लोकतांत्रिक व्यवस्था में सही गलत और बहुमत का सच उद्घाटित करना भी कवि अपना दायित्व समझता है- 'क्यों है ऐसा / लोग जानते हैं कि गलत है यह / लोग मानते हैं कि गलत है यह / फिर भी

विरोध नहीं गलत का / हिम्मत नहीं कि गलत को गलत कहें / लोग देखते तो जरूर गलत हैं / पर सोचते बहुमत हैं / क्योंकि बहुमत गलत नहीं होता।'

कहीं शासन का स्वाद चखती 'तानाशाही' है तो कहीं सत्ता का 'सुरूर'। ऐसे विषम हालात में 'क्यों इतना ही मिलता है पैसा ?', 'किसे दोष दूँ', 'पापा कहाँ खो जाते हैं', 'पापा कुछ सोच रहे हैं' आदि कविताएँ प्रतिभासंपन्न आम आदमी की व्यवस्था तथा किंकर्तव्यविमूढ़ता का अहसास कराती मर्म को छुए बगैर नहीं रहतीं। 'पापा हदस गए हैं', 'बच्चे चिंतित हैं' शीर्षक रचनाओं में चिंता, दबाव और तनावों में साँसत झेलते नन्हे-मुन्नों का दर्द है।

इन और ऐसी तमाम विसंगतियों-विडंबनाओं के बावजूद 'पहल' का कवि कहीं से भी निराश-हताश नहीं है। अतः वह सर्जना की पहल करते हुए आह्वान करता है- 'सर्जना पतंग की डोर है छोड़ो मत / सर्जना नसीब का आईना है तोड़ो मत / सर्जना नाव की पतवार है सँभाल लो / सर्जना प्यार का मृगछौना है पाल लो।' सिर्फ इतना ही नहीं, कभी विंबों की मार्फ़त सुख की वैविध्यपूर्ण स्थितियों को भी रेखांकित करता है।

कविताओं की भाषा में नदी की कल-कल छल-छल धारा का-सा प्रवाह है, वहीं भोजपुरी अंचल के खाँटी शब्दों, लोकोक्तियों के चटख रंग भी हैं। मगर जीने-मरने की बेबसी के बीच यदि सांकेतिक ढंग से प्रतिकार-प्रतिरोध के स्वर भी मुखरित होते तो इनकी प्रभावोत्पादकता में और भी चार चाँद लग जाते। कुल मिलाकर, समकालीन परिस्थितियों में एक ईमानदार मनुष्य की संघर्षशीलता की पहल कृति 'पहल' को मूल्यवान बनाती है।

(ब्रजेश शर्मा)

पोस्टमास्टर जनरल कृष्ण कुमार यादव का ब्लॉग 'डाकिया डाक लाया' सर्वश्रेष्ठ ब्लॉग में शामिल हुआ

देश-विदेश में हिंदी के व्यापक प्रचार-प्रसार और इंटरनेट के माध्यम से हिंदी साहित्य व लेखन क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बना चुके वाराणसी परिक्षेत्र के पोस्टमास्टर जनरल **श्री कृष्ण कुमार यादव** के ब्लॉग 'डाकिया डाक लाया' को वर्ष 2022 के सर्वश्रेष्ठ ब्लॉग सूची में शामिल किया गया है। 'इंडियन टॉप ब्लॉग्स' नामक सर्वे एजेंसी द्वारा वर्ष 2011 से प्रतिवर्ष दुनिया भर में हिंदी भाषा में उत्कृष्ट और नियमित लेखन करने वाले सर्वश्रेष्ठ ब्लॉग की एक सूची बनाई जाती है। **श्री कृष्ण कुमार यादव** का उक्त ब्लॉग वर्ष 2015 से नियमित रूप से हिंदी के सर्वश्रेष्ठ ब्लॉग की सूची में शामिल हो रहा है। वर्ष 2022 में विश्व भर के कुल 100 हिंदी ब्लॉगों को सर्वश्रेष्ठ ब्लॉग के रूप में चयनित किया गया है। सौ से ज्यादा देशों में देखे-पढ़े जाने वाले 'डाकिया डाक लाया' (http://dakbabu.blogspot.com/) पर अब तक 1350 पोस्ट प्रकाशित हैं, जिसे 7 लाख से ज्यादा लोगों ने पढ़ा है। वर्ष 2008 से ब्लॉगिंग में सक्रिय एवम 'दशक के श्रेष्ठ हिंदी ब्लॉगर दम्पति' और सार्क देशों के सर्वोच्च 'परिकल्पना ब्लॉगिंग सार्क शिखर सम्मान' से सम्मानित श्री कृष्ण कुमार यादव हिंदी ब्लॉगिंग और सोशल मीडिया के क्षेत्र में अग्रणी नाम हैं। 'डाकिया डाक लाया' ब्लॉग अपनी विभिन्न पोस्ट के माध्यम से डाक सेवाओं की व्यापकता, विविधता और आधुनिक दौर में उनमें हो रहे तमाम बदलावों को रेखांकित करता है। इसके माध्यम से डाक सेवाओं से सम्बंधित तमाम छुए-अनछुए पहलुओं को सामने लाने का प्रयास भी किया गया है। भारतीय डाक सेवा के 2001 बैच के वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी होने के साथ-साथ साहित्य और लेखन में भी सक्रिय पोस्टमास्टर जनरल **श्री कृष्ण कुमार यादव** की अब तक 7 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं- 'अभिलाषा' (काव्य-संग्रह), 'अभिव्यक्तियों के बहाने' व 'अनुभूतियाँ और विमर्श' (निबंध-संग्रह), इण्डिया पोस्ट : 150 ग्लोरियस इयर्ज़, 'क्रांति-यज्ञ : 1857-1947 की गाथा', 'जंगल में क्रिकेट' (बाल-गीत संग्रह) और '16 आने 16 लोग' (निबंध-संग्रह)। विभागीय दायित्वों और हिन्दी के प्रचार-प्रसार के क्रम में अब तक आप लंदन, फ्रांस, जर्मनी, नीदरलैंड, दक्षिण कोरिया, भूटान, श्रीलंका, नेपाल जैसे देशों की यात्रा कर चुके हैं। 'शब्द सृजन की ओर' और 'डाकिया डाक लाया' आपके चर्चित ब्लॉग हैं। नेपाल, भूटान और श्रीलंका सहित तमाम देशों में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय ब्लॉगर सम्मेलन में आप सम्मानित हो चुके हैं। देश के विभिन्न भागों- सूरत (गुजरात), कानपुर, अंडमान-निकोबार द्वीप समूह, प्रयागराज, जोधपुर, लखनऊ में विभिन्न प्रशासनिक पदों पर कार्य करने के उपरांत सम्प्रति वाराणसी परिक्षेत्र के पोस्टमास्टर जनरल पद पर कार्यरत हैं।

कहानी

''गिद्ध राज की जै''

रामानुज अनुज

मेरा कथन :

मैं उन कहानियों को कहानी की जमात में खड़ा नही कर सकता जो औरतों के शरीर का फीता लेकर नाप जोख करती है, या उनके पैरहन का बारहा जिक्र करती हुई आगे बढ़ती है, मैं उन्हें भी कहानी नही मानता जो खून खराबा, अश्लीलता या महज मनोरंजन के लिहाज से कही जाती हैं ऐसी कहानी तो रोज अखबार में भी मिल जायेंगी।

कहानी तो बेशक वो होती है, जो मुँह से निकलकर कान के रास्ते सीधे दिल को स्पर्स करती हुई दिमाग के सोये तारो में झनकार पैदा कर जाती है। जी हाँ !! ये कहानियां न तो कागज कलम की मोहताज है, न किताबी शक्ल देने के लिये किसी प्रकाशक की....ये स्वयं प्रकाशित होती हैं। ऐसी कहानियों के कहानीकार को अक्षर ज्ञान तक नही होता है...लेकिन शब्दों का अकूत भंडार उसकी जीभ से नदी के गतिमान जल की तरह प्रवाहमय रहता है...सुनने वाला इस कथा रस में ऐसे

डूब जाता है कि कहानी के साथ स्वयं को जुड़ा हुआ महसूस करता है..साथ चलती है सिर्फ एक जिज्ञासा "आगे क्या हुआ'....फिर क्या हुआ ?? ये उत्सुकता कथा के अंत तक मन से जुड़कर चलती है। मजाल है कि...सुनने वाला सुस्सू के बहाने उठ जाए...या नींद की झपकी मार दे.....ये कहानियां कपोल कल्पित होती है, लेकिन यथार्थ को पकड़ कर चलने वाली होती हैं...ऐसी ही एक कहानी लेकर हाज़िर हुआ हूं...जिसे बचपन मे सुना था....लेकिन आज भी यह कहानी उतनी ही प्रासंगिक है, जितनी पहले थी।

अगहन का महीना, जोर की ठण्ड गांव के बाहर आम के बगीचे के खाली स्थान में कोदौ, और ज्वार का खलिहान...शाम के बाद का वक्त, लेकिन ठीक-ठीक समय बताना सम्भव नही है.....समय बताने वाली घड़ी गांव भर में सिर्फ हेडमास्टर साहब के घर मे थी, वह भी पिछले

साल तक समय बताती रही....लेकिन उसके बताये समय को जब किसी ने तरजीह नहीं दी तो उसने भी समय बताना छोड़कर बच्चों के साथ सिर्फ एक कांटे के सहारे खेलना शुरू कर दिया है।

किसानों ने अपने-अपने कोदौ के पैरहट में मैला कुचैला, फटा पुराना चादर डाल कर बिछावन डाल रखा था, ओढ़ने के लिये घर की सबसे पुरानी रजाई और ओढ़ने वाले भी उम्र दराज़ लोग। आम की छाया में लकड़ी का जलता हुआ ठूँठ और उसे घेर कर बैठे हुये धान के पैरे पर आलथी-मालती मारे कहानी के रसिक श्रोता...कहानी कहने वाले भी विशेष व्यक्ति होते थे, सबके पास कहानी कहने का हुनर नहीं था।

थानेदार (कहानी कहने वाले व्यक्ति का नाम) के आते ही सब लोग खुश हुये ...जलती हुई लकड़ी के चैले से निकली हुई लौ को फूंक-फूंक कर तेज कर दिया गया है, जिसके सबके चेहरे के भाव क्षणिक गोचर होने के साथ पहचान में भी आये कि कौन- कौन बैठक में हाज़िर हैं।

"अरे थानेदार को जगह दो ना।"

"ये ले...सरजू अपनी जगह से दायीं ओर को खिसक गया।

"भई सुरंजन !! तनक तमाखू घिसो न..मेरी तो थैलिया आजु ओसारे ही छूट गई।" पैरे के मोढ़े पर थानेदार आसन जमाता हुआ बोला।

"कक्कू !! आज कोई नई तरह की कहानी सुनाने वाले थे न...तो जल्दी करो, हम लोग बेरा हुए से इंतज़ार में है।"

"ठीक है, ठीक है.....जरा हाथ-पाँव तो सेंक लेने दे।"

"अरे थानेदार !! कहना तो मुँह से है..कहते चलो और हाथ-पाँव भी सेंकते रहना।"

पिच्च.....तम्बाकू की लंबी पीक छोड़ता हुआ सेवक बोला।

अरे यार !! सब्र करना सीखो...भूख लगने पर पेट को कुलबुलाने दो, फिर खाने की तरफ हाथ बढ़ाओ...रोटी का स्वाद और महत्व दोनो बढ़ जाता है..अब इत्ती देर तक सबर किया है तो थोड़ा और सही...थानेदार के मुंह मे तमाखू तो जाने दो।" चूने के साथ मली हुई एक चुटकी तमाखू थानेदार की हथेली में रखता हुआ सुरंजन बोला।

लो सुनो...बेकार की बहस मत चलाओ....

" ये उस समय की बात है जब देश रियासत, सूबे और इलाकों में बंटा था...रियासत के मुखिया राजा होते थे, इलाके और सूबे रियासत के अधीनस्थ होते थे।एक बार देश मे लगातार तीन साल तक पानी नही बरषा, तालाब, नदी, कुयें सब सूख गये, पानी की एक बूंद का भी दूर-दूर तक दर्शन नहीं...घनघोर अकाल पड़ा....राजा स्वयम बहुत चिंतित थे...क्या किया जाये... कि पानी बरसे....रियाया को प्यासा मरने से बचाया जाये... इसी मन्त्रणा के लिये राज दरबार ने मीटिंग बुलाई...दो दिनों तक मसले पर बहस चली लेकिन कोई कारगर हल सामने नही आया...तब राजा क्रोधित होकर बोले....

"आप लोग किस दिन के लिये है...आज सारा मुल्क पानी के संकट से जूझ रहा है, और आप लोग किस बात की पगार लेते है...इलाकेदार साहबान, महामंत्री जी, सेनाप्रमुख, राजबैद्य जी, राजपुरोहित जी, राजज्योतिसी जी, कुछ तो उपाय सुझाओ वरना सब की मौत बिना पानी होना तय है।"

"बिल्कुल नये टाइप की कहानी कह रहे हो कक्कू।"

"चुप कर यार...आगे तो बोलने थे अभी से टिडिंगी मत मार...हां थानेदार !! बोलते रहो.. अब कोई नही बोलेगा।" सुलगते हुये चैले में फूंक मारता हुआ माधव बोला।

तब राजज्योतिषी जी ज्योतिष के फ़टे पन्ने सम्हालते हुये खड़े होकर बोले..."महाराज पानी क्यो नहीं बरस रहा है, इसका कारण बताने वाला पन्ना चूहे खा गये हैं...निदान वाला हाथ मे है...इसमें लिखे अनुसार स्वयं महाराज के साथ महारानी साहिबा और राज के प्रमुख लोग, यथा इलाकेदार साहबान, सूबेदार साहबान भगवान बोले नाथ का नित्य जल अभिषेक करें, तो वे प्रसन्न होकर इंद्रदेव को धरती पर पानी बरसाने का हुक्म दे सकते है।"

"थोड़ा सी बात और यदि जल अभिषेक के साथ जोड़ दिया जाये, तो भगवान शिव जल्दी खुश हो सकते है।" शोक की मुद्रा में बैठे हुए राजपुरोहित जी गर्दन उठाकर बोले।

"शीघ्र बताया जाये।" राजा ने आदेशित किया।

महाराज !! रियायत का हर आदमी अपने-अपने घर मे यथा-योग्य जलाभिषेक करे...तेल, खटाई, मिर्च का त्याग कर दे, दाढ़ी और सर के बाल काटना छांटना बन्द कर, भूमि शयन करे।"

"अत्युत्तम..अत्युत्तम...सेनापति जी ऐलान करवा दीजिये...गांव-गांव, टोला-टोला....सब

को राजिक्षा से अवगत करा दें, कल सुबह से यह उपाय अमल में लाया जायेगा।" राजा साहब ने हुक्म जारी कर दिया...तभी एक सभासद शंकित मन से डरता हुआ बोलने के लिये खड़ा हुआ।

"अब क्या है ?? हुक्म जारी हो गया है....अब बोलना हुकम उदूली मानी जायेगी...महा मंत्री गुर्राये...."इन्हें भी बोलने दो न" राजा का आश्वासन पाकर सभासद बोला...

" महाराज !! क्षमा हो...आज कुछ घरों को मुश्किल से एक बाल्टी पानी मिलता है, ऐसे में यदि वे भगवान शिव को पानी चढ़ा देगें, तो क्या पियेंगे, पानी की किल्लत हो जायेगी...हुज़ूर।"

"ठीक है, महामंत्री जी !! ऐसे घरों को चिन्हित कर जलाभिषेक से छूट प्रदान कराई जाये...लेकिन अन्य उपायों को अमल में लाना अनिवार्य होगा। राजा साहब बैठक बर्खास्त करते हुये बोले।

"बड़ी धांसू कहानी है थानेदार....फिर क्या हुआ ??" पानी भरे लोटे को नजदीक सरकाता हुआ कौशल बोला।

"चारों तरफ पानी का हाहाकार तो मचा ही था, सेर.सवा सेर पानी जल अभिषेक में भी खर्च होने लगा।..जद्दपि रसद की कोई कमी नही पड़ीं... इलकेदारों ने कोरे कागज में अंगूठा लगवाकर सबको किनकी, कुटकी, जौ बाजरा इफरात में दिया था.... पानी की किल्लत से इतर एक और नयी समस्या आ गयी थी।"

"क्या ?? कौन सी समस्या, सभी एक स्वर में बोल पड़े।"

दाढ़ी और सर के बाल बढ़ जाने से सब एक जैसे दिखने लगे थे...घर की औरतें डरी हुईं थी कि दाढ़ी खुजलाता हुआ कोई दूसरा न घर मे घुस आये... इसलिये यह नियम बनाया गया कि द्वार से वह आदमी अपना और अपने बाप का नाम लेकर आवाज़ देगा, तभी द्वार खोलना है।"

"जैसे मुझे पवन के साथ रामजतन कहना पड़ता...तब भीतर जाने को मिलता।"

"हां....जरूरी था।

हर तरफ लोग जटा-जूट बढ़ाये पानी खोज रहे थे, नदियों में गड्ढे बनाये जा रहे थे, सूखे हुए कूपों को गहरा करने की कोशिश चल रही थी, तभी हमारे गाँव मे अजूबा घट गया। हर कुयें को आजमाने के बाद गांव वाले बाड़े वाले कुआं को गहराने उतरे थे, पाँच दिन की

मसक्कत के बाद पानी का वो उलेला चला कि गहरा करने उतरे लोग जान बचाकर भागे।"

वाह वाह...गजब, जय हो कुआँ देव की। लेकिन गांव वालों को पानी पीने को नसीब नही हुआ।"

"ऐसा क्यों ??"

कुयें में अचानक पानी आने की खबर जंगल मे आग की तरह चारों तरफ फैल गई।

फिर ??

फिर क्या...वही हुआ जो सदियों से होता आया है, आज भी हो रहा है, और आगे कल भी होगा...ये मसल तो सबने सुनी होगी...".दूध पिएं गाज़ी मियां गाय दुहें मुनीम जी।" कुयें में पानी आने की खबर इलाकेदार घूमन सिंह तक पहुँच गई थी..वे तत्काल दो घोड़ो से जुती बग्घी में चढ़कर गांव पहुँच गये..वे बीच गांव में खड़े होकर ऐलान किये...

"खबरदार, होशियार !! कोई भी गांव का आदमी उस कुयें का पानी पीने के काम मे इस्तेमाल नहीँ करेगा...अभी पानी चेक किया किया जायेगा, तभी कुछ कहा जा सकता है। पूरा गांव कुयें के पास इकट्ठा हो गया था, दूसरे गांव से भी लोग आ रहे थे, जिन्हें जैसी खबर मिलती सब कुयें की ओर भागे चले आ रहे थे। खासा मेला जैसा वातावरण बन गया था, सबकी नजरें इलाकेदार तरफ थी कि साहब हुजूर पानी की जांच किस तरह करते है....एक बकरी वही घूम रही थी...लोगो ने बताया कि यह बकरी तुफैल मोहम्मद की है...इलाकेदार ने उस बकरी को सबसे पहले पानी पिलाने को कहा...बाल्टी में पानी देखते ही बकरी पानी पर टूट पड़ी...देखते ही देखते पूरा बाल्टी भर पानी गटक गई, फिर कान खड़ा किया, शरीर को झटका दिया जैसे जम्हाई ले रही हो और लम्बी छलांग मारकर मैदान तरफ दौड़ गई।

"देखा तुम लोगो ने बकरी पागल हो गई है, अब यदि दौड़-दौड़कर मर जायेगी...इसलिये यह पानी इंसानी उपयोग लायक नहीं है, इंसान की जान बकरी के बराबर ही होती है।"

इसके बाद बग्घी में जुते घोड़ो को पानी दिया गया, वे गटागट एक सांस में तीन चार बाल्टी पानी झोंक गये..फिर हिनहिनाये, कान डोलाये और जोर से पीछे की तरफ पैर झटके...यह देख इलाकेदार साहब हँसकर बोले....

".ये पानी घोड़ो के पीने योग्य है, देखो कितनी खुशी जाहिर कर रहे हैं... ये बेचारे हिनहिनाना भूल गये थे। आज से इस कुयें पर पहरा रहेगा, ताकि कोई आदमी इस कुयें का पानी न पी

सके, अन्यथा पागल होकर बकरी की तरह दौड़ता रह जायेगा।"
"आगे क्या हुआ थानेदार ??" बेउहर नाम के एक ग्रामीण ने उत्सुकता जाहिर की।
"हुआ वही जो इलाकेदार ने चाहा... तांगा इक्का लेकर घोड़े आते थे, पानी पीते थे और ड्रम में भरकर ले जाते थे। गांव वाले तो बेचारे उस तरफ से निकलना छोड़ दिये थे। उनकी किस्मत में तो पोखर गटर का गंदला पानी था, उसी को छानकर प्यास बुझा रहे थे...आदमी बीमार होकर मर रहे थे....घोड़े तंदुरुस्त होकर जी रहे थे।" थानेदार दीर्घ अपानवायु छोड़ता हुआ बोला।
"ओह !! गलत बात...गलत बात..इलाकेदार ने गांव की जनता के साथ सरासर धोखा किया था..लेकिन ताज्ज़ुब की बात यह रही कि किसी ने उसके खिलाफ आवाज़ नही उठाई।"
"हां बेउहर !! इतनी हिम्मत किसी मे नही थी कि हुकूमत के खिलाफ आवाज बुलंद करे..गरीब और लाचार आदमी चलती फिरती लाश के मानिंद होता है, उसकी साँसे तक और कि मेहरबानी से चलती हैं।
"ये गांव की जनता के साथ अन्याय हुआ न दउआ !!" अँधेरे की तरफ मुक्का तानकर अतरसिंग बोला।
"आगे भी कहानी है कि सथरी में घुस जाएं... कल तड़के छोटी के ससुराल भी जाना है"..खुले मुँह में चुटकी देता हुए कौशल बोला।
"सुनो थोड़ी सी अभी बची है...मन लगाकर सुनो..किस्से का प्राणतत्व यहीं पर है...कुयें के बाजू में एक नीम का विशाल पेड़ था..उस पेड़ पर एक रात गिद्ध के सरदार ने अपनी पत्नी और साथी गिद्धों के साथ पेड़ में बसेरा लिया। कुयें से पानी रात-दिन ढोया जा रहा था, चतुर गिद्ध को माजरा समझ मे आ गया, उसे यह नाइंसाफी बहुत खली....उसने अपनी पत्नी से कहा...देख रही हो.."हम गिद्ध लोग जिंदा या मुर्दा किसी भी हालत में अपनी विरादरी के लोगों का न तो खून चूसते है, न मांस खाते है लेकिन यह मक्कार इलाकेदार जीवित अवस्था मे ही अपनी जात के लोगो को खा रहा है...धिक्कार है इसे।" मक्कार इलाकेदार को मज़ा चखाने की गरज से उसने अपने साथियों से कहा....अभी सब लोग विश्राम करो, लेकिन सुबह के साथ ही अलग -अलग पेड़ो से मोर्चा सम्हाल लेना, जैसे ही पानी ले जाता हुआ तांगा-इक्का दिखे फुर्ती से जाकर गाड़ीवान और घोड़े को चोंच मारकर छिप लेना है।"
प्रातः काल से गिद्धों ने इलाकेदार के खिलाफ जंग छेड़ दिया...चोंच के प्रहार से इक्का-तांगा हांकने वाले घायल होकर भाग रहे थे, वही बिदके हुए घोड़े भी हिनहिनाकर गाड़ी से पानी का ड्रम उलट-पलट रहे थे....हर तरफ अफरा-तफरी, चीख-पुकार, भागम-भागम का माहौल निर्मित हो गया।गांव के लोग डर के मारे घर के भीतर कैद हो गये। इलाकेदार ने कुयें से पानी निकासी बन्द करा दी..लेकिन यह खबर धीरे- धीरे राजा तक पहुँच गई, सुनते ही राजा बहुत नाराज हुआ उसने एक सिपाही भेजकर तत्काल इलाकेदार घूमन सिंह को राज दरबार मे हाज़िर होने का हुक्म दे दिया।
"क्यो जी घूमन सिंह !! कुयें वाली बात सही है ??" राजा ने उसे देखते ही कड़कते हुये पूछा।
"जी सरकार।,"
"और गिद्धों के हमले की खबर।,"
"ये भी सही है सरकार।"
"तुमने इतनी बड़ी बात छुपाकर राज्य और राजा के साथ गद्दारी की है, लिहाजा तुम्हे इलाकेदार के ओहदे से मुअत्तिल किया जाता है, और सात महीने की कैद की सज़ा भी तज़बीज़ की जाती है....हुक्म का कड़ाई से पालन हो...घूमन सिंह को कैद खाने में पहुचाया जाये।
इलाकेदार को कैद खाने की तरफ सिपाही ले गये थे....गुस्से के मारे राजा साहब की आंखे महावर हो गईं थीं...कान फड़फड़ा रहे थे, तलवार कट मूछें ऊपर-नीचे हो रही थीं... किसी दरबारी में हिम्मत नही थी कि राजा को समझाइस देकर शांत करा दे। तभी वह महामंत्री से मुखातिब होकर बोला.....
"महामंत्री जी।"
"जी सरकार।"
ये गिद्ध कोई मामूली नही लगते..मेरा अनुमान कहता है, ये सब उसी गांव के बाशिंदे है, जो प्यासे होकर या गन्दा पानी पीकर मरे है..ये अब प्रेत योनि में है..कल को इनका गुस्सा राजधानी तक आ जायेगा..समूचे राज्य में नई विपदा आ सकती है...कोई उपाय तज़बीज़ किया जाए।"
"इन गिद्धों को तोप से उड़ा दिया जाये सरकार।" सेनापति दबी जुबान से नज़र नीची किये हुये बोले।
"सेनापति !! तुम सठिया गये मालुम पड़ते हो...उचित है अब रिटायरमेंट ले लो। अरे वो प्रेत है...उनसे कैसी लड़ाई, वे तोप का मुँह चलाने वाले की ओर फेरने की कूबत रखते हैं।"
मेरी राय है हुज़ूर !! राजपुरोहित हलक तक आई जान को भीतर धकेलते हुए बोले....."गांव वालों की मदद से उस कुयें को बन्द करा दिया जाये, फिर उस जगह में हनुमान

जी का मंदिर बनाकर बजरंगवली की प्रतिमा विराजी जाय, भजन कीर्तन के साथ गांव वालों को और गिद्धों को भरपेट भोजन-पानी कराया जाये... इससे उनका क्रोध शांत हो जायेगा, कुछ कसर भी रह जायेगी तो फिक्र नही है....मेरा यकीन है बजरंगवली सब सम्हाल लेगें...हनुमान चालीसा में साफ लिखा हुआ है...

." भूत पिशाच निकट नहिं आबै।
महावीर जब नाम सुनाबै।।"

"बहुत सही, राजपुरोहित जी !! आपकी राय काबिले गौर है, लेकिन खर्च बड़ा है, इस समय राज कोष में अतिरिक्त जमा नही है...अभी तो पूरी पूंजी पानी के इंतजाम में जा रही है...ये सब कैसे होगा।"

"एक उपाय है हुजूर !! इलाकेदार घूमन सिंह की सज़ा में तब्दीली की जाय, उसे छोड़ दिया जाए और उसे कुयें को बन्द कराने, मंदिर बनवाने और भंडारे तक का सारा खर्च उठाने की सज़ा दी जाये। कैद में पड़ा-पड़ा वह इधर का ही खायेगा।"

"महामंत्री आपकी अकल का कोई जबाब नही...इसे कहते हैं एक तीर से दो शिकार...वाह.वाह।" राजा मुस्कुरा उठे, गुस्सा चली गई, कान फड़फड़ाने बन्द हो गये... मूछें स्थिर हो गईं।

"वाह वाह थानेदार !! क्या किस्सा सुनाया आज ...मां कसम मजा आ गया, एक साथ कई लोग बोल पड़े।".

फिर क्या हुआ ??

"घूमन सिंह को राज कैद से रिहा कर दिया गया, उसने कुआँ बन्द कराया, मंदिर बनवाया, बजरंगवली की मूर्ति स्थापित कराई , जबरदस्त भंडारा किया, दूर-दराज से ग्रामीण आकर भरपेट भोजन प्रसाद पाये, छककर पानी पिये, गिद्दों को भी वही भोजन कराया गया जो सब के लिये बना था। इसके कुछ दिन बाद भी पुराने लोगो के बताये अनुसार इंद्र देव भी खुश हुये बादलों को धरती में पानी देने का हुक्म जारी कर दिये, और झूम-झूमकर कारे-कारे बदरा, गरज-लपक कर रात भर बरसात किये। तीन साल से प्यासी धरती की प्यास बुझ गई, नदी-नालों में यौवन आ गया, दादुर-झीगुर बसेरों से बाहर आकर मंगल गीत गाने लगे।

कथा समाप्त हुई, सब लोग प्रेम से नीचे तक जोर लगाकर मेरे साथ तीन बार बोलो.... "गिद्ध राज की जय...गिद्ध राज की जय...।"

विचार

कृष्ण मनु

मैंने पिछले दिनों प्रीतीश नंदी जी का लेख पढ़ा था। मुझे लगा, मैं सोते से जाग गया। अंश प्रस्तुत है:- "विचारक, संगीतकार, दार्शनिक, लेखक, कलाकार, अध्यापक, कवि और चिकित्सक जैसे हमारे परंपरागत हीरो हाशिये पर चले गए हैं। केवल कामयाबी,किसी भी कीमत पर कामयाबी ही हमें परिभाषित कराती है, जैसे बुराई के साथ हमारा चिरस्थायी रोमांस। कोई आश्चर्य नहीं कि हाल में चुने गए हर तीसरे सांसद का आपराधिक रिकार्ड है और 70 फीसदी मतदाताओं को इसकी कोई परवाह नहीं"

###

जरा सोचिये, पहले हमारा 'हीरो' समाज का वह व्यक्ति होता था जो सचरित्र, समाजसेवी, परोपकारी होता था। जिनके क्रियाकलापों में 'सादा जीवन उच्च विचार' झलकता था। लेकिन आज.......आज हीरो का स्थान 'विलेन' ने ले लिया है। हम समाज के ऐसे व्यक्ति को सम्मान देने लगे हैं जो दुश्चरित्र, दगाबाज, दबंग, निर्दयी और समाज को क्षति पहुँचाने वाला है। जो असंवैधानिक तरीके से धन अर्जित कर हमारा निरंतर शोषण करता है।

हम उसे सम्मानित करते हैं, झुककर अविवादन करते हैं, उनके द्वारा दिए गए भोजों में शामिल होना फ़क्र की बात समझते हैं। यहाँ तक कि जुलूसों में उनका जयजयकार करते नहीं थकते हैं। उन्हें चुन कर विभिन्न पदों पर बिठाकर उनका कदम बोशी करते हैं।

यह 'विलेन' हमारा 'हीरो' कब बन गया??????

जरा सोचिये !!!

लघुकथा

हमारी कोई जाति नहीं

कृष्ण मनु

मुख्य सड़क से पगडंडी पकड़ कर गांव आने में आधा-पौन घंटा तो लग ही जाता है जिसे आराम से टहलते हुए पूरा कर लिया जाता था। लेकिन आज रास्ता कटते नहीं कट रहा था। अप्रैल महीने में ही सूर्य कुपित हो धूप गर्मी दोनों हाथों से उलीच रहा था। धरती भी आत्मसात करने के बदले आग की लपटें निकाल रही थी। मैं जवान से बूढ़ा हो गया लेकिन आज भी पगडंडी के किनारे एक पेड़ क्या, झाड़ी तक नहीं कि पथिक थोड़ी देर त्राण पा सके। मुख्य सड़क और गांव के मध्य मात्र एक पीपल का पेड़ है जिसकी छाया में सुकून मिलता है। मैं लपकते हुए पीपल की छाँह तले आकर गमछे से मुँह का पसीना पोछने लगा। मेरी नजर पीपल की बूढ़ी डालियों पर टिकी थीं जो अब ठूंठ हो चली थीं।

मैंने सामने देखा, चिलचिलाती धूप और उमस के बीच दो तीन मजदूर एक अर्द्ध निर्मित मकान में काम कर रहे थे। राजमिस्त्री को दीवार से नीचे उतरते ही एक मजदूर पेड़ की छाँह तले आकर बैठ गया।

-"सामने किसका मकान बन रहा है?"

-"अब्दुल बाबू का।"

"मैंने देखा, तुम बड़ी लगन से काम कर रहे थे।" अचानक मैंने उसका नाम पूछ लिया-" क्या नाम है तुम्हारा?"

-"लियाक़त।"

तभी मेरे मुँह से अनायास निकल गया-"ओह, तभी....तो..।" झट लियाक़त मेरी बात काटकर बोलने लगा-" बाबू, ऐसा वैसा मत सोचो कि मैं मुसलमान हूँ इसलिए एक मुसलमान के मकान में लगन से काम कर रहा हूँ।"

मेरी बात उसे बुरी लगी थी शायद इसलिए बिना मेरी ओर देखे बोल रहा था-" हम मजदूरों की कोई जाति नही होती बाबू और न धर्म होता है। खटना हमारा धर्म है। जो हमसे काम करवाकर मजदूरी देता है वह मेरा मालिक है, भगवान है, अल्लाह है।"

विश्व डाक दिवस (9 अक्टूबर) पर विशेष

सभ्यता, संस्कृति एवं विरासत का प्रतिबिम्ब हैं डाक टिकट

कृष्ण कुमार यादव
(पोस्ट मास्टर जनरल, वाराणसी)

डाक-टिकटों का व्यवस्थित संग्रह अर्थात 'फिलेटली' मानव के लोकप्रिय शौकों में से एक है। 'शौकों का राजा' और 'राजाओं का शौक' कहे जाने वाली इस विधा ने आज मान्य जनजीवन में भी उतनी ही लोकप्रियता प्राप्त कर ली है। सामान्यतः डाक टिकटों का संग्रह ही फिलेटली माना जाता है पर बदलते वक्त के साथ फिलेटली डाक टिकटों, प्रथम दिवस आवरण, विशेष आवरण, पोस्ट मार्क, डाक स्टेशनरी एवं डाक सेवाओं से सम्बन्धित हित्य का व्यवस्थित संग्रह एवं अध्ययन बन गया है। रंग-बिरंगे डाक टिकटों में निहित सौन्दर्य जहाँ इसका कलात्मक पक्ष है, वहीं इसका वस्थित अध्ययन इसके वैज्ञानिक पक्ष को प्रदर्शित करता है।

''फिलेटली'' शब्द की उत्पत्ति ग्रीक भाषा के शब्द 'फिलोस' व 'एटलिया' से हुई। सन् 1864 में 24 वर्षीय फ्रांसीसी व्यक्ति जार्ज हॉर्पिन ने ''फिलेटली'' शब्द का इजाद किया। इससे पूर्व इस विधा को ''टिम्बरोलॉजी'' नाम से जाना जाता था। फ्रेंच भाषा में टिम्बर का अर्थ टिकट होता है। एडवर्ड लुइन्स पेम्बर्टन को 'साइन्टिफिक फिलेटली' का जनक माना जाता है। सामान्यतः डाक टिकट एक छोटा सा कागज का टुकड़ा दिखता है, पर इसका महत्व और कीमत दोनों ही इससे काफी ज्यादा है। डाक टिकट वास्तव में एक नन्हा राजदूत है, जो विभिन्न देशों का भ्रमण करता है एवम् उन्हें अपनी सभ्यता, संस्कृति और विरासत से अवगत कराता है। यह किसी

भी राष्ट्र के लोगों, उनकी आस्था व दर्शन, ऐतिहासिकता, संस्कृति, विरासत एवं उनकी आकांक्षाओं व आशाओं का प्रतीक है। यह मन को मोह लेने वाली जीवन शक्ति से भरपूर है। फिलेटली अर्थात डाक-टिकटों के संग्रह की भी एक रोचक कहानी है। उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में यूरोप में एक अंग्रेज महिला को अपने श्रृंगार-कक्ष की दीवारों को डाक टिकटों से सजाने की सूझी और इस हेतु उसने सोलह हजार डाक-टिकट परिचितों से एकत्र किए और शेष हेतु सन् 1841 में 'टाइम्स ऑफ लंदन' समाचार पत्र में विज्ञापन देकर पाठकों से इस्तेमाल किए जा चुके डाक टिकटों को भेजने की प्रार्थना की। तब से डाक-टिकटों का संग्रह एक शौक के रूप में परवान चढ़ता गया। दुनिया में डाक टिकटों का प्रथम एलबम 1862 में फ्रांस में जारी किया गया। विश्व में डाक-टिकटों का सबसे बड़ा संग्रह ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ द्वितीय के पास रहा है।

भारत में भी करीब पचास लाख लोग व्यवस्थित रूप से डाक-टिकटों का संग्रह करते हैं। भारत में डाक टिकट संग्रह को बढ़ावा देने के लिए प्रथम बार सन् 1954 में प्रथम अंतर्राष्ट्रीय डाक टिकट प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। उसके पश्चात से अनेक राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय और क्षेत्रीय प्रदर्शनियों का आयोजन होता रहा है। वस्तुतः इन प्रदर्शनियों के द्वारा जहाँ अनेकों समृद्ध संस्कृतियों वाले भारत राष्ट्र की गौरवशाली परम्परा को डाक टिकटों के द्वारा चित्रित करके विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक सन्देशों को प्रसारित किया जाता है, वहीं दूसरी तरफ यह विभिन्न राष्ट्रों के मध्य सद्भावना एवम् मित्रता में उत्साहजनक वृद्धि का परिचायक है। इसी परम्परा में भारतीय डाक विभाग द्वारा 1968 में डाक भवन नई दिल्ली में 'राष्ट्रीय फिलेटली संग्रहालय' की स्थापना की गई और 1969 में मुम्बई में प्रथम फिलेटलिक ब्यूरो की स्थापना की गई। डाक टिकटों के अलावा मिनिएचर शीट, सोवीनियर शीट, स्टैम्प शीटलैट, स्टैम्प बुकलैट, कलैक्टर्स पैक व थीमेटिक पैक के माध्यम से भी डाक टिकट संग्रह को रोचक बनाने का प्रयास किया गया है।

सामान्यतः लोग डाक विभाग द्वारा जारी नियत डाक टिकटों के बारे में ही जानते हैं। ये डाक टिकट विशेष रूप से दिन-प्रतिदिन की डाक-आवश्यकताओं के लिए जारी किए जाते हैं और असीमित अवधि के लिए विक्रय हेतु रखे जाते है। पर इसके अलावा डाक विभाग किसी घटना, संस्थान, विषय-वस्तु, वनस्पति व जीव-जन्तु तथा विभूतियों के स्मरण में भी डाक टिकट भी जारी करता है, जिन्हें स्मारक/विशेष डाक टिकट कहा जाता है। सामान्यतया ये सीमित संख्या मे मुद्रित किये जाते हैं और फिलेटलिक ब्यूरो/काउन्टर/प्राधिकृत डाकघरों से सीमित अवधि के लिये ही बेचे जाते हैं। नियत डाक टिकटों के विपरीत ये केवल एक बार मुद्रित किये जाते हैं ताकि पूरे विश्व में चल रही प्रथा के अनुसार संग्रहणीय वस्तु के तौर पर इनका मूल्य सुनिश्चित हो सके। परन्तु ये वर्तमान डाक टिकटों का अतिक्रमण नहीं करते और सामान्यतया इन्हें डाक टिकट संग्राहकों द्वारा अपने अपने संग्रह के लिए खरीदा जाता है।

इन स्मारक/विशेष डाक टिकटों के साथ एक 'सूचना विवरणिका'' एवं ''प्रथम दिवस आवरण'' के रूप में एक चित्रात्मक लिफाफा भी जारी किया जाता है। इसके अलावा डाक विभाग विशेष प्रकार की 'सोवयूनीर-शीटस' भी जारी करता है, जिसमें एक ही सीरीज के या बहुधा विभिन्न डिजाइन के डाक टिकटों का संग्रह होता है। डाक टिकट संग्राहक प्रथम दिवस आवरण पर लगे डाक टिकट को उसी दिन एक विशेष मुहर से विरूपित करवाते हैं। इस मुहर पर टिकट के जारी होने की तारीख और स्थान अंकित होता है।

जहाँ नियमित डाक टिकटों की छपाई बार-बार होती है, वहीं स्मारक डाक टिकट सिर्फ एक बार छपते हैं। यही कारण है कि वक्त बीतने के साथ अपनी दुर्लभता के चलते वे काफी मूल्यवान हो जाते हैं। भारत में सन् 1852 में जारी प्रथम डाक टिकट (आधे आने का सिंदे डाक) की कीमत आज करीब ढाई लाख रूपये आंकी जाती है। कभी-कभी कुछ डाक टिकट डिजाइन में गड़बड़ी पाये जाने परबाजार से वापस ले किये जाते हैं, ऐसे में उन दुर्लभ डाक टिकटों को फिलेटलिस्ट मुँहमाँगी रकम पर खरीदने को तैयार होते हैं। विश्वका सबसे मँहगा और दुर्लभतम डाक-टिकट ब्रिटिश गुयाना द्वारा सन् 1856 में जारी किया गया एक सेंट का डाक-टिकट है। 2 सेमी.X 3 सेमी. के आकार वाला यह डाक टिकट मैजेंटा रंग के कागज पर काले रंग में मुद्रित है। इसमें तीन जहाजों की छवि और लैटिन में यह आदर्श वाक्य लिखा है, 'हम देने और बदले में उम्मीद रखते हैं।' इसका प्रचलन एक बार लंदन से टिकटों की

शिपमेंट में देरी होने के बाद शुरु हुआ। पोस्टमास्टर ने ब्रिटिश गुयाना में जॉर्जटाउन में रॉयल गैजेट अखबार के मुद्रकों से शिपमेंट के आने तक तीन डाक टिकटों को छापने के लिए कहा- 1-सेंट मेजेंटा, 4-सेंट मेजेंटा और 4-सेंट ब्लू। विश्व में एकमात्र उपलब्ध इस डाक-टिकट को ब्रिटिश गुयाना के डेमेरैरा नामक नगर में सन् 1873 में एक अंग्रेज बालक एल. वॉघान ने रद्दी में पाया और छः शिलिंग मे नील मिककिनॉन नामक संग्रहकर्ता को बेच दिया। फिर यह अनेक डाक टिकट संग्रहकर्ताओं के पास से गुजरते हुए वर्ष 1980 में जॉन डू पोंट के हाथों में आया।

सन 1981 में इस डाक-टिकट को न्यूयार्क की रॉबर्ट सैगल ऑक्शन गैलेरीज इंक द्वारा 9,35,000 अमेरिकी डॉलर (लगभग चार करोड़ रूपये) में नीलाम किया गया। पुनः न्यूयॉर्क में सूदबी द्वारा आयोजित नीलामी में एक सेंट का यह डाक टिकट 18 जून 2014 को रिकॉर्ड 9.5 मिलियन अमेरिकी डॉलर में बिका। यह चौथी बार था जब इस डाक टिकट ने अपनी नीलामी में खुद का ही रिकॉर्ड तोड़ा। यह एकमात्र प्रमुख डाक टिकट है जो ब्रिटिश शाही परिवार के निजी राजसी डाक टिकट संग्रह में नहीं है।

इसी प्रकार भारत के डाक टिकटों में भी सन् 1854 में जारी चार आने वाले लिथोग्राफ में एक शीट पर महारानी विक्टोरिया

का सिर टिकटों में उल्टा छप गया, इस त्रुटि के चलते इसकी कीमत आज पाँच लाख रूपये से भी अधिक है। इस प्रकार के कुल चौदह-पन्द्रह त्रुटिपूर्ण डाक टिकट ही अब उपलब्ध हैं। स्वतन्त्रता के बाद सन् 1948 में महात्मा गाँधी पर डेढ़ आना, साढ़े तीन आना, बारह आना और दस रूपये के मूल्यों में जारी डाक टिकटों पर तत्कालीन गर्वनर जनरल चक्रवर्ती राजगोपालाचारी ने गवर्नमेण्ट हाउस में सरकारी काम में प्रयुक्त करने हेतु ''सर्विस'' शब्द छपवा दिया। इन आलोचनाओं के बाद कि किसी की स्मृति में जारी डाक टिकटों के ऊपर ''सर्विस'' नहीं छापा जाता, उन टिकटों को तुरन्त नष्ट कर दिया गया। पर इन दो-तीन दिनों में जारी सर्विस छपे चार डाक टिकटों के सेट का मूल्य आज तीन लाख रूपये से अधिक है। एक घटनाक्रम में ब्रिटेन के न्यू ब्रेंजविक राज्य के पोस्टमास्टर जनरल ने डाक टिकट पर स्वयं अपना चित्र छपवा दिया। ब्रिटेन में डाक टिकटों पर सिर्फ वहाँ के राजा और रानी के चित्र छपते हैं, ऐसे में तत्कालीन महारानी विक्टोरिया ने यह तथ्य संज्ञान में आते ही डाक टिकटों की छपाई रूकवा दी पर तब तक पचास डाक टिकट जारी होकर बिक चुके थे। फलस्वरूप दुर्लभता के चलते इन डाक टिकटों की कीमत आज लाखों में है।

कई देशों ने तो डाक टिकटों के क्षेत्र में नित नये अनूठे प्रयोग करने की पहल की है। स्विटजरलैण्ड द्वारा जारी एक डाक-टिकट से चॉकलेट की खुशबू आती है तो भूटान ने त्रिआयामी, उभरे हुये रिलीफ टिकट, इस्पात की पतली पन्नियों, रेशम, प्लास्टिक और सोने की चमकदार पन्नियों वाले डाक टिकट भी जारी किये हैं। यही नहीं, भूटान ने सुगन्धित और बोलने वाले (छोटे रिकार्ड के रूप में) डाक टिकट भी निकालकर अपना सिक्का जमाया है। सन् 1996 में विश्व के प्रथम डाक टिकट ''पेनी ब्लैक'' के सम्मान में भूटान ने 140 न्यू मूल्य वर्ग में 22 कैरेट सोने के घोल के उपयोग वाला डाक टिकट जारी किया था, जो अब दुलर्भ टिकटों की श्रेणी में आता है। भारतीय डाक विभाग ने 13 दिसम्बर 2006 को चंदन की सुगंध वाला एक डाक टिकट (15 रुपए), 7 फरवरी 2007 को गुलाब की सुगंध वाले चार डाक टिकट (5 और 15 रुपए), 26 अप्रैल 2008 को जूही की सुगंध वाले दो डाक टिकट (5 और 15 रुपए) जारी किये हैं, जो कि साल भर तक सुगन्धित रहेंगे। इसी क्रम में 23

अप्रैल, 2017 को कॉफी की सुगंध वाले डाक टिकट (100 रुपए) भी जारी किये गए। वर्ष 2019 में भारतीय इत्र विषय पर ऊद और नारंगी फूल पर आधारित चार सुगंधित स्मारक डाक टिकट (25 रुपए) जारी किये गए।

भारतीय इत्र पर जारी डाक टिकट इस श्रेणी में पाँचवाँ सुगन्धित डाक टिकट है। भारत से पहले मात्र चार देशों ने सुगन्धित डाक टिकट जारी किये हैं। इनमें स्विटजरलैण्ड, थाईलैण्ड व न्यूजीलैण्ड ने क्रमशः चाकलेट, गुलाब व जैस्मीन की सुगन्ध वाले डाक टिकट जारी किये हैं तो भूटान ने भी सुगन्धित डाक टिकट जारी किये हैं।

यदि हम डाक टिकटों के इतिहास का ध्ययन करें तो पेशे से अध्यापक सर रोलैण्ड हिल 1795-1879) को डाक टिकटों का जनक कहा जाता है। जिस समय पत्रों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाने का शुल्क तय किया गया और वह गंतव्य पर लिखा जाने लगा तो उन्हीं दिनों इंगलैण्ड के एक स्कूल अध्यापक रोलैण्ड हिल ने देखा कि बहुत से पत्र पाने वालों ने पत्रां को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया और पत्रों का ढेर लगा हुआ है, जिससे कि सरकारी निधि की क्षति हो रही है। यह सब देख कर उन्होंने सन् 1837 में 'पोस्ट आफिस रिफार्म' नामक पत्र के माध्यम से बिना दूरी के हिसाब से डाक/टिकटों की दरों में एकरूपता लाने का सुझाव दिया।

उन्होंने चिपकाए जाने वाले 'लेबिल' की बिक्री का सुझाव दिया ताकि लोग पत्र भेजने के पहले उसे खरीदे और पत्र पर चिपका कर अपना पत्र भेजें। इन्हीं के सुझाव पर 6 मई 1840 को विश्व का प्रथम डाक टिकट 'पेनी ब्लैक' ब्रिटेन द्वारा जारी किया गया। भारत में प्रथमतः डाक टिकट 01 जुलाई 1852 को सिन्ध के मुख्य आयुक्त सर बर्टलेफ्ररेरे द्वारा जारी किए गए। आधे आने के इस टिकट को सिर्फ सिंध राज्य हेतु जारी करने के कारण 'सिंदे डाक' कहा गया एवं मात्र बम्बई-कराची मार्ग हेतु इसका प्रयोग होता था। सिंदे डाक को एशिया में जारी प्रथम डाक टिकट एवं विश्व स्तर पर जारी प्रथम सर्कुलर डाक टिकट का स्थान प्राप्त है। 01 अक्टूबर 1854 को पूरे भारत हेतु महारानी विक्टोरिया के चित्र वाले डाक टिकट जारी किये गये। 1926 में इण्डिया सिक्यूरिटी प्रेस नासिक में डाक टिकटों की छपाई आरम्भ होने पर 1931 में प्रथम चित्रात्मक डाक टिकट नई दिल्ली के उद्घाटन पर जारी किया गया। 1935 में ब्रिटिश सम्राट जॉर्ज पंचम की रजत जयन्ती के अवसर पर प्रथम स्मारक डाक टिकट जारी किया गया। स्वतन्त्रता पश्चात 21 नवम्बर 1947 को प्रथम भारतीय डाक टिकट साढ़े तीन आने का ''जयहिन्द'' जारी किया गया। 21 फरवरी 1911 को विश्व की प्रथम एयरमेल सेवा भारत द्वारा इलाहाबाद से नैनी के बीच आरम्भ की गयी। राष्ट्रमंडल देशों मे भारत पहला देश है जिसने सन् 1929 में हवाई डाक टिकट का विशेष सेट जारी किया।

डाक टिकटों की दुनिया बेहद ही निराली है। यह किसी भी राष्ट्र की सभ्यता, संस्कृति एवं विरासत का प्रतिबिम्ब हैं। इनके माध्यम से

वहाँ के इतिहास, कला, विज्ञान, व्यक्तित्व, वनस्पति, जीव-जन्तु, राजनयिक सम्बन्ध एवं जनजीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं की जानकारी मिलती है। एक तरफ डाक टिकटों के माध्यम से अपनी सभ्यता और संस्कृति के गुजरे वक्त को आईने में देखा जा सकता है, वहीं इस नन्हें राजदूत का हाथ पकड़ कर नित नई-नई बातें भी सीखने को मिलती हैं। व्यक्तित्व परिमार्जन के साथ-साथ यह ज्ञान के भण्डार में भी वृद्धि करता है। यही कारण है कि इसे युवाओं से जोड़ने हेतु भारत सरकार द्वारा दीन दयाल स्पर्श छात्रवृत्ति योजना भी लागू की गई है। डाक टिकटों की दुनिया में अब ''माई स्टैम्प'' या ''पर्सनालाईज्ड स्टैम्प'' का भी दौर है, जहाँ कोई भी व्यक्ति एक निश्चित शुल्क देकर डाक टिकट की शीट पर अपनी और प्रियजनों की तस्वीर लगवा सकता है। निश्चितत: वर्षों से डाक टिकट महत्वपूर्ण घटनाओं के विश्वव्यापी प्रसार, महान विभूतियों को सम्मानित करने एवं प्राकृतिक सौन्दर्य के प्रति अपनी श्रद्धा अर्पित करने हेतु कार्य कर रहे हैं। विभिन्न राष्ट्रों के बीच मैत्री की सेतु तैयार करने के साथ-साथ परस्पर एक दूसरे को समझने में भी डाक टिकटों ने सहायता प्रदान की है और आज भी इस दिशा में यह एक मील का पत्थर है।

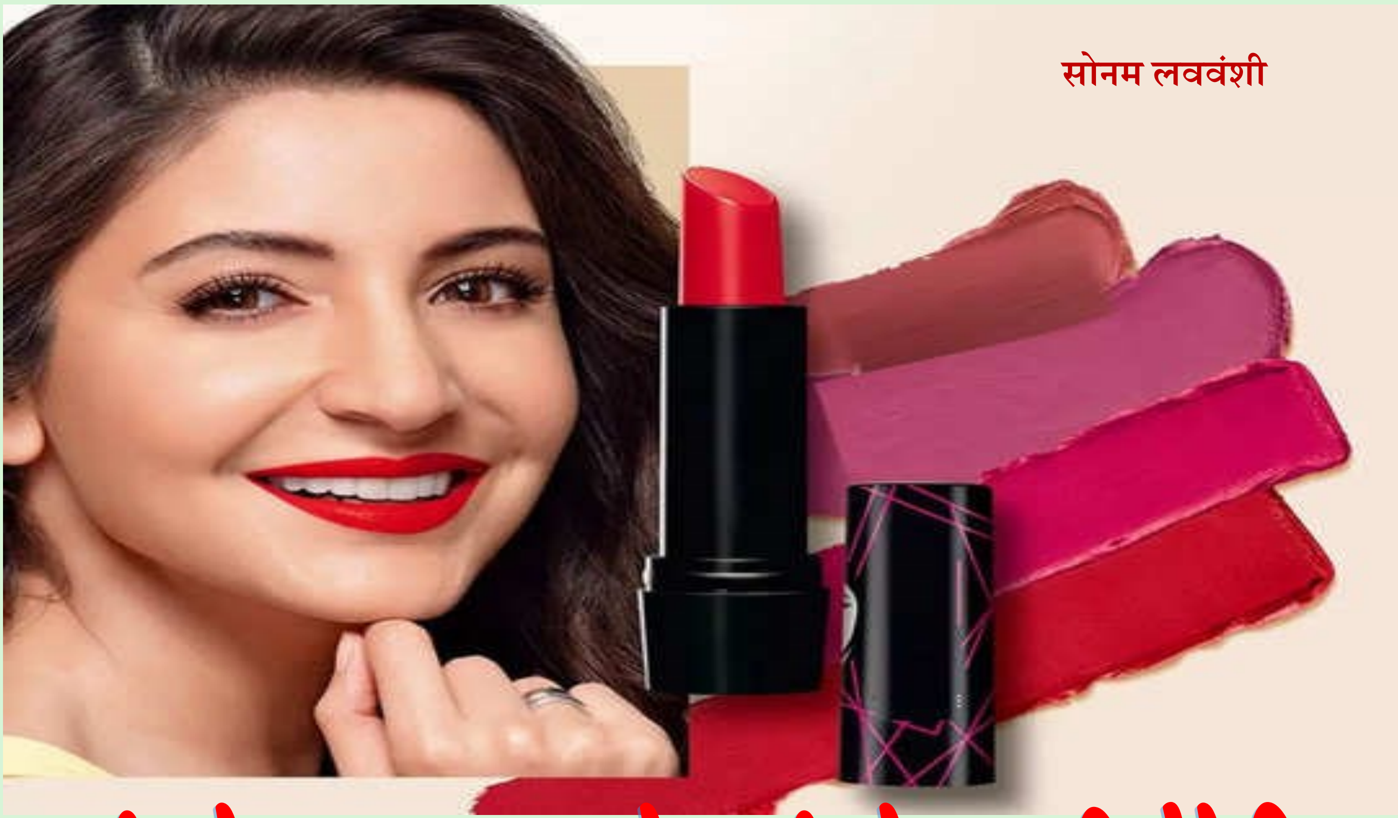

सोनम लववंशी

धरती को बदसूरत बना रहे ब्यूटी प्रोडक्ट की पैकेजिंग!

ब्यूटी प्रोडक्ट खूबसूरती निखारने के लिए होते हैं। गोरे चेहरे को और ज्यादा सुंदर बनाने और सांवले चेहरे को गोरा बनाने का फार्मूला सिर्फ ब्यूटी प्रोडक्ट बनाने वालों के ही पास है। लेकिन, किसी ने कभी इस बात पर गौर किया कि खूबसूरत बनाने वाली क्रीम, पाउडर और ऐसे हजारों प्रोडक्ट की खाली डिब्बियों, बॉटल और डिब्बों का क्या होता होगा! दरअसल, ब्यूटी प्रोडक्ट के ये खाली डिब्बे धरती को ऐसी बदसूरती दे रहे हैं, जो लाइलाज है। सरकार सिंगल यूज़ प्लास्टिक पर तो रोक लगा रही है, पर इस तरफ किसी का ध्यान नहीं जा रहा! हर साल इनसे निकला लाखों टन प्लास्टिक कचरा भी उतना ही हानिकारक है, जितना सिंगल यूज़ प्लास्टिक! सरकार ने बिना विकल्प खोजे इस कारोबार से जुड़े लाखों लोगों को संकट में डाल दिया, पर ब्यूटी के इन ठेकेदारों को खुला क्यों छोड़ दिया, जो धरती पर प्लास्टिक का बोझ बढ़ा रहे हैं।

माना जाता है कि ब्यूटी प्रोडक्ट हमारी खूबसूरती में चार चांद लगाते हैं। लेकिन, इनसे निकलने वाला कचरा धरती की खूबसूरती में बदनुमा दाग लगा रहा है। कहने

को तो सरकार ने जुलाई से सिंगल यूज प्लास्टिक पर बैन लगा दिया। पर, अभी भी ऐसे अनगिनत प्रोडक्ट है जिनकी पैकेजिंग में प्लास्टिक का भरपूर उपयोग होता है। आश्चर्य की बात है कि इस तरफ किसी का ध्यान क्यों नहीं गया। बड़ी-बड़ी मल्टीनेशनल कंपनियों के सामने सरकार ने मौन धारण क्यों कर लिया। जब बात छोटे व्यापारियों की आती है, तो सरकार पूरे जोश में आ जाती है। आंदोलन किए जाते हैं, यहां तक कि छोटे व्यापारियों, फल सब्जी बेचने वालों पर भारी जुर्माना तक लगा दिया जाता है। पर, बड़े कारोबारियों की तरफ नजर उठाकर भी नहीं देखा जाता।

एक अनुमान के मुताबिक, हर साल ग्लोबल कॉस्मैटिक इंडस्ट्री में करीब 120 बिलियन पैकजिंग प्रोडक्ट्स का उत्पादन होता है। खास बात यह है कि इनमें से ज्यादातर को रिसाइकल नहीं किया जाता। वैज्ञानिकों का मानना है कि साल 2050 तक 12 बिलियन मीट्रिक टन प्लास्टिक कचरा धरती पर जमा हो जाएगा। जो न केवल पर्यावरण संकट उत्पन्न करेगा, बल्कि मानव अस्तित्व को भी खतरे में डाल देगा।

सुंदरता बढ़ाने के नाम पर ऐसे न जाने कितने उत्पाद बनाए जाते हैं, जो बाजारों के

बाद घरों की ड्रेसिंग टेबल की शोभा बढ़ाते हैं। हर घर में इनकी लम्बी कतार देखी जा सकती है। फिर बात चाहें खुशबूदार परफ्यूम, शैम्पू या फिर गोरे होने वाले क्रीम की हो! हर कोई इनके आकर्षक विज्ञापनों से खुद को रोक भी नहीं पाता है। इन ब्यूटी प्रोडक्ट्स से इंसानी सुंदरता बढ़े न बढ़ें, पर धरती की सुंदरता पर ग्रहण जरूर लग रहा है।

ब्यूटी प्रोडक्ट्स के ज्यादातर प्रोडक्ट प्लास्टिक कंटेनर में ही आते है और इस्तेमाल करने के बाद इन्हें फेक दिया जाता है। न तो ब्यूटी प्रोडक्ट्स बनाने वाली कंपनियों का इनसे कोई सरोकार रहता है और न सरकार इनके निपटान के लिए कोई उचित नीति बना पाई। बात प्लास्टिक के इतिहास की करें, तो प्लास्टिक की कहानी 1960 से शुरू हुई थी। सोचने वाली बात है कि इतने दशकों के बाद भी मात्र 9 प्रतिशत प्लास्टिक ही रिसाइकिल हो पाता है। बाकी बचा प्लास्टिक हर बार पर्यावरण की सेहत ख़राब करने के लिए वैसे ही छोड़ दिया जाता है। इसमें वो ब्यूटी प्रोडक्ट की खाली शीशियां और डिब्बे भी हैं, जिन्हें बाद में कचरा समझकर डस्ट बिन में फेंक दिया जाता है।

भारत में पिछले पांच सालों में प्लास्टिक का इस्तेमाल दोगुना बढ़ा। यह दिन दूनी रात चौगुनी तरक़्क़ी कर रहा है। साल 2018-19 में प्लास्टिक कचरा 30.59 लाख टन था, जो 2019-20 में 34 लाख टन हो गया। साल 2020 की ही बात करें तो देश में 35 लाख टन प्लास्टिक कचरा तैयार हुआ। यह सालाना 21.8% की दर से बढ़ रहा है। प्लास्टिक के भरपूर इस्तेमाल की वजह से दिल वालों की दिल्ली में सबसे अधिक प्लास्टिक कचरा पैदा हो रहा। जबकि, प्लास्टिक की खपत करने वाले राज्य में महाराष्ट्र दूसरे नम्बर पर है। वहीं तमिलनाडु तीसरे नम्बर पर है। प्लास्टिक इस्तेमाल में तो मानों सभी राज्यों में होड़ जोड़ मची है। केंद्रीय पर्यावरण मंत्रालय की रिपोर्ट में केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) ने बताया है कि साल 2019-20 में दिल्ली में सालाना 2,30,525 टन (टीपीए) प्लास्टिक कचरे का उत्पादन हुआ। यह प्रति व्यक्ति अपशिष्ट उत्पादन के मामले में देश में सबसे अधिक है। इसके अलावा मुंबई, चेन्नई और कोलकाता में भी प्लास्टिक के पहाड़ देखे जा सकते है।

साल 2020 में ग्लोबल कॉस्मेटिक मार्केट की कीमत 341.1 बिलियन यूएस डॉलर आंकी गई। वहीं, साल 2030 तक 560.50 बिलियन यूएस डॉलर तक बढ़ने की उम्मीद की जा रही है। ब्यूटी प्रोडक्ट्स का यह बढ़ता कारोबार अनचाहे कचरे को कई गुना बढ़ा देगा। धरती ही नहीं बल्कि समुद्र तक की सेहत को प्लास्टिक के कचरे ने खराब कर दिया है। अमेरिका जैसे देश में ही हर साल 30 मिलियन टन प्लास्टिक कचरा पैदा होता है। वहीं ब्यूटी प्रोडक्ट्स से करीब 7.9 बिलियन कठोर कचरा पैदा होता है। हमारे दिन की शुरुआत से लेकर रात के सोने तक हम प्लास्टिक से ही घिरे हैं। प्लास्टिक हर जगह, हर समय मौजूद है। यहां तक कि लाखों टन प्लास्टिक पैकेजिंग के टुकड़े लैडफिल में छोड़ दिए जाते है। इसके अलावा माइक्रोप्लास्टिक के टुकड़े समुद्र में समा जाते हैं। जिससे समुद्री जीवों पर भी संकट मंडराने लगा है।

भारत ब्यूटी प्रॉडक्ट्स का एक बड़ा उभरता हुआ बाज़ार है। साल 2021 में ब्यूटी और पर्सनल केयर मार्केट में सबसे अधिक रेवन्यू में विश्व में भारत चौथे नंबर पर रहा है। भारत में ब्यूटी प्रॉडक्ट्स का जितना बाज़ार बढ़ेगा उसका पर्यावरण पर उतना ही बुरा असर पड़ेगा। सरकारें समय रहते नहीं जागी तो वह दिन दूर नहीं जब धरती प्लास्टिक के ढेर में समा जाएगी। कहने को तो तमाम सरकारें प्लास्टिक बैन का ढिंढोरा पिटती रहती हैं। पर, धरातल पर इसका कोई खास असर नहीं दिखता है। भारत जैसे गरीब देश में प्लास्टिक को खत्म करने के लिए जिस तरह की नीतियों की आवश्यकता है। वह इस तरह के प्रतिबंध की घोषणाओं में कहीं नजर नहीं आती। दूसरी तरफ इस तरह के प्रतिबंध निम्न आय वर्ग के लोगों के लिए एक नई परेशानी बनते जा रहे हैं। छोटे और लघु उद्योग वाले लोगों को इसका ख़ामियाजा सबसे ज्यादा भुगतना पड़ता है। उन पर इसका आर्थिक भार पड़ता है। ईको-फ्रेंडली के नाम पर जो बाज़ार स्थापित किया जा रहा है, उसकी पहुंच बहुत सीमित विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग तक है। प्रतिबंध से पहले अन्य विकल्प न सामने लाना सरकार की नीयत को साफ दर्शाता है।

संजा: प्रेम, एकता और सामंजस्य का सृजन करती है

लोककलाओं की संस्थाए में बड़ी संख्या में लड़कियाँ एकत्रित होकर संजा बनाती है। छत्तीसगढ़ ,बुंदेलखंड क्षेत्र में लड़किया झाड़ की पत्तियाँ को विशेषकर नीबू को ओढ़नी उड़ाकर फूलों से सहेजने की प्रक्रिया को वे मामुलिया बोलते है पर्व मनाते है।लोक गीतों और कलाकृतियों को बचाने में कई स्थानों पर संजा उत्सव संस्थाए पुनीत और प्रेरणादायी कार्य कर रही है|जो की प्रशंसनीय है। तिथिवार कलाकृतियों के नाम क्रमशः पुनम का पाटला ,एकम की छाबड़ी ,बीज का बिजोरा ,तीज का तीजों ,चौथ का चोपड़ ,पंचम का पांच कटोरा ,छट का छः पंखुडी का फूल ,सातम का स्वस्तिक -सातिया ,अष्टमी को आठ पंख़ुडी का फूल ,नवमी का डोकरा -डोकरी ,दशमी का दीपक या निसरनी ,ग्यारस का केल ,बारस का पंखा ,तेरस का घोडा ,चोदस का कला कोट ,पूनम का कला कोट ,अमावस का कला कोट।श्राद के 16 दिनों कुँवारी कन्याओं द्वारा गोबर, फूल -पत्तियों आदि से संजा को संजोया जाता है।

मधुर लोक गीतों की स्वरलहरियाँ घर घर में गुंजायमान होती है।वर्तमान में संजा का रूप फूल -पत्तियों से कागज में तब्दील होता जा रहा है । संजा का पर्व आते ही लडकियां प्रसन्न हो जाती है।संजा को कैसे मनाना है ये

बातें छोटी लड़कियों को बड़ी लड़कियां बताती है। शहरों में सीमेंट की इमारते और दीवारों पर महँगे पेंट पुते होने, गोबर का अभाव ,लड़कियों का ज्यादा संख्या में एक जगह न हो पाने की वजह ,टी वी ,इंटरनेट का प्रभाव और पढाई की वजह बताने से शहरों में संजा मनाने का चलन ख़त्म सा हो गया है ।लेकिन गांवों /देहातो में पेड़ों की पत्तियाँ ,तरह तरह के फूल ,रंगीन कागज ,गोबर आदि की सहज उपलब्धता से ये पर्व मनाना शहर की तुलना में आसान है । परम्परा को आगे बढ़ाने की सोच में बेटियों की कमी से भी इस पर्व पर प्रभाव पढ़ा है। "संजा -सोलही गीत को देखे तो -"काजल टिकी लेव भाई काजल टिकी लेव / काजल टिकी लई न म्हारी संजा बाई के देव ",संजा तू थारा घरे जा /थारी माँ मारेगा के कूटेगा "नानी सी गाड़ी लुढ़कती जाए "संजा बाई का सासरे जावंगा -जावंगा "संजा जीम ले "मालवी मीठास लिए और लोक परम्पराओं को समेटे लोक संस्कृति को विलुप्त होने से तो बचाती है साथ ही लोक कला के मायनो के दर्शन भी कराती है। संजा की बिदाई मानों ऐसा माहौल बनाती है जैसे बेटी की बिदाई हो रही हो सब की आँखों में आंसू की धारा फूट पड़ती है |ये माहौल बेटियों को एक लगाव और अपनेपन का अहसास कराता

है।बस ये बचपन की यादें सखियों के बड़े हो जाने और विवाह उपरांत बहुत याद् आती है।कही- कही अंग्रेजी एवं फ़िल्मी गीतों की तर्ज की झलक भी गीतों में समाहित होने से एक नयापन झलकता है।रिश्तों के ताने बाने बुनती व् हास्य रस को समेटे लोक गीत वाकई अपनी श्रेष्ठता को दर्शाते है।श्रंगार रस से भरे लोक गीत जिस भावना और आत्मीयता बेटियाँ गाती है।उससे लोक गीतों की गरिमा बनी रहती और ये विलुप्त होने से भी बचे हुए है। मालवा - निमाड़, राजस्थान, गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्र, हरियाणा, ब्रज के क्षेत्रों की लोक परम्परा में इनको भिन्न भिन्न नामों से जाना जाता है |श्राद पक्ष के दिनों में कुंवारी लडकिया माँ पार्वती से मनोवांछित वर की प्राप्ति के लिए पूजन अर्चन करती है।विशेषकर गाँवों में संजा ज्यादा मनाई जाती है।

संजा पर्व एक पाठशाला है |संजा से कला का ज्ञान प्राप्त होता है ,पशु -पक्षियों की आकृति बनाना और उसे दीवारों पर चिपकाना। गोबर से संजा माता को सजाना और किला कोट जो संजा के अंतिम दिन में बनाया जाता है ,उसमे पत्तियों ,फूलों और रंगीन कागज से सजाने पर संजा बहुत सुन्दर लगती है | लडकियाँ संजा के लोक गीत को गा कर संजा की आरती कर प्रसाद बांटती है ।श्रंगार रस से भरे लोक गीत जिस भावना और आत्मीयता से गाती है, उससे लोक गीतों की गरिमा बनी रहती और ये विलुप्त होने से भी बचे हुए है ।मालवा - निमाड़ की लोक परम्परा श्राद पक्ष के दिनों में कुंवारी लडकिया माँ पार्वती से मनोवांछित वर की प्राप्ति के लिए पूजन अर्चन करती है ।विशेषकर गाँवों में संजा ज्यादा मनाई जाती है ।संजा मनाने की यादें लड़कियों के विवाहोपरांत गाँव /देहातों की यादों में हमेशा के लिए तरोताजा बनी रहती है और यही यादें उनके व्यवहार में प्रेम,एकता और सामजस्य का सृजन करती है ।संजा के गीतों की खासियत ये भी है कि जब लड़कियां आरती समाप्त करती तो जो प्रसाद वितरित किया जाता है।उसके पहले वो उस प्रसाद को ढांक के रखकर प्रसाद का नाम भी पूछती है।किंतु प्रसाद का नाम नही बता पाता।जब कोई बता देता या नही भी बता सकती तब अंत मे प्रसाद वितरित किया जाता। गीत मन को छू जाते है।लड़कियां एक सहेली के घर गीत गाने के बाद अन्य सहेलियों के यहां मनुहार के बाद जाती है।इस तरह संजा के लोकगीत बचाने में पर्व का महत्व बरकरार है। संजा विसर्जन के समय जिस गांवों में नदी बहती है।उसके किनारों पर तगारी,टोपले में संभाल कर रखी गई संजा को नदी में विसर्जन किया जाता है।ये पर्यावरण की हितेषी है।इसको जल में प्रवाहित करने पर नदी प्रदूषित नहीं होती।लड़कियों का इतने दिनों तक संजा के संग रहने और अब अगले वर्ष संजा का आना आंखों में आंसू ला देता है।खाली तगारियों, टोपलो को वे नदी के किनारे एक के ऊपर एक रखकर उस पर से कूदती है।शायद ये वियोग को भुलाकर इस तरह खुशियां समाहित करती है।संजा पर्व की यादें विवाह उपरांत ताउम्र याद रहती है।संजा के गीत मुखाग्र एक दूसरे से सीखने जाती है।शाम होने पर इनके मधुर गीत कानों में मिश्री घोलते है।संजा पर्व पर ही गाए जाने गीतों को सुनने के लिए लोग घरों से बाहर आ जाते और चलते हुए राहगीरों के पग रुक से जाते। संजा सीधे- सीधे हमें पर्यावरण से ,अपने परिवेश से जोडती है ,तो क्यों न हम इस कला को बढ़ावा दे और विलुप्त होने से बचाने के प्रयास किए जाएं | संजा मनाने की यादें लड़कियों के विवाहोपरांत गाँव /देहातों की यादों में हमेशा के लिए तरोताजा बनी रहती है और यही यादें उनके व्यवहार में प्रेम,एकता और सामजस्य का सृजन करती है । संजा सीधे- सीधे हमें पर्यावरण से ,अपने परिवेश से जोडती है ,तो क्यों न हम इस कला को बढ़ावा दे और विलुप्त होने से बचाने के प्रयास किए जाएं ,वैसे उज्जैन में संजा उत्सव पर संजा पुरस्कार से सम्मानित भी किया जाने लगा है ।साथ ही महाकालेश्वर में उमा साझी महोत्सव भी प्रति वर्ष मनाया जाता है।कुल मिला कर संजा देती है कला ज्ञान एवं मनोवांछित फल प्रदान करती है।

लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली110092

राजू अभी गया नहीं ...
वो चला गया
किसने कहा
लोग कहने लगे जोर से
हमने कहा
तुम्हें पता नहीं
कैसे **'कवि'** हो तुम
बताते हैं हम
हार्टअटेक के बाद
जिन्दगी और मौत से
संघर्षरत था वो
कई सप्ताहों से
मौनव्रत था वो
वो छोड़ जिन्दगी का साथ
पकड़ कर मौत का हाथ
चला गया है
मौत के हाथों छला गया है...
झूठ कहते हो सभी
राजू चला गया
मैं नहीं मानता
तुम भी मत मानों
जब जब लोग हँसेंगे
पेट पर हाथ रखकर
चुटकलों का रस चखकर
हँसी से आँखों में आँसू आयेंगे
उस पल राजू श्रीवास्तव को
हम सभी सामने पायेंगे
इसलिए मैं कहता हूँ
कलाकार मरता नहीं
क्यूँ कहते हो तुम भी
राजू चला गया
मेरी तरह ऐसा कहो
राजू अभी गया नहीं
राजू अभी गया नहीं ...

- व्यग्र पाण्डे

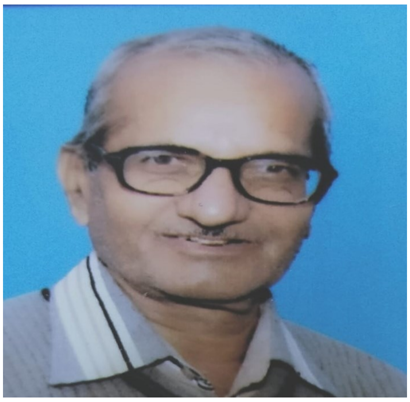

रह जाओगे दंग

हो गया है आज यहां, कैसा ये इंसान
बेच दिया इसने सभी, धरम 'औ' ईमान
जीवन यहां बनी हुई, कच्ची डोर पतंग
कब कट जायेगी भला, रह जाओगे दंग
करते है जो भी यहां, काम सभी ही नीच
उसके खिलाफ तू कभी, आंख रमेश न मीच
करें यहां पर जो सदा, अच्छे-अच्छे काम
उस पर न लगावे कभी, कोई भी इल्जाम
आते जीवन में सदा, खूब यहां तूफान
घबराता जो है नहीं, रहता वो बलवान
हर घर में आवे यहां, ढ़ेर सारा उजास
मुरझाये चहरे लगे, सबके सब मधुमास
पाकर अंधेरा यहां, हुये सभी हैरान
मिला नहीं इसी घर में, कोई रोशनदान
वही आदमी ही यहां, होता है बेजोड़
करता नहीं झूठों से, समझौता ना तोड़
रिश्ते ऐसे ही रहे, जैसे रहते कांच
ना आवे इनमें कभी, किसी बात से आंच
खींच गई दीवार भी, उन दोनों के बीच
मिलकर सभी उछालते, एक दूजे पर कीच

रमेश मनोहरा

माँ दुर्गा

हे जगदम्बा
सुनों मेरी पुकार
जग निंमाता

ऊँचे आसन
मैंय्या हैं विराजती
प्रसन्नता से

आदिशक्ति तू
अखण्ड तेरी ज्योति
आरोग्य देवी

जयजननी
भवसागर तरिणी
मुक्तिकारिणी

हाथों खड्ग
सिंह पर सवारी
अष्टभुजाएँ

लाल चुनरी
महिषासुर मर्दिनी
माथे में घंटा

जग जननी
कण कण में तू है
दुखहारिणी

नयन मेरे
दरस को तरसे
आई हूँ द्वार

महामयी माँ
मैं अज्ञानी नादान
कृपा करो माँ

करुँ विनती
कर दो बेडा पार
शक्तिशालिनी

डॉ.विभा रजंन (कनक)

यक्ष इन पुस्तक मेला

दिल्ली का पुस्तक मेला समाप्त हो चुका था, धर्मराज युधिष्ठिर हस्तिनापुर के अलावा इंद्रप्रस्थ के भी सम्राट थे ।अचानक यक्ष प्रकट हुए ,उन्होंने सोचा कि चलकर देखा जाये कि धर्मराज अभी भी वैसे हैं या बदल गए जैसे कि मेरे सरोवर का जल पीने के समय थे।युधिष्ठिर से मिले कुशल क्षेम हुई,उन्होंने यक्ष से कहा कि 'चलो इंद्रप्रस्थ में पुस्तक मेला लगवाना है,वहीं बातें भी हो जाएंगी'यक्ष उनके साथ हो लिये।यक्ष नाखुश हुए उन्होंने कहा"हे धर्मराज,यदि मेरे प्रश्नों के उत्तर ना दिए तो मारे जाओगे"।

धर्मराज ने हामी भर दी।यक्ष ने पूछा "हे राजन,जब दिल्ली में मेला लग चुका था ,तब इंद्रप्रस्थ में पुस्तक मेले की क्या ज़रूरत थी?"

युधिष्ठिर ने कहा "धर्मो रक्षत रक्षितः"अर्थात जिसने पुस्तक मेले में किसी की किताब दो सौ रुपये की किताब चार रुपये की उसकी कटिंग चाय पीकर खरीदी है,वो बहुत आक्रोशित है,उसे भी अपनी किताब बेचने,ऑटोग्राफ देने और सेल्फी पोस्ट करने का अवसर देना ही सामाजिक न्याय होता है अन्यथा विद्रोह होगा। गीता का यथार्थ यही है यक्ष"।

यक्ष दुखी हो गए ,बोले "हे राजन,आपने मुझे पुस्तक मेले में क्यों नहीं बुलाया,मैं धन्य होते-होते रह गया,अब भी घुमा दो देख लूँ जाती हुई बहार को"।

धर्मराज अपने साथ लेकर मेले के स्थान पर पहुँचे।अंदर घुसते ही एक महिलाओं, पुरुषों का एक दल नजर आया।ये सब एक दूसरे को किताबें दे रहे थे ,और अपना सामान लेकर

सरस्वती की मूर्ति को प्रणाम करके विदा ले रहे थे।यक्ष ने पूछा"हे राजन ,ये लोग कौन हैं क्या कर रहे हैं?

"धर्मराज ने कहा "हे यक्ष,ये सब हिंदी के लेखक-लेखिकाएं हैं जो विभिन्न शहरों से दिल्ली आए थे पुस्तक मेले में।ये अपनी उपेक्षा से हताश हैं ,फ़टेहाल हैं फिर भी सरस्वती की मूर्ति को प्रणाम करके एक दूसरे को अपनी पुस्तकें दे रहे हैं और अपने घर जा रहे हैं"।यक्ष की आँख नम हो गई उसने हाथ जोड़कर सरस्वती की मूर्ति और उन सभी को प्रणाम किया।थोड़ा आगे बढ़ने पर एक बहुत खूबसूरत पोस्टर नजर आया जिसमें एक दिव्य सुंदरी की चमचमाती फ़ोटो लगी थी,फ़ोटो के नीचे एक जनाना बैठी विलाप कर रही थी।उस जनाना के सिर में बाल नहीं थे,बगल में विग पड़ी थी।आगे के दो दाँत टूटे हुए थे ,नकली दांतों का सेट पड़ा हुआ था।उसके कीमतों वस्त्रों और आभूषणों का किराया मांगने वाले उसे हड़का रहे थे वो वो मरियल सी जनाना गुमसुम थी।

यक्ष ने पूछा "हे राजन ,ये तस्वीर किसकी है,और वो जनाना कौन है"?

धर्मराज ने ठंडी साँस लेते हुए बताया"हे राजन ऊपर जो दिव्य सुंदरी का पोस्टर लगा है,नीचे वही जनाना बैठी है ,ये नई वाली हिंदी है ,जो उधार के बिंबों पर चलती है उसका सच उसके पोस्टर के ठीक नीचे है।तब तक हिंदी ने नई वाली हिंदी की तरफ पीठ फेरते हुये कहा

"वो शख्स जिसका कद मेरे कद से बड़ा था
वो शख्स किसी और के पैरों पर खड़ा था।"

नई वाली हिंदी ने हिंदीं से कहा-मैं क्या करूँ,मेरा दर्द ये है कि

"क्षमा करो हे वत्स,और देवी ,समय आया है ऐसा
दो अक्षर लिखते ही लेखक कहते हैं निकालो पैसा"

अब आप ही बताएं यक्ष और धर्मराज बिना अश्रु,स्वेद और पर्याप्त तैयारी के बल पर सिर्फ बिक्री के गुरों पर फोकस होगा तब मेरा यही अंजाम होगा,इस गाय से पहले दिन सबको दूध चाहिये मगर घास काटने का दर्द कोई नहीं लेना चाहता,हे यक्ष यही हाल रहा तो मैं आपके सरोवर का जल आकर पी लूँगी ।तब इन लेखक लेखिकाओं की तपस्या के बाद ही आप मुझे जीवित करना"।

यक्ष और युधिष्ठिर ने तब तक देखा कि एक स्थान पर जल का छिड़काव हो रहा है,धुंआ निकल रहा है,और पात्र में जल डाल रहे हैं सब ।यक्ष ने हर्षित होते हुए कहा"धर्मराज ये साधुओं का दल देखकर मन हर्षित हो गया।कलियुग में भी यज्ञ हो रहा है,धूम्र देखो,एक ही पात्र में सब जल पी रहे हैं कैसा उत्तम आदान-प्रदान है ,सर्वत्र बन्धुत्व का,कौन हैं ये लोग"।

युधिष्ठर ने तनिक सकुचाते हुए कहा

"ये यक्ष ,तथापि सबकी जटा पीछे से समान दिख रही है ,फिर भी उनमें कुछ पुरुष हैं और कुछ नारियां हैं।जो धूम्र है वो यज्ञ का नहीं अपितु चिलम और सिगरेट की है,पात्र नहीं वो दारू की बोतल है जिसे सब बिना भेद भाव के बारी-बारी से पी रहे हैं और ये सब जंबो द्वीप में मुखर्जीनगर नामक स्थान का खुद को बताते हैं यद्यपि उस स्थान से इनके होने का कोई प्रमाण नहीं क्योंकि वो पढ़ने लिखने वालों की जगह है"।

थोड़ा आगे बढ़ने पर देखा कि एक महिला एक ऊंची कुर्सी पर बैठी थी ।उसके पैरों के पास एक छोटी बच्ची रो रही थी।उसकी गोद मे एक काल्पनिक बच्ची थी ।वो महिलाअट्टहास करके हँस रही थी ।महिला बार अपने पैरों के पास वाली बच्ची को लात से मारती और गोद वाली काल्पनिक बच्ची को दुलारती।

यक्ष की जिज्ञासा देखकर युधिष्ठिर ने बताया"ये महिला नानी है,उस बच्ची को।जो अपनी सगी बच्ची को लात मार रही है और गोद की काल्पनिक उस बच्ची का लाड़-दुलार कर रही है जो वास्तव में है ही नहीं ,"यक्ष ने कहा"कौन है वो काल्पनिक बच्ची ?

"एक पिलपिला शख्स बोला

"वो काल्पनिक बच्ची लघुकथा है,और मैं बदनसीब इसका पति
इस खातून को गर बनाया है तूने ए खुदा
तो तू ही मेरा खुदा हो मुझे मंजूर नहीं"।

कोई कुछ बोलता तब तक बचाओ ,बचाओ की आवाज़ आई,सब दौड़ कर वहाँ पहुँचे तो देखा ,एक बूढ़ा आदमी एक जवान आदमी का हाथ ऐंठे हुए कह रहा था"रॉयल्टी दो,रॉयल्टी दो"।लोगों ने उन्हें अलग किया ।बूढ़ा आदमी दमा का मरीज था।मगर चवनप्राश खा रहा था।यक्ष ने पूछा "मामला क्या है"

युधिष्ठिर ने कहा"इस लेखक ने इन बुजुर्ग पर किताब लिखी है,अब ये लेखक से रॉयल्टी मांग रहे हैं।और लेखक कह रहा है ,बड़े मियां किताब तो बिकने दो तब दूँगा, लेकिन बुजुर्गवार को चैन नहीं"।यक्ष ने कहा"लेखक कौन है,किताब कौन सी है,और बुजर्ग कौन हैं"

युधिष्ठिर ने कहा"लेखक रूपेश दुबे हैं,किताब का नाम है बोल बच्चन"।

यक्ष ने हँसते हुए कहा"और ये बुजर्ग कौन हैं जिन पर किताब लिखी गयी है और रॉयल्टी माँग रहे हैं"।

युधिष्ठिर से हँस पड़े और धीरे से बोले"अमिताभ बच्चन"□

डॉ. नितिन सेठी

वह: किन्नर समाज की संघर्षगाथा

किन्नर विमर्श पर आधारित उपन्यासों में प्रख्यात् साहित्यकार श्रीगोपाल सिंह सिसोदिया 'निसार' का उपन्यास 'वह' किन्नर समुदाय के संघर्ष की गाथा के रूप में हमारे समक्ष आता है। तृतीयलिंगी समाज को अपने जीवन में अनेक प्रकार के कष्ट झेलने पड़ते हैं। शोषण,अशिक्षा, अपमान, धनाभाव जैसी अनेक समस्याएँ उनके सामने हैं। परन्तु इस उपन्यास की किन्नर पात्र 'वह' अपने समाज के उत्थान के लिए धरातल पर प्रयास करती है और अंत में अपना जीवन भी इसी के लिए न्यौछावर कर देती है। दूसरों के लिए उदाहरण बनकर भी 'वह' हमारे सामने आती है। प्रस्तुत उपन्यास 'वह' किन्नर अंजू की कहानी है। तप शर्मा इंदौर में आयकर विभाग में क्लर्क के पद पर कार्यरत है। घुमक्कड़ प्रकृति का तप आगरा में लुटेरों का शिकार हो जाता है और शारीरिक चोटों से बेहाल हो जाता है। अचानक अंजू नाम के किन्नर वहाँ से गुजर रही होती है और वह तप को अपनी झोपड़ी में ले आती है। उसकी सेवा-टहल से तप का स्वास्थ्य तेजी से सुधरने लगता है। तप अंजू की इस मानवीयता से अत्यधिक प्रभावित होता है। इसी क्रम में दोनों का आपसी परिचय बढ़ता है। अपने जीवन की दर्द भरी कहानी सुनाते हुए तप अंजू को भावुक कर देता है। अंजू भी अपनी जीवनगाथा तप को विस्तारपूर्वक सुनाती है। तप के शब्द हैं,"यदि आपको अपने विषय में मुझे बताने में कष्ट हो रहा हो तो रहने दीजिए। मेरे लिए इतना ही पर्याप्त है कि आप एक सहृदय तथा दूसरों के दुख से दुखी होने वाली सच्चे अर्थों में मनुष्य हैं। आज जब किसी के पास किसी के लिए समय नहीं है, ऐसे में आपने न केवल मेरी जान बचाई, वरन् मुझ घायल की तीमारदारी करके स्वस्थ जीवन भी दिया है। मैं इस जीवन में तो क्या अगले कई जन्मों में भी आपका यह ऋण नहीं उतार सकूँगा।"1 अंजू की जीवनयात्रा भी प्रताड़नाओं और पीड़ाओं की पगडंडियों पर ही आगे बढ़ी है। अंजू एक सम्पन्न परिवार की बेटी है। दो बहनों के बाद उसका जन्म होता है तो पिता और दादी की वह कोपभाजन बनती है।वह किन्नर है जिस कारण पिता और दादी की घृणा उसके जीवन पर संकट के बादल ला देती है। दिन बीतते हैं और घृणा-अपमान के बीच अंजू बड़ी होती है। उसकी सबसे बड़ी बहन की सगाई का उत्सव मनाया जाता है जिसमें दूर-दूर से मेहमानों का आगमन होता है। खूब चहल-पहल है लेकिन अंजू को कमरे में बंद कर दिया जाता है ताकि मेहमानों की दृष्टि उस पर न पड़ सके। अंजू किसी तरह कमरे से बाहर निकलकर मेहमानों के मध्य पहुँच जाती है।आए हुए मेहमानों में अंजू को देखकर खुसुर

-पुसुर शुरू हो जाती है। वर के पिता अंजू के पिता को बहुत भला-बुरा कहते हैं और गुस्से में वापस लौट जाते हैं। रंग में भंग पड़ जाता है। अंजू के शब्दों में,"वह दिन वास्तव में हमारे लिए बड़ा मनहूस था। आप कल्पना कर सकते हैं कि मुझ पर क्या गुजर रही होगी। आखिर एक-एक करके सब रिश्तेदार वापस जाने लगे। किसी से कुछ कहते ही नहीं बन रहा था। जो रह गए थे वह हमारे घावों पर नमक छिड़कने का काम कर रहे थे। उस रात मुझे मेरी बहनों द्वारा ही नहीं, वरन् माँ ने भी पीटकर अपने क्रोध और दुख का सामना किया। एक पिता जी ही थे जिन्होंने मेरी और एक नज़र तक नहीं देखा, शायद घृणा से।"2 यह बात पूरे शहर में फैल जाती है और किन्नर समाज अंजू को लेने के लिए आ धमकता है। किन्नर अंजू को अपने डेरे में ले जाते हैं और विभिन्न रस्मों-रिवाजों को सम्पन्न करने के बाद उसे अपने डेरे में शामिल कर लेते हैं। अंजू को डेरे में कोमल नामक बूढ़ी किन्नर की निगरानी में रखा जाता है जिसका वात्सल्य अंजू को अंदर तक भिगो देता है। कोमल की भी अपनी एक दर्दभरी कहानी है। कोमल का जन्म एक पुरुष के रूप में होता है लेकिन अपनी आर्थिक स्थिति के कारण उसे समलैंगिकता अपनानी पड़ती है। गाँव का लौंडेबाज जमींदार कोमल का शारीरिक शोषण करता है। एक दिन वह कोमल को पटना ले जाता है जहाँ उसकी जान-पहचान रज़िया और सुमन नामक किन्नरों से होती है। समृद्ध जीवन जीने का लालच देकर वह दोनों उसे अपनी गुरु वहीदा के पास ले जाते हैं। डेरे पर कोमल को हिजड़ा बना दिया जाता है। विभिन्न रस्मों के द्वारा कोमल को किन्नर समाज में शामिल कर लिया जाता है। कोमल मौसी भी किन्नरों की दुर्दशा को देखकर व्यथित रहती है। उसके शब्द हैं,"वर्तमान समय की बात की जाए तो कहा जा सकता है कि आज जब सभी देश मानवाधिकार पर अधिक बल दे रहे हैं, ऐसे समय में भी किन्नरों के साथ होने वाले भेदभाव एवं शारीरिक व मानसिक शोषण का ध्यान किसी को नहीं है। हमारे देश को स्वाधीन हुए सात दशक से अधिक हो चुके और हमें विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र होने का गौरव प्राप्त है, तब भी अभी तक हमारे समाज के लिए यथार्थ के धरातल पर कुछ विशेष नहीं किया गया।"3

अंजू को किन्नरों के डेरे पर तरह-तरह के दुखों और शारीरिक शोषण से गुजरना पड़ता है। उसके डेरे की गुरु शांति उसे देह व्यापार की ओर धकेल देती है। इसी बीच में डेरे पर रविंदर नाम के किन्नर का आगमन होता है। दोनों कुछ समय बाद यह डेरा छोड़ने का मन बना लेते हैं और डेरा छोड़कर चल देते हैं। भोपाल से दिल्ली जाने वाली सुपरफास्ट एक्सप्रेस में बैठकर वे दोनों आगरा उतर जाते हैं। आगरा पहुँचकर अंजू अपना सामान्य जीवन जीना आरंभ करती है। बच्चों के खिलौनों की थोक दुकान पर पहुँचकर वे वहाँ से खिलौने खरीदते हैं और ताजमहल और पुराने किले के पास खिलौने बेचने लगते हैं। फुटपाथ पर अपना आशियाना बनाकर दोनों खिलौने बेचने का अपना छोटा सा व्यापार आरम्भ करते हैं। समय बदलता है और अंजू और रविंदर दोनों अपने-अपने खिलौने बेचकर अच्छा पैसा कमा लेते हैं। रविंदर की दोस्ती सलीमा नाम की किन्नर से हो जाती है और एक दिन वह अंजू को छोड़कर सलीमा के साथ ही चली जाती है। दोनों का

साथ छूट जाता है। अंजू की कहानी सुनकर तप भी भावुक हो जाता है। अब तप को वापस लौटकर जाना है क्योंकि उसके पास अधिक छुट्टियाँ नहीं हैं। तप का अंजू के बारे में विचार है,"जब शहर में आया था तो बिल्कुल अकेला था मगर जब लौट रहा था तो अकेला नहीं था। वह पावन मूर्ति मेरे मन मंदिर में प्रतिष्ठापित होकर साथ लौट रही थी।"4

इंदौर लौटकर तप अपने घर पहुँचता है और अपने मित्र निशांत से मिलने जाता है। निशांत और उसकी पत्नी सुनैना को वह किन्नरों के उत्थान के लिए अपनी योजना का विवरण देता है,"मेरी कोशिश रहेगी कि किन्नरों के पारम्परिक काम, नाच-गान के बजाय उन्हें मुख्यधारा से जोड़ सकूँ। इसके अलावा भी पढ़ें -लिखें और रोज़गार प्राप्त करें। जो कम पढ़े-लिखे अथवा अनपढ़ हों, वे प्रशिक्षण प्राप्त करें और अपना कोई काम धंधा आरम्भ करें। उनकी काउंसलिंग करना, उन्हें प्रशिक्षण प्रदान करना तथा उनके लिए एडवोकेसी करना। इसी दिशा में यह एन.जी.ओ. काम करेगा।"5

एन.जी.ओ. बनाने के सम्बंध में अपनी भावी योजनाओं को वह मूर्त रूप देता है और आवश्यक प्रक्रिया पूरी करने के उपरांत 'हम भी मानव हैं' नाम का एन.जी.ओ. पंजीकृत हो जाता है। इस एन.जी.ओ. की महासचिव अंजू को बनाया जाता है। इसी बीच तप का विवाह हो जाता है। अपने नये घर के भवन में वह एन.जी.ओ. का कार्यालय भी खोलता है। एन.जी.ओ. में किन्नरों का प्रशिक्षण आरम्भ किया जाता है। धीरे-धीरे एन.जी.ओ. का काम चल निकलता है। वक्त के मारे और समाज के ठुकराए कई किन्नर वहाँ प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए आते हैं। परन्तु यह कार्य इतना आसान नहीं रहता। किन्नरों की टोली की गुरु मीना को जब यह सब पता चलता है तो वह अपनी किन्नर टोली के साथ एन.जी.ओ. में आ धमकती है। प्रशिक्षण लेने वाली किन्नर नरगिस मीना को समझाती है,"माफ करना मीना माँ, मैं नाच-गाकर, दूसरों के सामने हाथ फैलाकर व खुद को बिछा-बिछाकर थक गई हूँ। मैं इज्ज़त की ज़िन्दगी जीना चाहती हूँ। आपको तो ऐसे फरिश्ते का शुक्रिया अदा करना चाहिए, जिसने हम जैसों की ज़िन्दगी सँवारने का बीड़ा उठाया है। ऐसा करना तो दूर, आप तो उन्हें ही गालियाँ दे रही हो। ज़रा खुदा से डरो मीना माँ।"6 एन.जी.ओ. के विस्तार के लिए अनुदान की फाइल सम्बंधित विभाग में जमा कर दी गई थी परन्तु फाइल अभी तक वहीं अटकी पड़ी थी। सरकारी कार्यालयों में फैली रिश्वतखोरी का एक उदाहरण यहाँ भी देखने को मिलता है। मजबूरन अंजू और उसके साथी किन्नर हड़ताल और विरोध प्रदर्शन का रास्ता अपनाते हैं। अन्य किन्नर साथी इस काम के लिए अति उत्साहित होते हैं।प्रियंका किन्नर ने आगे बढ़कर कहा,"दीदी हम अभी तक लोगों के लिए कमाई तथा मनोरंजन का ही साधन बने रहे। अब हम अपनी स्वयं की लड़ाई लड़ रहे हैं, इसलिए हम अपनी जान तक न्यौछावर कर देंगे, मगर पीछे नहीं हटेंगे, आप यह विश्वास रखिए।"7 सोमवार से ही किन्नर समाज कल्याण विभाग के कार्यालय के पास टेंट लगाकर धरना प्रदर्शन करने लगता है। उन्हें विमल नामक सीमेंट के कारोबारी का सहयोग भी मिलता है। विमल का बेटा भी लैंगिक

विकलांगता से ग्रस्त है। अंजू के प्रश्न पर उसका उत्तर है,"अच्छा आप ही बताइए कि मैं अपनी संतान को आखिर क्यों छोड़ दूँ। क्या वह हाथ-पैर अथवा किसी अन्य विकलांगता से ग्रसित होता तब भी ये लोग उसके साथ ऐसा ही व्यवहार करते? मैं जानता हूँ,वे ऐसा कभी नहीं करते।फिर उसके लैंगिक विकलांग होने पर क्यों इतना हंगामा करते हैं? यही कारण है कि मैं समाज द्वारा किए जाने वाले इस भेदभाव के विरुद्ध आपकी इस मुहिम में सहयोगी बनना चाहता हूँ।"8 किन्नरों का यह धरना बीस दिन से लगातार जारी है लेकिन नक्कारखाने में तूती के समान दब जाता है। मजबूरन अंजू को आमरण अनशन करना पड़ता है। अनशन के पांचवें दिन अचानक ही पुलिस आकर अपना बल प्रदर्शन करती है और किन्नरों के टेंट आदि सब उखाड़ फेंकती है। अंजू के सिर पर भी डंडे का प्रहार होता है। वह अचेत हो जाती है। अन्य किन्नर साथी भी इसमें बुरी तरह से घायल हो जाते हैं। अंजू और अन्य घायलों को अस्पताल पहुँचाया जाता है। जानलेवा प्रहार से अंजू बच नहीं पाती और सबका साथ छोड़ कर चली जाती है। लेखक उपन्यास का अंत इन मार्मिक शब्दों में करता है,"अंजू का संकल्प पूरा हो गया था। हमने सरकार के विरुद्ध छिड़ी जंग तो जीत ली थी किंतु हम जीतकर भी हार गए थे क्योंकि इस सफलता को देखने के लिए 'वह' जो नहीं थी।"9

उपन्यास में अंजू किन्नर और तप शर्मा दो ही मुख्य पात्र हैं। तप आयकर विभाग में क्लर्क है जिसकी पोस्टिंग इंदौर में है। लेखन और घुमक्कड़ी उसके शौक हैं। तप शर्मा 'तप' का पिछला जीवन अनेक परेशानियों से भरा रहा है। उसे माता-पिता के निधन के बाद ताऊ-ताई की निर्दयता का सामना करना पड़ता है। ताऊ के घर में रात को सोते समय का चित्र देखिए,"ताऊ-ताई तो सो गए थे पर मुझे नींद कहाँ आने वाली थी। मैं समझ चुका था कि यदि मैं यहाँ रहा तो निश्चय ही मैं भी अपने माता-पिता और दादा-दादी के पास पहुँचा दिया जाऊँगा। इसलिए मैं विचार करने लगा कि मैं अपनी जान इन जल्लादों से किस प्रकार बचाऊँ! सहसा मुझे एक उपाय सूझा।क्यों न मैं गाँव छोड़कर भाग जाऊँ? लेकिन जाऊँगा कहाँ? इसी प्रश्न पर बार-बार आकर मेरे विचारों की सुई रुक जाती। कोई भी ऐसा रिश्तेदार नहीं है, जहाँ मैं शरण ले सकूँ। मामा-मामी ने माँ-बाप गुज़र जाने के पश्चात् जैसे हमसे रिश्ता ही समाप्त कर लिया था। और कोई ऐसा है नहीं, जहां मैं जा सकूँ।"10

प्रस्तुत उपन्यास की भाषा सामान्य ही है। दैनिक बोलचाल के शब्दों का प्रयोग उपन्यास को पठनीय बनाता है। हिन्दी, उर्दू, अंग्रेज़ी के रोज़मर्रा शब्दों का यथास्थान प्रयोग उपन्यास में मिलता है। भाषा की प्रवाहमयता पाठक को उपन्यास से जोड़े रखती है। अंजू के किन्नर होने की व्यथा को लेखक ने बिम्बात्मक भाषा में अभिव्यक्ति दी है,"मेरी और माँ की स्थिति शायद एक-सी थी। हम दोनों के ही अंदर जैसे तूफान के पहले की शांति थी। वे मेरे पास आकर बैठ गईं और प्यार से अपना हाथ मेरी पीठ पर रखते हुए मेरी तरफ देखने लगीं। बस फिर क्या था! उसके बाद जैसे दो बादल आपस में टकराए और गगनभेदी नाद हुआ। फिर मूसलाधार बारिश प्रारम्भ हो गई। ऐसा मालूम होता था, जैसे वह प्रलय पूर्व की वर्षा हो। ऐसा

प्रतीत होने लगा था जैसे अब कुछ भी शेष नहीं बचेगा। आखिर बादल अपने अरमान निकालकर छँट गए। बारिश थम गई और आसमान साफ हो गया। तेज़ बारिश ने सारी जमी गंदगी धोकर साफ कर दी थी। अब सब कुछ साफ दिखाई दे रहा था। मुझे भी और मेरी माँ को भी।”11

उपन्यास में अनेक स्थानों पर किन्नरों के सामान्य ढंग से जीवनयापन करने और उनके मौलिक अधिकारों की वकालत की गई है। ये विचार उपन्यास में बीच-बीच में स्वयं लेखक के भी रहे हैं। अंजू द्वारा कोमल किन्नर से जब किन्नरों की खराब स्थिति के लिए प्रश्न किया जाता है तो कोमल का उत्तर उल्लेखनीय है, “किन्नरों की दुर्दशा के लिए हम केवल दूसरों के सिर पर ही ठीकरा नहीं फोड़ सकते, हमारा अपना किन्नर समाज भी उसके लिए उतना ही ज़िम्मेदार है। हालाँकि मैं तुम्हारे जैसी पढ़ी-लिखी नहीं हूँ पर बीती उम्र ने मुझे बहुत कुछ सिखाया है। किन्नर समाज की स्थिति जैसी आज है, वैसी पहले नहीं थी। उन्हें भी समाज का एक अहम हिस्सा माना जाता था। वे मंगलकार्यों में सादर आमंत्रित किए जाते थे।”12

कोमल किन्नर आगे भी अंजू को कहती है,“एक और मज़ेदार बात यह है अंजू कि समाज ने हमारे साथ कितना बड़ा छल किया है। हमें ‘मंगलमूर्ति’ संज्ञा से विभूषित करके। कहने का अभिप्राय यह है कि शादी-ब्याह अथवा बच्चों के जन्मोत्सव के मांगलिक शुभ अवसरों पर हमें शुभ मानकर चंद कागज़ के टुकड़े और वस्त्र आदि देकर उन्होंने अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ ली है। अर्थात् हम मंगलमूर्ति बने छलावे की लालीपॉप चूसते रहें और अपने नागरिक अधिकारों की बात न करें। न हम आरक्षण की माँग करें और न मूलभूत आवश्यकता; यथा खाने के लिए भोजन, पहनने के लिए वस्त्र, रहने के लिए मकान और शिक्षा की तो भूल कर भी बात न की जाए, क्योंकि हम शिक्षित हो गए तो नागरिक अधिकारों के प्रति जागरूक जो हो जाएँगे। इसलिए हम यदि हाशिए पर पड़े हैं तो वहीं पड़े रहें।”13

तप को प्रतिदिन डायरी लिखने की आदत है। गुंडों द्वारा उसका सारा सामान छीन लिया जाता है परन्तु उसकी प्रिय डायरी बैग में ही रखी मिल जाती है। इसी क्रम में प्रस्तुत उपन्यास भी डायरी शैली में लिखा गया प्रतीत होता है जिसमें संस्मरणात्मक पुट भी लेखक ने दिया है। मथुरा, आगरा, इंदौर महानगरों के अन्तर्गत उपन्यास की कहानी बुनी गई है। सम्पूर्ण उपन्यास की कथावस्तु लगभग छः मास के अंतराल में घटित होती दर्शाई गई है। किन्नरों के रीति-रिवाज़, तमिलनाडु में कुवागम समागम, समलैंगिकता -शोषण-रिश्वतखोरी आदि तथ्यों को भी लेखक ने उपन्यास में यथास्थान पिरोया है।

किन्नर समाज में पायी जाने वाली सामाजिक बुराइयों को उपन्यास में विस्तार से दर्शाया गया है। इस सन्दर्भ में पहली महत्त्वपूर्ण समस्या है ‘वेश्यावृत्ति की समस्या’। रज़िया और सुमन किन्नर इस कार्य में संलग्न हैं और दोनों मिलकर कोमल किन्नर को भी इस काम के लिए प्रेरित करती हैं। दूसरी समस्या है ‘वर्चस्व की लड़ाई’। किन्नरों में गुरुगद्दी हथियाने के लिए भीषण घमासान चलता है।एन.जी.ओ. कार्यालय में आकर मीना किन्नर इसी कारण तप को किन्नरों को प्रशिक्षित करने के विरोध में धमकाती है। किन्नरों को अस्पतालों में भी अपने इलाज़ आदि के लिए काफ़ी मशक्कत करनी पड़ती है। डॉक्टरों का सभ्य समाज भी किन्नरों को सदैव ही हिकारत भरी नज़र से देखता आया है। रानी किन्नर के इलाज के लिए उसके साथी किन्नरों को दर-दर भटकना पड़ता है। परन्तु फिर भी डॉक्टर उसका उचित इलाज़ नहीं करते और इसकी कीमत उसे अपने प्राण गँवाकर चुकानी पड़ती है।

अंजू किन्नर की सोच रचनात्मकता के साथ-साथ मानवोचित सम्वेदनाओं से भी संयोजित है। जीवन के अनगिनत कष्टों और समस्याओं का सामना करके भी वह दया, करुणा, समर्पण जैसी भावनाओं को अपने जीवन से तिरोहित होने नहीं देती। तप की घायल अवस्था में सहायता करने के पीछे उसकी यही उदात्त भावना बलवती है। अंजू की इसी करुणाप्लावित प्रतिबद्धता को देखकर तप भी अंजू की सहायता करने के लिए प्रतिबद्ध होता है। अंजू किन्नर होते हुए भी परम्पराओं और सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण की पावन सोच रखती है। यही बात उसे अन्य किन्नर पात्रों से कुछ विशिष्ट बना देती है। किन्नर समाज को सामाजिक-आर्थिक सुरक्षा देने के साथ-साथ वह नैतिक रूप से भी समृद्ध करना चाहती है। उपन्यास के अंत में हम देखते हैं कि उसे इस कार्य में पर्याप्त सफलता भी प्राप्त होती है। तप भी अंजू के साथ मिलकर, इसी आधार पर किन्नर समाज की स्थिति को सुधारना चाहता है। प्रस्तुत उपन्यास का शीर्षक पर्याप्त आकर्षक है। प्रख्यात् व्याकरणाचार्य पं. कामताप्रसाद गुरु के अनुसार,“सर्वनाम उस विकारी शब्द को कहते हैं जो पूर्वापर संबंध से किसी भी संज्ञा के बदले में आता है। एक ही व्यक्ति के विषय में आदर प्रकट करने के लिए ‘वह’ का प्रयोग होता है।”14 हिन्दी में ‘वह’ एक निश्चयवाचक सर्वनाम है। लेखक ने उपन्यास के किन्नर पात्र अंजू को ‘वह’ कहकर सम्बोधित किया है, जो उपन्यास के किन्नर पात्र से पाठक के परिचय के विविध आयाम स्थापित करता है।दु:खुद बात है कि सामान्यजन किसी भी किन्नर को केवल एक तृतीयलिंगी व्यक्तित्व के रूप में ही देखते हैं। मानो मात्र किन्नर होने से ही उनके व्यक्तित्व की अन्य परिभाषाएँ धूमिल-सी हो जाती हैं। श्रीगोपाल सिंह सिसोदिया ‘निसार’ ‘वह’ उपन्यास के माध्यम से किन्नर जीवन के नवीन पहलुओं को पाठकों के समक्ष लाते हैं, जिसमें वे पर्याप्त रूप से सफल भी हुए हैं।

संपर्क भाषा भारती

साहित्य-समाज को समर्पित राष्ट्रीय मासिकी, अक्तूबर—2022, RNI-50756

दस पुस्तकें जिनका लोकार्पण बसंत पंचमी, 26 जनवरी-2023 को तय है :

1. पुरुष व्यथा कथा : 2022
2. नारी व्यथा कथा : 2022
3. तीसरा पहलू : किन्नर कथा 2022
4. हिन्दी के श्रेष्ठ ग़ज़लकार : 2022
5. श्रेष्ठ कवयित्रियाँ : 2022
6. उत्कृष्ट कहानियाँ : 2022
7. उत्कृष्ट बाल कहानियाँ : 2022
8. श्रेष्ठ व्यंग्यकार : 2022
9. श्रेष्ठ लघुकथाकार : 2022
10. श्रेष्ठ महिला लघुकथाकार : 2022

1. प्रत्येक पुस्तक में रचनाकार की एक से अधिक रचना शामिल नहीं की जाएगी।
2. **लघुकथा पुस्तक में एक रचनाकार के छः पृष्ठ निर्धारित होंगे।**
3. **कविता और ग़ज़ल पुस्तक में भी लेखक को छः पृष्ठ दिए जाएंगे।**
4. रचनाओं को संपादक द्वारा चयनित किया जाएगा।
5. पुस्तक प्रकाशनोपरांत दो लेखकीय प्रतियाँ लेखक को प्रदान की जाएंगी।
6. पूर्व अनुरोध पर लेखकों को अधिक प्रतियाँ प्रकाशित मूल्य से 30% कम मूल्य पर दी जाएंगी।
7. लेखक को अपनी रचना का दो बार प्रूफ शोधन, प्रूफ प्राप्त होने के 7 दिन के अंदर करना होगा।
8. रचनाएँ मंगल अथवा यूनिकोड फॉन्ट में ही टाइप करके भेजी जाएँ।
9. रचनाकार, पासपोर्ट फोटो सहित अधिकतम 150 शब्दों में संक्षिप्त परिचय भेजें।
10. सभी पुस्तकों का प्री-प्रिंटिंग प्रोसेस 31 दिसंबर तक पूरा करने का लक्ष्य है।
11. रचनाएँ शीघ्रातिशीघ्र भेजी जाएंगी तो उनका प्रूफ शोधन जल्दी हो सकेगा।
12. अशुद्धियों से बचना प्रकाशन का प्रमुख लक्ष्य रहेगा।
13. पुस्तकों का लोकार्पण नई दिल्ली में ही प्रस्तावित है।

प्रकाशन सहयोग : saubhagyapublication@gmail.com

सहयोग 60/-